कृषि के आचार्य—

घाघ और भड्डरी

[की सम्पूर्ण रचनायें]



टीकाकार—

श्रीरामलग्न पाण्डेय

"विशारद"

मकरसंक्रांति २०१२

मूल्य १॥)

कृषि के आचार्य—

घाघ और भड्डरी

(की सम्पूर्ण रचनायें)



हिन्दी सरल भाषा में टीकाकार—

श्रीरामलग्न पाण्डेय "विशारद"

बनारस।

प्रकाशक—

हिन्दी साहित्य मन्दिर

[पुस्तकालय]

५४/६१ जद्दूमण्डी (लक्सा) बनारस।

द्वितीयवार] मकरसंक्रान्ति २०१२ मूल्य १॥)

प्रकाशकः—
हिन्दी साहित्य मन्दिर
[पुस्तकालय]
जद्दूमण्डी (लक्सा)
बनारस ।

मूल्य एक रुपया आठ आना मात्र

मुद्रक—
दीपक प्रेस,
नदेसर बनारस ।

समर्पण



श्रीमान् ....

....

सादर भेंट

विषय-सूची

❀ परिशिष्ट-भाग ❀

कवि भड्डरी—

—:*:—

दो शब्द

जो लोग पिछले महायुद्ध के पहले जीवन में प्रवेश कर चुके थे, उन्हें लड़ाई के बाद का संसार बिल्कुल बदला हुआ मिला। खेतों में उत्पन्न होने वाले अन्न का भाव इतना बढ़ गया कि पचगुने छ:गुने का अन्तर पड़ने लगा। इसका प्रभाव जनता की अन्य सभी आवश्यक सामग्रियों पर पड़ा। अणु बम के प्रयोग ने ऋतुओं में भी कुछ परिवर्तन ला दिया, पर भगवान् की कृपा से और शान्ति प्रेमी विश्व-नेताओं की मङ्गल कामना से यह वहीं रुक गया और आज भी घाघ और भड्डरी की कहावतें पूरी-पूरी सच निकल रही हैं। यह सच है कि भूमि की काया बदल गयी, जङ्गल कट गये और अति वर्षण और अवर्षण के कष्टों से जनता भयभीत हो गई है। पर क्या इसका कोई उपचार नहीं है? क्या ऐसे उपाय नहीं हैं, जो किसानों की समझ में भी आयें और खेती-बारी तथा जीवन-चर्या के सामान्य हित सम्बन्धी बातों की ऐसी जानकारी हो जाय जो अकाट्य हो और जिसका पालन कल्याणकारी हो।

भारत का शासन-सूत्र भारत की जनता के हाथों में आने के समय से ही खेती बारी तथा सामूहिक विकास के कार्यों पर पूर्णयोग दिया जा रहा है। संसार के सबसे बड़े राजनीतिक महापुरुष और विश्व-शान्ति के लिये सभी राष्ट्रों के विश्वास भाजन पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा असंदिग्ध शब्दों में यह बार-बार दोहराया गया है कि देश के सभी स्त्री पुरुष को अपना समय न खोना चाहिये, प्रतिक्षण परिश्रम हो और जो भी भूमि पास में हो उसे उर्वरा बनाकर खेती या बाग लगाने

के काम में प्रयोग किया जाय। उत्तर-प्रदेश के राज्यपाल श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने केन्द्र में रहकर वृक्षारोपण के लिये जो परम्परा चलायी उसका बिस्तार दृढ़तापूर्वक इस राज्य के सभी भागों में हो रहा है। पर क्या यह मान लिया जाय कि साधारण जनता का अन्न कष्ट और अवर्षण तथा अतिवर्षण का भय दूर हो गया ? ऐसी कोई बात नहीं है। राज्य-संचालित कार्य-क्रमों की अपेक्षा जनता में प्रचलित रूढ़ियों का अधिक प्रभाव पड़ता है। अंग्रेजों ने इस देश को पराधीन रखने के लिये इन्हीं रूढ़ियों को मिटाना चाहा। इसी के लिये उनकी चलाई हुई सारी शिक्षा प्रणाली और विद्याभ्यास के क्रम देश में जाल के तौर पर बिछा दिये गये। जहाँ पर शिक्षा के प्रचार से बहुत लाभ हुआ वहीं उसके ओट में देश और समाज को अपनी पुरानी धरोहरें खो देनी पड़ीं, लोगों का विश्वास प्रचलित कहावतों, लोक कथाओं और पीढ़ियों की परम्परा से मिली हुई विचारधारा की उपयोगिता की ओर से उठता गया। विज्ञान जिस रूप में विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की प्रयोगशालाओं में चलाया गया उसे ही शिक्षित लोग खेतों और घरों में ढूँढ़ने लगे। वहाँ साधनों की कमी और परम्परा के भेद से टक्कर खाकर उन्हें हताश होना पड़ा और शिक्षित वर्ग नगरों की ओर मुड़ गया। गाँव और गाँवों की आवश्यकतायें उनसे अलग हो गयीं। इसी कारण आज सामूहिक विकास के कार्यों में जन-सम्पर्क तथा सांस्कृतिक कार्य-क्रमों पर बल दिया जा रहा है। परन्तु इसमें अब भी यही विचारधारा चल रही है कि पुस्तकों और प्रयोग-शालाओं का ही ज्ञान फैलाने की आवश्यकता है। लोग यह भूल जाते हैं कि भारतीय ज्ञान-भण्डार पुस्तकों के आधार पर नहीं खड़ा किया गया था। श्रुतियाँ, स्मृतियाँ और सूत्र-ग्रन्थ लिखे हुये ज्ञान-कोष से सहस्रों वर्ष पहले के हैं। देश की शिक्षा पाठशालों और महाविद्यालयों की दीवालों के बाहर परम्परानुगत शैली से जारी रखने के लिये भारत के सभी भागों में जो क्रम

भारत के परतन्त्र होने के सहस्रों वर्ष पहले से चला आ रहा था, वह जीवन के सभी उपयोगी क्षेत्रों में अब भी अटूट चला आ रहा है। पर उसकी शृङ्खला मिट गयी है और आधुनिक शिक्षा के स्रोत में उनका क्रम धूमिल होकर अलक्षित-सा हो रहा है। जितनी पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं और जितने ग्रन्थ विद्यालयों और पुस्तकालयों में रक्खे जा सके हैं, उनके अतिरिक्त भी एक विशाल साहित्य भारतीय गावों के निवासियों के मुखों पर अब भी विद्यमान हैं। पर इसकी टोह उन लोगों के बीच करनी है जो परतन्त्र भारत के शिक्षालयों की छूत से बचे हुये हैं। भारतीय किसान अक्षर-ज्ञान के लिये भले ही निरक्षर हों, पर वे यदि परम्परानुगत भावों के बीच पले हैं तो वर्तमान काल के औसत पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष से अधिक ज्ञानी, अधिक स्वस्थ, अधिक विचारशील और अधिक परिश्रमी हैं। भारत जैसे देश के किसानों के लिये जब तक वर्षा मापक यन्त्र अथवा समय सूचक घड़ी का व्यवहार कराया जा सकेगा, तब तक क्या किसानों का काम रुका रहेगा? घड़ियों से समय देख-देखकर चलने वाले साधारण पढ़े-लिखे लोग समय-पालन में चूक कर सकते हैं, पर घाघ भड्डरी की अलिखित कहावतों को अपने विज्ञान का सर्वस्व समझने वाले किसान रात में आकाश के तारों को देखकर तथा प्रकृति की भिन्न-भिन्न स्थितियों का निरीक्षण करके अपना जो क्रम निश्चित करते हैं और खेती-बारी के कामों में उसी के अनुसार सावधान होकर कटिबद्ध होते हैं, वह अपने इन कार्यों में असफल नहीं होते।

इस समय देश को आवश्यकता है अपने मुखागत साहित्य को क्रम-बद्ध रूप में संग्रहीत करने का। आवश्यकता इस बात की है, कि इस मुखानुगत ज्ञान-भाण्डार को देश की बड़ी से बड़ी प्रयोगशाला और बड़े से बड़े पुस्तकालय से भी अधिक विस्तृत मानकर उन्हें लिपि-बद्ध पुस्तकाकार करने की। आज का ज्ञान पुस्तकों में निहित होने के कारण परम्परानुगत साहित्य और ज्ञान-कोष धूमिल होते-होते

समूचा लुप्त हो जायगा। इस क्षेत्र में कुछ इने-गिने भावुक साहित्यकारों का ही ध्यान गया है। हमें हर्ष है कि भारतीय किसानों के बीच गत तीस वर्षों से विचरण कर उनके हित कार्य सोचने वाले और साहित्यिक क्षेत्र में अनेक वर्षों का अनुभव रखनेवाले हमारे स्नेही मित्र श्री पं० रामलग्न पाण्डेय "विशारद" ने इस ओर ध्यान दिया है और घाघ और भड्डरी की कहावतों की संग्रह ही नहीं किया है बल्कि उनका इस पर अर्थ और स्पष्टीकरण इस रूप में किया है कि जो किसानों के बड़े काम का है, साथ ही शिक्षा की नवीन योजनाओं में माध्यमिक विद्यालयों का कृषि-करण किया गया है, उनमें कार्य करने वालों के लिये यह संग्रह बड़ा उपयोगी है। बहुत अच्छा होगा कि शिक्षितों शिक्षकों और शिक्षा पाने वालों के हाथ में पड़कर यह पुस्तक उनके पुस्तकीय ज्ञान-कोष को भारतीय परम्परा के मुखानुगत साहित्य की कसौटी पर कसकर भारतीय कृषि की उन्नति में सहायक हो सके। हमें विश्वास है कि यह संग्रह उन लोगों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा जिनके लिये यह पुस्तक लिखी गयी है।

शेषमणि त्रिपाठी
एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न
(विद्याधुरीण, विद्याभूषण)
डिप्टीइंस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स
जिला बनारस

अगहन पूर्णिमा
२०—११—५४

कृषि के आचार्य महाकवि

घाघ और भड्डरी

की रचनाओं का सम्पूर्ण संग्रह।

वर्षा-विचार

अद्रा चौथ, मघा पंचक ॥१॥

वर्षा के लिये आर्द्रा एक ही नक्षत्र है। आर्द्रा बरस गया तो जानो आर्द्रा, पुष्य, पुनर्वसु और श्लैषा ये चारो ही बरसेंगे। इसी प्रकार यदि 'मघा' बरसता है तो मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा ये पाँचो बरसेंगे ॥१॥

अद्रा गैले तीनि गैल, सन-साठी कपास।
हथिया गैले सब गैल, आगिल पाछिल नास ॥२॥

यदि आर्द्रा नक्षत्र चला गया और वर्षा न हुई तो जानो कि सन, साठी धान, (साठी नामक धान) और कपास ये तीनों फसलें चली गयीं अर्थात् न होंगी। इसी प्रकार यदि हथिया (हस्त नक्षत्र) बिना बरसे चला गया तो आगे या पीछे की बोयी हुई खेती नष्ट हो जाती है। दूसरे अर्थ में उसका (खेती का) बर्तमान और भविष्यरूप भी नष्ट हो जाता है ॥२॥

आदि न बरसे आदरा, हस्त न बरस निदान।
कहै घाघ सुन भड्डरी, भये किसान पिसान ॥३॥

यदि वर्षा के आरम्भ में ही आर्द्रा नक्षत्र की वर्षा न हुई और अन्त में हस्त अथवा हस्त-नक्षत्र के अन्तिम भाग की वर्षा न हुई तो घाघ कवि कहता है— हे भड्डरी! सुन, ऐसी दशा में किसान पिसान हो जाता है अर्थात् कष्टों से चूर्ण हो जाता है ॥३॥

आवत आदर ना कियो, जात न दीने हस्त।
ये दोऊ पछतात हैं, पाहुन औ गिरहस्त ॥४॥

यदि आर्द्रा नक्षत्र ने आते ही वर्षा न की और हस्त ने जाते-जाते जल न बरसा दिया तो किसान को वैसा ही पश्चाताप होता है जैसे किसी पाहुने के आने पर उसका आदर न किया और जाते-जाते उसके हाथ पर कुछ न धर दिया तो वह पश्चाताप ही करता रहता है ॥४॥

औआ बौआ बहै बतास।
तब होवे बरखा कै आस ॥५॥

जब वर्षा ऋतु में कभी इधर, कभी उधर, कभी तेज, कभी मंद—जिसका कोई निश्चित रूप न हो—ऐसी वायु चले तो जानो कि वर्षा अवश्य होगी ॥५॥

उत्तर चमकै बीजुरी, पूरब बहतो बाउ।
घाघ कहै सुन भड्डरी, बरधा भीतर लाउ ॥६॥

यदि उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो और बहने वाले वायु की गति पूरब की ओर हो अर्थात् 'पुरुवा' हवा चलती हो तो घाघ कवि कहता है, बैलों को भीतर लाओ, वर्षा अवश्य होगी ॥६॥

एक पानी जो बरसै स्वाती।
कुरमिन पहिरै सोने क पाँती ॥७॥

(कवि कहता है) यदि स्वाती नक्षत्र की वर्षा एक बार भी हो जाये तो इसमें संदेह नहीं कि कुर्मी किसान की स्त्री अवश्य ही सुवर्ण की पंक्तियाँ, पत्तियाँ या गहने पहनेंगी ॥७॥

एक बूँद जो चैत में परै।
सहस बूँद सावन में हरै ॥८॥

यदि चैत्र मास में एक बूँद अर्थात् थोड़ा भी पानी पड़ जावे तो उसका हजारगुना बूँद जल की हानि सावन के महीने में होती है अर्थात् सूखा पड़ जाता है ॥८॥

करिया बादर जिउ डेरवावै।
धँवरे बादर पानी आवै ॥९॥

काला बादल केवल जी को डरानेवाला ही होता है, उससे पानी नहीं बरसता। पानी तो धवल अर्थात् भूरे बादलों से आता है ॥९॥

खन पुरवैया खन पछियाव।
खन खन बहै बबूरा बाय॥
जो बादर बादर में जाय।
घाघ कहै जल कहाँ समाय ॥१०॥

घाघ कवि कहता है—यदि क्षण में पुरवा और क्षण में पछिवाँ हवा चलती हो और जब क्षण-क्षण में बवण्डर उठाकर वायु बहन हो और यदि बादल में बादल समाते या जाकर मिल जाते हों तो समझना चाहिए कि ऐसी अपार वर्षा का जल कहाँ समायगा अर्थात् वर्षा अधिक होगी ॥१०॥

चढ़त जो बरसै चित्तरा, उतरत बरसै हस्त।
कितनौ राजा डाँड़ ले, हारे ना गिरहस्त ॥११॥

यदि चित्रा नक्षत्र चढ़ते (आरम्भ होते) और हस्तनक्षत्र उतरते ही बरस जाय तो फिर क्या कहना? राजा कितना ही दण्ड या कर ले; परन्तु गृहस्थ नहीं थकता; क्योंकि उपज अच्छी होती है ॥११॥

चित्रा बरसे तीन जाँय। मोथी, मास, उखार ॥१२॥

चित्रा की वर्षा अच्छी नहीं कही जाती, क्योंकि इसमें बरसने से मोथी, उड़द और ऊख की फसल नष्ट हो जाती है ॥१२॥

चटका मघा पटकि गा ऊसर।
दूध-भात में परिगा मूसर ॥१३॥

(मघा सब नक्षत्रों में बड़ा वीर और मर्दराज है। वृषभ के लिये मघा की वर्षा भी बड़ी उपादेय होती है।) यदि कहीं मघा तप गया और न बरसा तो जानो कि ऊसर (रेहार की भूमि) सूख जायगी जिसमें केवल एक ही फसल धान की होती है अन्यथा बिना पानी के तो उसकी घास भी सूख जाती है। फिर धान कहाँ से होगा? अतः घाघ का कहना है कि मघा के न बरसने से

जिस ऊसर भूमि में घास और धान दोनों ही होते हैं उसमें इस अवर्षण का होना मूशल का पड़ना है अर्थात् तब दूध-भात की न्यूनता ही नहीं सर्वथा ही उसका अभाव हो जायगा ॥१३॥

चमकै पच्छिम उत्तर ओर।
तब जानो पानी है जोर ॥१४॥

जब पश्चिम और उत्तर के कोने पर बादल में बिजली की बार-बार चमक होवे, तब जानो कि पानी का जोर है ॥१४॥

चैत क पछिवाँ भादौं जला।
भादौं पछिवाँ माघ क पला ॥१५॥

यदि चैत्र के महीने में पछुवाँ वायु बहे तो जानो कि भादों मास में वर्षा अच्छी होगी और यदि भादों के महीने में पछुवाँ वायु बहे तो जानो माघ में पाला अवश्य पड़ेगा ॥१५॥

छीपा, छेड़ी, ऊँट, कोंहार।
पीलवान, औ गाड़ीवान ॥
आक, जवासा, बेस्वा, बानी।
दसो दुखी जब बरसै पानी ॥१६॥

जब पानी बरसता है, तब रँगरेज, छेड़ी (बकरी), ऊँट, कुम्हार, पीलवान, गाड़ीवान, मंदार, जवासा, वेश्या और बानी अर्थात् वणिक्-पुत्र (बनियाँ) ये दसों दुखी हो जाते हैं ॥१६॥

जेठ मास जो तपै निरासा।
तो जानो बरखा की आसा ॥१७॥

जिस वर्ष जेठ का महीना इतना तपे कि मनुष्य उसकी गर्मी की पीड़ा के कारण जीवन से निराश होने लगे अर्थात् कड़ी गर्मी पड़े तो जानो कि उस वर्ष में वर्षा अच्छी होगी ॥१७॥

जा बरखा चित्रा में होय।
सगरी खेती जावै खोय ॥१८॥

(चित्रा नक्षत्र की वर्षा अच्छी नहीं कही जाती) यदि चित्रा नक्षत्र में वर्षा होवे तो उससे सारी खेती नष्ट हो जाती है ॥१८॥

जो बरसे पुनर्वसु स्वाती ।
चरखा चले न बोले ताँती ।।१६।।

यदि पुनर्वसु और स्वाती नक्षत्र बरस जाये तो जानो कपास की फसल सर्वथा ही नष्ट हो जायगी जिससे न तो चरखा ही चल सकेगा और न ताँत ही बज सकेगी, क्योंकि रूई नहीं होती ।।१६।।

जो कहुँ मग्घा बरसै जल ।
सब नाजों में होगा फल ।।२०।।

(मघा की श्रेष्ठता तो उधर कहा ही है) यदि कहीं मघा का जल बरस गया तो जानो सब अन्नों में दाने पड़ेंगे अर्थात् वे पुष्ट होंगे और फसल पैदावार अच्छी होगी ।।२०।।

जो बरसेगा उत्तरा । नाज न खावैं कुत्तरा ।।२१।।

यदि उत्तरा नक्षत्र बरस जावे तो फसल इतनी अच्छी हो कि कुत्ते भी अन्न न खावें अर्थात् अन्न खाते खाते ऊब जावेंगे ।।२१।।

ढ़ाकी बोलै जाय अकास ।
अब नाहीं बरखा कै आस ।।२२।।

ढ़ोकी नाम का एक पक्षी होता है। जब वह बोलकर आकाश में उड़ जावे तब जानों कि अब वर्षा की आशा नहीं है ।।२२।।

तपै मिरगशिर जोय, बरखा पूरन होय ।।२३।।

यदि मृगशिरा नक्षत्र खूब तपे तो वर्षा अच्छी होगी। अथवा मृगशिरा का खूब कड़ाके के साथ तपना भी वर्षा के हित में अच्छा है ।।२३।।

जब बहै हड़हवा कोन ।
तब बनजारा लादै लोन ।।२४।।

जब दक्षिण-पश्चिम कोन की वायु चले, तब जानो कि वर्षा की आशा नहीं है। यह देखकर बनजारा नमक लादने अर्थात् व्यापार करने चला, क्योंकि पानी में नमक गल जाता है ।।२४।।

दिन का बादर सूम का आदर ।।२५।।

दिन में बादल छायें हों और रात में बादल न हों तो ऐसे बादल की उपमा सूम के उस आदर के समान है जो सर्वथा ही व्यर्थ है अथवा इस प्रकार दिन का

बादल और सूम का आदर एक समान ही जानो जिससे किसी का भला नहीं होता। (तत्तुल्य उपमा अलंकार) ॥२५॥

दिन में गरमी रात में ओस।
कहै घाघ बरखा सौ कोस ॥२६॥

घाघ कवि का कहना है—यदि दिन में तो गरमी हो और रात में ओस पड़े तो समझना चाहिए कि वर्षा सैकड़ों कोस दूर हो गई ॥२६॥

दूर गुड़ासा दूरै पानी।
नियर गुड़ासा नियरै पानी ॥२७॥

गुड़ासा नाम का एक कीड़ा होता है, यदि वह दूर से, ऊँचाई से या जोर से बोले तो समझो कि पानी दूर है। यदि यह कीड़ा निकट से बोले तो समझो कि वर्षा निकट है ॥२७॥

दिन को बद्दर रात निबद्दर।
बहै पुरवैया झब्बर झब्बर ॥
घाघ कहै कछु होनी होई।
कुँवा के पानी धोबी धोई ॥२८॥

जब वर्षा ऋतु में दिन में तो बादल हों और रात में बादल न हों और जब पूर्वा हवा रुक-रुक कर बहे तब घाघ कहता है कि यह कुछ होनहार है जो अच्छा नहीं होगा। यह ऐसे अवर्षण का योग है कि जिसमें धोबी को कुएँ के पानी से वस्त्र धोने पड़ेंगे ॥२८॥

धनुष पड़े बंगाली।
मेह साँझ या काली ॥२९॥

यदि पूर्व दिशा बंगाल की ओर आकाश-धनुष निकले तो जानो कि साँझ-सबेरे में वर्षा होती है और देर नहीं है ॥२९॥

धनि वह राजा धनि वह देस।
जहवाँ बरसै अगहन सेस ॥
पूस में दूना माघ सवाई।
फागुन बरसै घरौं से जाई ॥३०॥

धन्य है वह राजा और धन्य है वह देश कि जहाँ अगहन के अन्तिम मास में वर्षा हो जावे। यदि वर्षा पूस में हो तो फिर कहना ही क्या है? दूना अन्न पैदा होता है और माघ में वर्षा हो तो सवाया अन्न पैदा हो। परन्तु वही वर्षा यदि फाल्गुन के महीने में होती है तो समझो कि घर से भी चला गया अर्थात हानि हुई ॥ ३० ॥

पहला पवन पुरुब से आवे।
बरसे मेघ अन्न झरि लावे ॥ ३१ ॥

वर्षाऋतु में यदि पहली हवा पुरुवा की चले तो जानो वर्षा अच्छी होगी और अन्न भी अच्छा पैदा होगा ॥ ३१ ॥

पानी बरसे आधे पूस।
आधा गेहू आधा भूस ॥३२॥

(पौष मास के आधे भाग की वर्षा पैदावार के लिये बड़ी अच्छी होती है) यदि आधे पूस में वर्षा हो जावे तो गेहूँ और भूसा आधे आध होता है ॥३२॥

पुक्ख पुनर्वसु भरे न ताल।
फिर बरसेगा लौटि असाढ़ ॥३३॥

यदि पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र की वर्षा से ताल-पोखरे नहीं भर गये तो समझो कि फिर लौट कर असाढ़ में बरसेगा ॥३३॥ इसी पर फिर कहा है—

पुक्ख पुनर्वसु भरे न ताल।
तो फिर भरिहैं अगली साल ॥३४॥

यदि पुष्प और पुनर्वसु नक्षत्र ने अपनी वर्षा से तालों को नहीं भर दिया तो अब ये अगले साल में ही भरेंगे ॥३४॥ अभिप्राय यह कि वर्षा अच्छी नहीं होगी।

पूरब धनूहीं पश्चिम भान।
घाघ कहै बरखा नियरान ॥३५॥

वर्षाऋतु में जिस समय सूर्य पश्चिम में चले गये हों अर्थात् सन्ध्या का समय हो और पूर्व दिशा में आकाश-धनुष दिखाई पड़े तो समझना चाहिये कि वर्षा निकट है ॥३५॥

पुरवा में पछियावाँ बहै।
हँसिके नारि पुरुष से कहै॥
ऊ बरसै ई करै भतार।
घाघ कहै यह सगुन विचार॥३६॥

जब पुरुवा और पछिआँ हवा एक साथ मिलकर बहती हो, और जब कोई स्त्री पर पुरुष से हँसकर बात करती हो, तब घाघ इसका सगुन विचार कर कहता है कि उस (हवा) से तो जल बरसेगा और यह (स्त्री) इस पुरुष से अनुचित सम्बन्ध करेगी॥३६॥

पूरब कै बादर पच्छिम जाय।
पतरी पकावै मोटी खाय॥३७॥
पछुवाँ बादर पुरुब को जाय।
मोटो पकावै पतरी खाय॥३८॥

जब बादल पूर्व दिशा से पश्चिम की ओर जाता हो तब समझना चाहिए कि वर्षा होने वाली है, इसीलिये मोटी रोटी पकाकर खाओ॥३७॥ यदि बादल पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर जाता हो तो समझो कि अब वर्षा नहीं होगी इसलिये पतली रोटी पकाकर खाओ॥३८॥

बोली गोह फुली बनकास।
अब नाहीं बरखा कै आस॥३९॥

जब गोह बोलने लगी और वन में काँस भी फूल गई तब समझो कि अब वर्षा होने की आशा नहीं है॥३९॥

बायू में बायु समाय।
घाघ कहैं जल कहाँ समाय॥४०॥

यदि हवा-हवा से टकरा रही हो, तब यह देखकर घाघ कवि कहता है कि इस अधिक वर्षा का जल कहाँ जायगा ?॥४०॥

मघा के बरसे, माता के परसे।
भूखा न माँगे, फिर कुछ हरसे॥४१॥

वर्षा करने वाले नक्षत्रों में मघा नक्षत्र की वर्षा कृषकों के लिये ऐसी ही तृप्ति-कारक है कि जैसे माता द्वारा परोसे गये भोजन से पुत्र को तृप्ति हो जाती है। फिर उस हर्ष में भूखा कुछ नहीं माँगता, हर्ष के अर्थ में कृषक और भूखे के अर्थ में पुत्र दोनों ही तृप्त हो जाते हैं ॥४१॥

मघा, भूमि अघा ॥४२॥

मघा की वृष्टि (वर्षा) से पृथ्वी अघा अर्थात् तृप्त हो जाती है ॥४२॥

माघ पूस जो दखिना चले।
तो सावन के लच्छन भले ॥४३॥

यदि माघ या पूस में दक्षिणी वायु चले तो श्रावण में वर्षा होने के ये अच्छे लक्षण हैं ॥४३॥

मेदिना, मेवा, भैंस, किसान।
मोर, पपीहा, घोड़ा, धान ॥
बाढ़यो मच्छ लता लपटानी।
दसौ सुखी जब बरसै पानी ॥४४॥

जब वर्षा होने लगती है तब पृथ्वी, मेंढ़क, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और लता ये दशों सुखी हो जाते हैं ॥४४॥

रात दिना घमछाहीं।
घाघ कहै अब बरखा नाहीं ॥४५॥

घाघ कहते हैं—वर्षाऋतु में जब कभी धूप, कभी छाया (धूप-छाँह) होने लगे तब समझो कि अब वर्षा नहीं होगी ॥४५॥

रात निबद्दर दिन को छया।
कहै घाघ अब बरखा गया ॥४६॥

घाघ का कहना है कि, जब रात्रि में तो आकाश स्वच्छ एवं बादलरहित हो और दिन में बादलों की छाया रहे, तब समझना चाहिये कि अब वर्षा चली गई ॥४६॥

रोहिन बरसे मृग तपे, कुछ-कुछ अद्रा जाय।
कहै घाघ घाघिन से, स्वान भात नहिं खाय ॥४७॥

घाघ कवि का कहना है। वह अपनी स्त्री से कहते हैं—घाघिन! यदि रोहिणी नक्षत्र बरसे, मृगशिरा तपे और आर्द्रा भी कुछ-कुछ बरस देवे तो मुख्यतः क्वार की तथा और भी फसलों की उपज इतनी अच्छी हो कि कुत्ते तक भात न खावें अर्थात् खाते-खाते इतने तृप्त हो जावेंगे कि फिर उन्हें भात की ओर कुछ भी रुचि न रहेगी। यह दशा तो कुत्तों की है, फिर कृषक की तृप्तता का तो कहना ही क्या है ॥४७॥

लगा अगस्त फुले बनकासा।
अब छाड़ो बरखा की आशा ॥४८॥

अगस्त का तारा उदय हो गया और वन में काँस भी फूल गई। अतः अब वर्षा की आशा छोड़ दो ॥४८॥

लाल पियर जब होय अकास।
तब नाहीं बरखा की आस ॥४९॥

जब आकाश में लाल-पीला दिखाई पड़े; तब वर्षा की आशा नहीं है ॥४९॥

सावन सूखा स्यारी।
भादो सूखा उन्हारी ॥५०॥

सावन का सूखा (अवर्षण, पानी का न बरसना) स्यारी अर्थात् खरीफ की (क्वार की) फसल को और भादों का सूखा रबी की फसल को नष्ट करता है ॥५०॥

सब दिन बरसै दखिना बाय।
कभी न बरसे बरखा पाय ॥५१॥

दक्षिणी वायु सर्वदा जल बरसाने वाली है; परन्तु बरसात में नहीं ॥५१॥

सावन मांस बहै पुरवाई।
बरधा बेचि बिसाहो गाई ॥५२॥

यदि श्रावण के महीने में पुरुवा हवा (पूर्वी वायु) बहे तो किसान को चाहिए कि वह अपने बैलों को बेच कर गायें खरीद ले, क्योंकि वर्षा का योग नहीं है और गायों से वह अपनी गुजर कर लेगा ॥५२॥

सिंह गरजै, हथिया लरजै ॥५३॥

यदि सिंह नक्षत्र में आकाश में बादलों की गरज न हो तो हस्त नक्षत्र में बरसनेवाले बादलों को लज्जा आती है और वर्षा का योग मन्द ही होता है ॥५३॥

सावन सुकला सप्तमी, गगन स्वच्छ जो होय।
कहै घाघ सुन भड्डरी, पुहुमी खेती होय ॥५४॥

यदि श्रावण के शुक्ल पक्ष की सप्तमी के दिन आकाश निर्मल हो तो खेती की अवस्था बड़ी हीन होगी ॥५४॥

सावन क पछुवाँ दिन दुइ चार।
चूल्हीक पाछा उपजै सार ॥५५॥

यदि श्रावण में दो-चार दिन भी पछिवाँ हवा चले तो चूल्हे के पीछे तक खेती होती है। अर्थात् वर्षा अच्छी होने से ऊँची-नीची समस्त सूखे की भूमि को भी किसान अपनी खेती के लिए उपयोग कर लेता है और उसमें अच्छी पैदावार होती है ॥५५॥

साँझै धनुष विहानै पानी।
कहै घाघ सुन पंडित ज्ञानी ॥५६॥

घाघ कवि कृषि के ज्ञानियों अथवा कर्मियों से कहते हैं—हे पण्डितों ! सुनो, यदि संध्या समय आकाश-धनुष दिखाई दे तो समझो कि दूसरे दिन सबेरे ही पानी बरसेगा ॥५६॥

हथिया बरसे चित्रा मँडराय।
घर बैठे किसान रिरिआय ॥५७॥

हस्त नक्षत्र की वर्षा अच्छी होती है और चित्रा की नहीं—इसी को कवि कहता है, यदि हथिया में तो वर्षा हो और चित्रा में केवल बादल मँडराते ही रहें और वर्षा न हो तो किसान अपने घर में बैठे आनन्द मनाता है ॥५७॥

हथिया पूँछ डोलावै, घर बैठे गेहूँ आवै ॥५८॥

हथिया की वर्षा इतनी अच्छी होती है कि यदि यह नक्षत्र थोड़ी भी अपनी पूँछ चला देवे अर्थात् थोड़ी भी वर्षा कर दे तो समझो घर बैठे ही अर्थात् बिना परिश्रम ही किसान का घर गेहूँ से भर जाय ॥५८॥

हथिया बरसे तीन होय, साठी, सक्कर, मास।
हथिया बरसे तीन जाय, तिल्ली, कोदो, कपास ॥५६॥

हथिया (हस्त-नक्षत्र) की वर्षा से धान, ईख और उड़द इन तीनो की पैदावार अच्छी होती है और इसी हस्त की वर्षा से तिल, कोदो और कपास तीनों का नाश हो जाता है ॥५६॥

बैल की पहचान

अमहा जबहा जोतहु जाय।
भीख माँग के जाहु बिलाय ॥१॥

जब अमहा और जबहा बैल ले जाकर जोतोगे, तब भीख माँगने की नौबत आ जायेगी और बर्बाद हो जाओगे ॥१॥

उजर बरौनी मुँह का महुआ।
ताहि देखि हरवाहा डरुआ ॥२॥

जिस बैल की आँखों की बरौनी सफेद हो और मुँह का थुथुना पीला हो, उसे देखकर हलवाहा डर जाता है अर्थात् ऐसा बैल अच्छा नहीं होता ॥२॥ इसमें अन्तिम 'डरुआ' के स्थान में कहीं 'रोवा' पाठ आता है जो ठीक नहीं बैठता।

उदंत बरदे उदंत ब्यायें।
आप जायँ या खसमै खायें ॥३॥

उदंत गाय का बरदाना अच्छा नहीं है, (उदंत—दूध का दाँत जब तक न गिर जाय)—ऐसी गाय जो ब्यावे, वह या तो मर जावे या स्वयं खसम (मालिक) को ही खा जावे अर्थात् नष्ट कर देवे ॥३॥

एक बात तुम सुनहु हमारी।
बूढ़ बैल से भली कुदारी ॥४॥

(कवि कहता है) हे कृषक ! तुम हमारी एक बात सुनो। खेती के लिए बूढ़े बैल से कुदाल अच्छी है कि उससे खोद-खादकर काम चल जाता है ॥४॥

एक समय विधना का खेल।
रहा ऊसर में चरत अकेल॥
एक बटोही हर हर कहा।
ठाढ़े गिरा होस ना रहा॥५॥

एक समय भगवान का यह खेल तो देखो। एक गादर (कायर) बैल ऊसर भूमि में चर रहा था कि उधर से कोई एक मुसाफिर 'हर-हर' करता हुआ आया। तब उसका यह शब्द सुनकर वह बैल खड़े ही पृथ्वी पर ऐसा गिर पड़ा कि अचेत हो गया ॥५॥

करिया काछी धौंरे बान।
इन्हैं छाँड़ि जनि बेसहो आन॥६॥

काली कच्छ और धवल (चाँदी के से सफेद) बाल (रोम, रोयें) वाले बैल को छोड़कर दूसरा न खरीदो ॥६॥

कार कछौटी सुनरे बान।
इन्हैं छाँड़ि जनि बेसहो आन॥७॥

काली कच्छ और सुनहले या सुन्दर बालोंवाले बैल को छोड़कर दूसरा बैल न खरीदो ॥७॥

कार कछौटा झबरे कान।
इन्हैं छाँड़ि जनि लीजो आन॥८॥

काली कच्छ और बड़े-बड़े कानवाले बैल को छोड़कर दूसरा बैल न लीजिएगा ॥८॥

खेत बे पानी बूढ़ा बैल।
सो गृहस्थ साँझे गेह गैल॥९॥

जिस गृहस्थ के पास बूढ़ा (वृद्ध) बैल हो और खेत बिना पानी का हो तो जानो वह सुबह से पहले संध्या समय तक अर्थात् शीघ्र ही नष्ट हो जायगा ॥९॥

छोट सींग औ छोटो पूँछ।
ऐसा बरद लिहौ बे पूँछ ॥१०॥

छोटी सींग और छोटी पूँछवाले बैल को बिना पूछे ही खरीद लो ॥१०॥

छोटा मुँह औ ऐंठा कान।
यही बैल की है पहचान ॥११॥

अच्छे बैल की यह पहचान है कि उसका मुँह छोटा होता है और ऐंठे हुए उसके कान होते हैं ॥११॥

छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ।
सद्दर कहै गुसैयें खाऊँ॥
नौदर कहै मैं नौ पिस धाऊँ।
हित कुटुम्ब उपरोहित खाऊँ ॥१२॥

शब्दार्थ—छद्दर—छः दाँतोंवाला। सद्दर=सात दाँतोंवाला। नौदर=नौ दाँतोंवाला। उपरोहित=पूर्ण हितैषी या पुरोहित। गुसैयें=मालिक, स्वामी।

छः दाँतों वाला बैल कहता है मैं तो केवल सब जगह आता-जाता हूँ। अर्थात् मेरी कहीं गुजर नहीं होती। सात दाँतों वाला कहता है कि मैं तो अपने मालिक को ही खा जाता हूँ और नौ दाँतों वाला कहता है मैं तो नौ दिशाओं में दौड़ता हूँ अर्थात् जब हल में जुतना होता है तब सीधी एक भी हराई नहीं चलता और इधर-उधर नीचे-ऊपर नवो दिशाओं में अपनी उछल-कूद तथा तूफान दिखाता हूँ, साथ ही अपने मालिक के मित्र, कुटुम्ब (परिवार) और पुरोहित तक को खा जाता हूँ ॥१२॥

जब देखो पिय सम्पति थोड़ी।
बेसहो गाय बियाउर घोड़ी ॥१३॥

(किसान की स्त्री अपने प्रियतम अर्थात् स्वामी से कहती है—) हे प्रियतम! यदि दाम थोड़ा हो तो (बछड़ा) ब्यायी हुई गौ और घोड़ी खरीदो ॥१३॥

जब देखो घोंघी ओहि पार।
तब थैली खोलौ यहि पार ॥१४॥

कवि का कहना है—यदि तुम नदी के इसी तट पर खड़े हो और उसके उस पार तुम्हें घोघी अर्थात् दोनों आगे की ओर गोल मुड़ी हुई सींगों वाला बैल दिखाई पड़े तो उसे खरीदने के लिए इसी पार अर्थात् पहले ही से थैली खोल रक्खो और पहुंचते ही खरीद लो ।।१४।।

जहँ देखा पटवा की डोर।
तहाँ दाजियो थैलो छोर।। १५ ।।

शब्दार्थ—पटवा—पीले रङ्ग वाला। डोर—डोरी, पगहा, बगनी।

अर्थ—जहाँ डोरी में बँधा हुआ पीले रङ्ग वाला बैल देखो, वहाँ थैली खोल दो अर्थात् उसे अवश्य ही खरीद लो ।।१५।।

जहाँ देखिये रूपा धौर।
सुकाचार बरु दीहो और ।। १६ ।।

शब्दार्थ—रूपा—सफेद, चाँदी के रङ्ग का। धौर—धवल, उज्वल, सफेद। सुकाचार—चार सूके का एक रुपया। बस—भले ही।

अर्थ—जहाँ चाँदी के रङ्ग वाला सफेद बैल देखो, वहाँ भले ही एक रुपया अधिक लगे, परन्तु देकर उसे खरीद लो ।। १६ ।।

जहा पड़े फुलवा की लार।
झाड़ू लिये बुहारे सार ।। १७ ।।

शब्दार्थ—फुलवा—फुलहा आँखों में फूली पड़ी हुई। सार—ओसारा, दरवाजा, द्वार, मैदान।

अर्थ—जहाँ फुलहा बैल की लार टपके, वहाँ फौरन ही झाड़ू से बुहार दो, क्योंकि ऐसा बैल और उसकी लार बड़ी अशकुन की होती है ।। १७ ।।

जहवाँ देखिहा लोह बैलिया।
तहवाँ दीहा खोलि थैलिया ।। १८ ।।

कवि का कहना है—जहाँ लोहा (लाल रङ्ग का) बैल देखना वहाँ उसे खरीदने के लिये शीघ्र ही थैली खोल देना अर्थात् अवश्य ही खरीद लेना ।। १८ ।।

जोतै के पुरबी, लादै के दमोय।
हेंगा क काम दे, जो देवहा होय॥ १६॥

खेतों की जुताई के लिये पूरब के (पूर्वी, पुरबहा) बैल अच्छे होते हैं और लदनी (पीठ पर बोझ लादने और बैलगाड़ी में जोत कर लदनी करने के लिये) दमोय (दक्षिणी, सागर और दमोह की तरफ़ के) तथा देवहा जाति के बैल हेंगा अर्थात् खेत के ढेलों के बराबर करने के काम में अच्छे पड़ते हैं ॥१६॥

डग-डग डोलन फरका फेंकन, कहाँ चले तुम बाँड़ा।
पहिले खाइब रान परोसिन, फिर गोसयें कब छाँड़ा॥ २०॥

कभी कोई ऊँची जातिवाला बैल जो बाँड़ा अर्थात् कटी पूँछ का हो जाता है जिसके छप्पर में घुसने पर उसकी पीठ में रगड़ तो पड़ती है साथ ही छप्पर उलट तक जाता है और वह डगमगाते हुए भी चलता है—ऐसा बैल जो पहले तो अपने निकट के पड़ोसी का नाश करता है फिर भला वह अपने स्वामी को कब छोड़ सकता है अर्थात् अवश्य ही उसका भी नाश करता है॥ २०॥

ना मोहिं नाधो डलिया कुलिया, ना मोहिं नाधो दायें।
बीस बरस तक करों बरदई, जो ना मिलि हैं गायें॥२१॥

(बैल कहता है) मुझे छोटे-छोटे खेतों में न जोतो और न तो दायें पर जोतो। यदि इस नियम का पालन मेरे साथ करो और यदि मैं गायों (गौओं) से न मिलने पाऊँ तो निश्चय ही तुम्हारे यहाँ बीस वर्ष तक बरदई अर्थात् खेती का काम करूँगा॥ २१॥

नासु करै राज का नास॥ २२॥

नासू बैल वह है जिसके शरीर में नसें तो अधिक हों परन्तु पसलियों की कमी हो—ऐसा बैल राज्य का भी नाश कर देता है॥ २२॥

नीला कंधा बैंगन खुरा।
कभी न निकले कंता बुरा॥ २३॥

घाघ कवि के शब्दों में किसान की स्त्री अपने पति से कहती है—हे कंत! (प्रियतम!) जिस बैल का कंधा नीले रंग का हो और खुर बैगनी रंग का हो वह कभी बुरा नहीं होता॥ २३॥

नाटा खोटा बेचिके, चार धुरन्धर लेहु।
आपन काम निकारिके, औरन मँगनी देहु ॥२४॥

कवि कहता है—नाटे बैल अच्छे नहीं होते, अतः इन्हें बेच करके चलने वाले अच्छे-अच्छे चार बैल खरीदो जिनसे अपना काम तो पहल ही चला लो और फिर दूसरों को मँगनी देकर उनका भी काम चलाओ ॥ २४ ॥

निटिया बैल छोटिया हारो।
दूब कहै मोर काह उखारी ॥२५॥

नाटे कद के बैल और छोटा हल होने से खेतों की दूब नहीं जाती। इसलिए वह प्रबल होकर कहती है कि भला यह मेरा क्या उखाड़ लेगा? ॥२५॥

पतली पेंडुली मोटी रान, पूँछ होय भुइ में तरियान।
जाके होवै ऐसो गोई, वाकी तकै और सब कोई ॥२६॥

पतली पेंडुली और मोटी रानवाले बैल जिनकी पूँछ जमीन को छू रही हों जिस किसान के पास ऐसी जोड़ी होती है उसे सब कोई देखता ही रहता है अर्थात् वह बड़ा ही भाग्यशाली है ॥ २६ ॥

पूँछ झपा औ छोटे कान।
ऐसे बरद मेहनती जान ॥ २७ ॥

जिन बैलों की पूँछ तो झंपा अर्थात् झबरी और गुच्छेदार होती है और जिनके कान छोटे होते हैं—ऐसे बैलों को परिश्रमी जानो ॥ २७ ॥

बड़सिंगा जनि लीजो मोल।
कुएँ में डारो रुपया खोल ॥ २८ ॥

बड़सिंगा अर्थात् लम्बी सींगों वाला बैल मत खरीदो, भले ही रूपये को कुए में छोड़ दो अथवा ऐसा बैल खरीदना व्यर्थ है और मानों रूपये को कुएँ के पानी में फेंक देना है ॥ २८ ॥

बरद बेसाहन जाओ कंता।
कबरा का जनि देखो दंता ॥ २९ ॥

बैलों में कबरी जाति का बैल अच्छा होता है, इसीलिए कृषक की स्त्री मानों अपने पति से कहती है—हे कंत! (प्रियतम!) बैल खरीदने तो जाओ, परन्तु

कबरा (वह बैल जिसकी आँखें बड़ी सुन्दर, पलकों के कोए लाल वर्ण के होते हैं और बरौनी भी चितकबरी होती है) ऐसा बैल जहाँ मिले उसके दाँत न देखना और खरीद लेना ॥ २६॥

बैल बेसाहन जाओ कंता।
भूरे का मत देखा दंता ॥ ३०॥

भावार्थ—भूरा बैल भी अच्छा होता है, अतः इसका भी दाँत न देखो और खरीद लो ॥ ३०॥

बाँसड़ औ मुँह का धोआ।
इन्हें देख चरवाहा रोआ ॥ ३१॥

भावार्थ—बाँसड़ अर्थात् कुबड़ा और मुँहधोहा अर्थात् सफेद मुँहवाले बैल भी अच्छे नहीं होते। यहाँ तक कि ऐसे बैल जब खेती के काम में नहीं आते और चरवाहे को चराने के लिए दिए जाते हैं तो वह भी रोने लगता है॥ ३१॥

बैल तरकना टूटी नाव।
ये काहू दिन दैहैं दाव॥ ३२॥

शब्दार्थ—तरकना—तड़कनेवाला, चौंकनेवाला, धोखे में मारने वाला, दाँव—दगा, धोखा देने वाला।

भावार्थ—धोखे में मारने वाला या चौंकने वाला बैल और टूटी हुई नौका ये दोनों ही किसी दिन धोखा देने वाले होते हैं॥ ३२॥

बैल चमकना जोत में, औ चमकाली नार।
ये बैरी हैं जानके, लाज रखैं करतार॥ ३३॥

शब्दार्थ—चमकना—चौंकने-कूदने वाला। चमकीली—चटक-मटक से रहने वाली, सुन्दरी। करतार—ईश्वर, परमात्मा। जोत में—खेती के काम में।

भावार्थ जिस कृषक की खेती के काम में आनेवाले बैल चौंकने-कूदने वाले हों और स्त्री चटकीली एवं सुन्दरी हो, ये दोनों ही उसके प्राण के शत्रु होते हैं। ऐसे की तो परमात्मा ही लज्जा रक्खें॥ ३३॥

बरद बिसाहन जाओ कंता। खैरा का जनि देखो दंता॥
जहाँ परै खैरे की खुरी। तौ कर डारै चापर पुरी॥
जहाँ परे खैरा की लार। बढ़नी लेहु बुहारो सार॥ ३४॥

शब्दार्थ—बरद—बैल। बिसान—खरीदना (क्रिया सकर्मक)। कंता—प्रियतम, पति। खैर—खैरा रंग का। चापर—चौपट, नष्ट। पुरी—पुर, राज्य। बढ़नी—झाड़ू। सार—ओसारा, दालान, स्थान विशेष।

भावार्थ—घाघ कवि के शब्दों में किसान की स्त्री अपने पति से कहती है—हे प्रियतम! बैल खरीदने जाओ तो अवश्य, किंतु खैरा रंग के बैल का दाँत न देखना अर्थात् उसे न खरीदना; क्योंकि ऐसा बैल बड़ा ही अशुभ होता है। खैरे बैल की खुर जहाँ पड़ती है वहाँ यदि राज्य भी हो तो वह उसे चौपट कर देती है। जहाँ खैरा बैल की लार गिरे वहाँ उस स्थान को झाड़ू लेकर फौरन ही झाड़-बुहार देवे॥ ३४॥

बाँधा बछड़ा जाय मठाय।
बैठा ज्वान जाय तुँदियाय॥ ३५॥

शब्दार्थ—मठाय—आलसी और सुस्त हो जाना। तुँदियाय—तोंद निकलना।

भावार्थ—बाँधा हुआ बछड़ा सुस्त हो जाता है और युवक जवान मनुष्य बैठा रहे तो उसकी तोंद निकल जाती है और वह भी सुस्त और आलसी हो जाता है॥ ३५॥

बैल लीजै कजरा, दाम दीजै अगरा॥ ३६॥

शब्दार्थ—कजरा—काली आँखवाला। अगरा—अगाड़ी या पेशगी, पहले।

भावार्थ—यदि काली आँखवाला बैल मिले तो उसके लिए सबसे पलेह दाम दे देना चाहिए; क्योंकि यह बैल (कजरा) सबसे अच्छा होता है॥ ३६॥

बैल मुसहरा जो कोई लेय। राजभंग पलमें कर देय॥
त्रिया बाल सब कुछ छुट जाय। भीख माँग के घर-घर खाय॥ ३७॥

शब्दार्थ—मुसहरा—वह बैल जिसके पूँछ के बालों में बीच-बीच में बाल का काले में सफेद या सफेद में काला ऐसी भिन्नता हो, शरीर के रंग से रंग का न मिलना, लटके शरीर का। राज्य=राज, काम काज, ठाट-बाट।

भावार्थ—मुसहरा बैल अच्छा नहीं होता। जो इसे खरीदता है तो यह पल-रभ में उसके ठाट-बाट को भंग कर देता है। हयाँ तक कि वह अपने स्त्री-बालबच्चों सहित सब से छूट जाता है और घर-घर भीख माँगकर खाने की नौबत आ जाती है॥ ३७॥

भैंसा बरद की खेती करै। करजा काढ़ि बिरानो खाय।
बधिया ऐंचत है पहरी को। भैंसा ओहरी का लै जाय ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ—बधिया = बैल। पहरी = इधर को, खेत की तरफ। ओहरी = उधर, पानी या गड्ढ की तरफ। काढ़कर = लेकर।

भावार्थ—भैंसा और बैल को एक साथ जोतकर खेती करना और दूसरे से करजा लेकर खाना एक ही समान है। बैल तो इधर खेत की ओर खींचता है और भैंसा उधर पानी या गड्ढ की तरफ ले जाता है; क्योंकि उसे जल प्यारा होता है ॥ ३८ ॥

मत कोइ लेय मुसरहा वाहन।
खसम मारिके डारै पायन ॥ ३९ ॥

शब्दार्थ—मुसरहा = मनहूस लक्षण वाला, मरकहा, मारने वाला, बिगड़ायल। वाहन = बैल। खसम = मालिक।

भावार्थ—मनहूस लक्षणों वाला मुसरहा नस्ल का बैल कोई मत खरीदो। वह ऐसा बिगड़ायल होता है कि मालिक को मारकर अपने पैरों के नीचे डाल देता है ॥ ३९ ॥

मुँह का मोट माथ का महुआ। इन्हैं देखि जनि भूल्यो रहुआ।
धरती नहीं हराई जोरै। बैठ मेड़पर पागुर भरै ॥४०॥

शब्दार्थ—महुआ = पीला। रहुआ = खरीदनेवाले, मुसाफिर, यात्री, राही। जोरै = जोड़े, जोते, खेत जोतना। पागुर = पगुरी या जुगाली।

भावार्थ—जो बैल मुँह का मोटा हो और जिसका माथा पीला हो, ऐसे बैलों को देखकर ऐ यात्रियों, बैल के खरीदने वाले भूलकर भी इन्हें न खरीदना। ऐसा बैल खेत की एक भी हराई नहीं जोड़ता या जोतता और यह खेत के मेड़पर बैठकर पागुर या जुगाली ही करता है ॥ ४० ॥

मरद निकौनो बरदै दायें।
दुभरी चलने में दुख पायें ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ—निकौनी = निरौनी, निराई, निरवाई, खेतों में घास निकालने की एक क्रिया। दुभरी = गर्भिणी स्त्री।

भावार्थ—मर्द को खेतों से घास निकालने एवं निरौनी करने में, बैल को हल के दाहिने चलने में और गर्भिणी स्त्री को मार्ग रास्ता चलने में दुःख प्राप्त होता है॥ ४१ ॥

मयनी बैल बड़ो बलवान ।
तनिक में करिहैं ठाढ़े काम ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ—मयनी = एक प्रकार की तिरछी सींग वाला, मैनी जाति का ।

भावार्थ—मैनी जाति का बैल बड़ा बलवान होता है, यह तनिक में ही खड़े-खड़े अपने काम कर देता है ॥ ४२ ॥

लम्बे लम्बे कान, और ढ़ीला मुतान ।
छोड़ो छोड़ो किसान, ना तो जात है परान ॥ ४३ ॥

शब्दार्थ—मुतान = मूत्रस्थान, छुछुली । ढ़ीला = लम्बा = चौड़ा । परान = प्राण ।

भावार्थ—लम्बे कान और लम्बी छुछली वाले बैल अच्छे नहीं होते । हे किसान ! इन्हें छोड़ दो नहीं तो, प्राणहन्ता हो जायँगे ॥ ४३ ॥

वह किसान है पातर ।
जो बरदा राखै गादर ॥ ४४ ॥

शब्दार्थ—पातर = निर्बल । गादर = सुस्त, कादर, कायर, कमजोर ।

भावार्थ—वह किसान निर्बल है जो कमजोर बैल रखता है ॥ ४४ ॥

सात दाँत उदंत को, रंग जो काला होय ।
इनको कबहुँ न लीजिए, दाम चहै जो होय ॥ ४५ ॥

शब्दार्थ—उदंत = दूध का दाँत न टूटना ।

भावार्थ—यदि काले रंग का बैल सात दाँत का उदंत ही क्यों न हो; और चाहे इसका मूल्य जितना भी कम क्यों न हो, परन्तु इसे कभी न लो ॥ ४५ ॥

सींग मुड़े माथा उठा, मुँह का होवे गोल ।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल ॥ ४६ ॥

शब्दार्थ—करन = कान ।

भावार्थ—जिस बैल की सींगें मुड़ी हुई अर्थात् घोंची हों, माथा उभड़ा हुआ हो और जो मुँह का गोल हो। जिसके शरीर के बाल मुलायम और कान चंचल हों, वह बैल चलने में तेज और बहुत ही अमूल्य है ॥ ४६ ॥

सींग गिरैला बरद के, औ मनई का कोढ़।
ये नीके ना होयँगे, चाहे बद लो होड़ ॥ ४७ ॥

शब्दार्थ—गिरैला=गिरी हुई। मनई=मनुष्य। कोढ़=कुष्टरोग। नीके=अच्छे। बदलो=लगालो। होड़=शर्त।

भावार्थ—जिस बैल की सींग गिर जाती है। और जिस मनुष्य को कुष्टरोग हो जाता है, चाहे कितनी भी शर्त लगाकर देख लो कि वह कदापि अच्छा न होगा ॥ ४७ ॥

सेत रंग औ पीठ बरारी।
ताहि देखि जनि भूल्यो अनारी ॥ ४८ ॥

शब्दार्थ—सेत=श्वेत, सफेद। बरारी=बराबर=गहिरी रदी हुई। अनारी—अंजान।

भावार्थ—जिस बैल की पीठ नीची और रीढ की हड्डी दबी हुई हो और रंग सफेद हो, उसे देखकर अनजान बनकर भूल से भी न खरीदना चाहिए ॥ ४८ ॥

सौंख कहा देख मोर करा।
बेमेहरी का करौं घरा ॥ ४६ ॥

शब्दार्थ—सौंख=बैल के मस्तक पर एक निशान। करा=कर्तव्य।

भावार्थ—सौंखहा बैल कहता है—मेरा कर्तव्य तो देखो। मुझे जो ले जायगा उस किसान का घर बिना स्त्री का कर दूँगा ॥ ४६ ॥

पाठान्तर—'कला' का यहाँ शुद्धरूप 'करा' किया गया है।

हिरन मुतान और पतली पूँछ।
बैल बेसाहो कंत बे-बूझ ॥ ५० ॥

शब्दार्थ—हिरन-मुतान=हिरन की टेढ़ी-मेढ़ी चाल से मूतने या पेशाब करनेवाला। बे-बूझ=विना समझे बूझे, निःशंक होकर।

भावार्थ—किसान की स्त्री अपने पति से कहती है—स्वामी! हिरन-मुतान

और पतली पूँछवाले बैल को निःशंक होकर खरीद लेना उसमें किसी से कुछ भी समझने-बूझने की जरूरत नहीं है ॥ ५० ॥

बोअनी (बोआई) की मात्रा और मुहूर्त-विचार

(१) बीजों की मात्रा ।

जौ गोंहूँ बोवै पाँच पसेर । मटर के बीघा तीसै सेर ।
बोवै चना पसेरी तीन । तीन सेर बीघा जोन्हरी कीन ॥ १ ॥

भावार्थ—जौ और गेहूँ पचीस सेर और मटर तीस सेर एक बीघा में बोना चाहिए । चना पन्द्रह सेर और जोन्हरी का बीज तीन सेर प्रति बीघा के हिसाब से बोना चाहिए ॥ १ ॥

दो सेर मोथी, अरहर मास । ड़ेढ़ सेर बिगहा बीज कपास ।
पाँच पसेरी बिगहा धान । तीन पसेरी जड़हन मान ॥ २ ॥

भावार्थ—मोथी, अरहर और उर्द का बीज दो सेर प्रति बीघा और कपास का बीज डेढ़ सेर प्रति (एक) बीघा में बोना चाहिए । धान पचीस सेर का बीघा और जड़हन (अगहनी धान) पन्द्रह सेर एक बीघे में बोये ॥ २ ॥

सवासेर बीघा साँवाँ मान । तिल्ली सरसों अँजुरी जान ॥
बर्रे कोदो सेर बोआओ । डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ ॥ ३ ॥

भावार्थ—साँवाँ सवा सेर बीघा का मान है अर्थात् बीघा पीछे सवा सेर साँवाँ बोये और तिल्ली तथा सरसों एक बीघे में एक अँजुलीभर बोना चाहिए । बर्रे और कोदो बीघा पीछे सेर भर और तीसी का बीज एक बीघे में डेढ़ सेर डालो ॥ ३ ॥

डेढ़ सेर बजरा बजरी साँवाँ ।
कोदो काकुन सवैया बोवा ॥ ४ ॥

भावार्थ—बजड़ा, बजड़ी और साँवाँ डेढ़ सेर का बीघा और कोदो, काकुन सवा सेर प्रति बीघा के हिसाब से बोना चाहिए ॥ ४ ॥

यहि बिधि से जब बोवे किसान ।
दूने लाभ की खेती जान ॥ ५ ॥

भावार्थ—इस नियम से जब किसान (बीजों को) बोवे, तब जानो कि उसकी खेती दूने लाभ की होगी ॥ ५ ॥

(२) बीज बोने के मुहूर्त ।

अद्रा धान पुनर्वसु पैया ।
रोवै किसान जा बोवै चिरैया ॥ १ ॥

भावार्थ—आर्द्रा नक्षत्र में धान का बोना उत्तम है । पुनर्वसु नक्षत्र में बोने से धान नहीं पैया (बिना सत्त का धान) होता है और चिरैया नक्षत्र में धान बोने वाला किसान रोता है अर्थात् उस बोअनी से कुछ नहीं उत्पन्न होता ॥ १ ॥

अद्रा रेड़ पुनर्बसु पाती ।
लाग चिरैया दिया न बाती ॥ २ ॥

भावार्थ—अर्द्रा नक्षत्र में धान बोने से उसके पुंज मोटे-मोटे और उसकी उपज आदि सब कुछ अच्छी होती है । इसके विपरीत पुनर्वसु की बोआई से उसकी फसल में पत्तियाँ अधिक होती हैं ! परन्तु चिरैया अर्थात् पुष्य नक्षत्र में धान बोने से तो किसान के घर में चिराग-बत्ती तक का ठिकाना न रहेगा ॥ २ ॥

अगहन जो कोइ बोवै जौवा ।
होइ न हाइ नहीं खावै कौआ ॥ ३ ॥

भावार्थ—(इसी प्रकार) यदि कोई अगहन मास में जौ बोता है तो वह हुआ तो हुआ नहीं तो उसे कौआ ही खा जाते हैं ॥ ३ ॥

आधे चित्रा कूटी धान ।
विधि का लिखा न होई आन ॥ ४ ॥

भावार्थ—चित्रा नक्षत्र के आधा व्यतीत हो जाने पर धान फूटता है अर्थात् उसमें बालें निकलती हैं । ब्रह्मा के इस लिखे विधान में दूसरा नहीं होता ॥ ४ ॥

आधे हथिया मूरि मुराई ।
आधे हथिया सरसों राई ॥ ५ ॥

भावार्थ—हस्त नक्षत्र के प्रथम आधे पर मूली आदि और अन्त के आधे पद में सरसों, राई आदि बोवे ॥ ५ ॥

उगी हरनी फूली कास।
अब का बोये निगोड़े मास ॥ ६ ॥

शब्दार्थ—हरनी = हस्त या अगस्त नाम का तारा। कास = वन की एक घास, वनकास। मास = उड़द या उर्द। निगोड़े = निर्गुनी किसान।

भावार्थ—अगस्त नाम का तारा उदय हो गया और वन में कांस फूल गयी। ऐ निगुंनी किसान! अब उड़द (उर्द) क्या बोता है? ॥ ६ ॥

तुलसीदास—उदित अगस्त..........

कन्या धान मीन जौ।
जहाँ चाहे तहाँ लौ ॥ ७ ॥

शब्दार्थ—कन्या = क्वार का आरम्भ, कन्या की संक्रान्ति। मीन = माघ का प्रथम पक्ष, मीन की संक्रान्ति। लौ = लौनी, कटनी, कटिया आदि।

भावार्थ—क्वार में कन्या की संक्रान्ति आने पर जिसके धान की खेती तैयार हो जाये और इसी प्रकार मीन की संक्रान्ति लगने पर जिसके खेत में जौ की फसल तैयार हो वह लौनी करे ॥ ७ ॥

चना चित्तरा चौगुना, स्वाती गेहूँ होय ॥ ८ ॥

शब्दार्थ—चित्तरा = चित्रा नामक नक्षत्र। स्वाती = एक नक्षत्र का नाम।

भावार्थ—चित्रा नामक नक्षत्र में चना और स्वाती नक्षत्र में गेहूँ बोने से उसकी पैदावार चौगुनी होती है ॥ ८ ॥

चित्रा गेहूं अद्रा धान।
न उनके गेरुई न इनके घाम ॥ ९ ॥

चित्रा नक्षत्र में गेहूँ और आर्द्रा नक्षत्र में बोये हुए धान अच्छे होते हैं। गेहूँ में न गेरुई (गेरुई नामक रोग) लगता और न धान पर कठिन धूप का प्रभाव पड़ता है अर्थात् दोनों ही रक्षित रहते हैं ॥ ६ ॥

पुष्य-पुनबसु बोवै धान।
असलेषा जोन्हरी परमान ॥ १० ॥

शब्दार्थ—पुष्य-पुनर्वसु = नक्षत्रों के नाम। परमान = प्रमाण।

भावार्थ—पुष्य पुनर्वसु नक्षत्र में धान और श्लेषा नक्षत्र में जोन्हरी के बोने का प्रमाण माना गया है ॥ १० ॥

पुरवा में जनि रोपो भैया।
एक धान में सोरह पैया ॥ ११ ॥

शब्दार्थ—पुरबा = पूर्वा नक्षत्र। रोपो = रोपनी या बैठौनी की एक क्रिया। पैया = सत्तरहित छूँछा धान।

भावार्थ—घाघ कवि कृषकों से कहते हैं—हे भाइयों! अगहनी के फसल के लिये धान के कोमल पौधों को पूर्वा नक्षत्र में मत रोपो; क्योंकि इसमें रोपे हुए धान के एक बीज में सोलह सत्तरहित छूँछे धान (पैया) ही पैदा होगा ॥११॥

बुध बोअनी, सुक लवनी ॥ १२ ॥

शब्दार्थ—बोअनी = बीज बोना। लवनी = लौनी, कटाई, फसल काटना।

भावार्थ—बुधवार को खेतों में बीज बोना और शुक्रवार को फसल काटना आरम्भ करे ॥ १२ ॥

बुध बृहस्पति को भले, शुक न भले बखान।
रवि मंगल बोनी करे, द्वार न आवे धान ॥ १३ ॥

भावार्थ—धान बोने के लिये बुध और बृहस्पति ये दोनों दिन अच्छे हैं, शुक्रवार नहीं। यदि रविवार और मंगलवार को बोवे तो धान की कुछ भी पैदावार दरवाजे तक न आवे ॥ १३ ॥

बोवे बजरा आये पूख।
फिर मन कैसे पावे सूख ॥ १४ ॥

भावार्थ—जब भला पुष्य नक्षत्र आने पर जो बाजरा बोवेगा, फिर उसके मन को सुख कैसे प्राप्त होगा? ॥ १४ ॥

मारूँ हरिनो तोड़ूँ कास।
बोऊँ उर्द हथिया को आस ॥ १५ ॥

शब्दार्थ—हरिनी = हरिण या अगस्त नामक तारा।

भावार्थ—अगस्त नामक तारा और कास के फूलने की पर्वाह न करते हुए भी हस्त नक्षत्र की आशा करके उर्द बोवे ॥ १५ ॥

मघा मारै पुरबा सँवारै।
उत्तरा भर खेत निहारै ॥ १६ ॥

भावार्थ—यदि अगहनी फसल जड़हन को मघा में बोकर पूर्वा नक्षत्रभर उसकी रक्षा करदे तो वह खेत उत्तरा में देखने योग्य हो जाता है ॥ १६ ॥

रोहनी खाट, मिरगसिर छउनी।
अद्रा आए धान की बाउनी ॥ १७ ॥

भावार्थ—रोहिणी नक्षत्र में खाट और मृगशिर नक्षत्र में छप्पर का ठाट ठाटना या छप्पर बनाना अच्छा होता है; क्योंकि आर्द्रा आते ही तो वर्षा का वेग आरम्भ हो जाता है जिसमें धान का बोना ही मुख्य कार्य है ॥ १७ ॥

रोहिनि मृगसिर बोये मक्का। उरदो मडुवा दे नहिं टका ॥
मृगसिर में जो बोये चेना। जमीदार को कछु नहिं देना ॥
बोये बजरा आये पुक्ख। फिर मत मनमें भागो सुक्ख ॥१८॥

भावार्थ—यदि रोहिन (पुष्य) और मृगशिरा नक्षत्र में मक्का, उड़द और मडुआ बोओगे तो वह टकेभर की भी पैदावार नहीं देगा। इसी प्रकार यदि मृगशिरा नक्षत्र में चेना बोओगे तो समझो कि जमींदार को देने भर को भी कुछ न प्राप्त कर सकोगे। और यदि पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोओगे तो फिर मन में किंचित् भी सुख (शान्ति) न लाभ कर सकोगे अर्थात् कुछ भी पैदावार न होगी ॥ १८ ॥

सावन साँवाँ अगहन जवा।
जितना बोवै उतना लवा ॥ १९ ॥

शब्दार्थ—जवा=जौ। लवा=लौनी, फसल काटना।

भावार्थ—यदि श्रावणमास में साँवाँ और अगहन मास में जौ बोओगे तो जितना बोओगे उतना ही काटोगे अर्थात् कुछ भी पैदावार न होगी ॥१९॥

(३) बीज बोने के कुछ अन्य नियम।

ऊख गोड़ि के तुरत दबावै।
तो फिर ऊख बहुत सुख पावै ॥ १ ॥

भावार्थ—दबावै=मिट्टी बराबर करने की एक क्रिया, हेंग चला देना।

भावार्थ—ऊख को गोड़कर तुरन्त दबा देवे अर्थात् हेंगा चला देवे। फिर तो ऊख को बहुत सुख प्राप्त होता है ॥ १ ॥

कदम कदम पर बाजरा, मेंढक-कुदौनी ज्वार*।
ऐसे बोवे जो कोई, घर का भरै कोठार ॥ २ ॥

*ज्वार—गेहूँ कट जाने पर जब खेत खाली होता है, उस खेत में ज्वार की फसल अच्छी होती है। ज्वार चारे के लिए और दाने के लिए दोनों काम में आती है। चारे के लिए ज्वार और मूँग एक साथ छींटते हैं और घना छींटते हैं बीज अधिक डालते हैं। दाने के लिए कम ज्वार खेत में डालना ठीक है। तीन-साढ़े तीन पाव बीघे के हिसाब से ठीक होता है। ज्वार के साथ अरहर, मूँग, तिल, पटुवा छींटते हैं। सभी मिलुवाँ जिन्सों का नाम 'मसार' है। इसी लिए पानी पड़ने के पहले किसान लोग जब अपने-अपने घर सलाह करते हैं, तब विचार-विनिमय करते हुए बातें होती हैं। खेतों का नम्बर तो उन्हें याद नहीं रहता। 'सिहोरेतर' मक्का, पड़ाइन के इनारा पर सनई, 'बरेतर' के कुएँ के पास मसार, उँचवा पर बाजरा, मुसरहवा पर भी मसार।

पहले लोग फसल छींटने-बोने का पक्का कर लेते हैं, वे होशियार किसान हैं। जो लोग यह कहते हैं कि देखा जायगा, उनका काम ढीला पड़ जाता है। 'मसार' के लिए कुछ लोग कहते हैं कि खाद—पास की जरूरत नहीं है। ऐसे लोग गलती करते हैं। यदि ज्वार के थोपे (बाल) बड़ी-बड़ी, दानेदार देखना हो, अरहर हरी-भरी देखने की इच्छा हो और अधिक चारा लेने का विचार हो तो कम से कम मसार छींटने के पहले भेंड़ें रखवा दो। खाद मिट्टी जो कुछ नसीब हो डलवा दीजिये। विलायती खाद के भरोसे मत रहो। उससे एक बार फसल ले लेंगे। पर आगे के लिये खेत खराब हो जायगा। ज्वार में बहुत चीज मिलाकर बोने का रहस्य यह है कि कोई न कोई फसल हो जायगी। ज्वार न होगी तो अरहर होगी। अरहर न होगी तो सनई, मूँग होगी! यह सोचना ठीक नहीं—चूँ चूँ का मुरब्बा बनाना ठीक नहीं। ज्वार के साथ अरहर रख लीजिए और इच्छा हो तो थोड़ी सनई और कोई फसल मिलुवा न बोइए। इसमें सन्देह नहीं कि मूँग पहले निकल सकती है, तिल्ली उसके बाद, सनई ज्वारके बाद निकलेगा और अन्त में अरहर को बढ़ने—फैलने का समय मिल जायगा—पर देखा गया है कि कई जिन्सों को एक साथ बोने से हानि ही होती है, लाभ नहीं। छोटकीं जोन्हरीं कार्तिक में कटती है। कार्तिक-अमावस्याको काटने का समय आ जाता है।

शब्दार्थ—मेंढक-कुदौनी=मेंढक की कुदान के फासला या दूरी। कोठार=कोठिल, बखार, अन्न रखने का एक भारी पात्र।

भावार्थ—एक-एक कदम पर बाजरा और मेंढक की कुदान के फासले पर ज्वार या छोटी जोन्हरी—इस प्रकार जो कोई बोवे तो पैदावार इतनी अच्छी होगी कि घर में अन्न रखने का कोठिला बखार भर जायगा ॥ २ ॥

[1]कुलहड़ भदई बोओ यार।
तब चिउरा की होय बहार ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—कुलहड़=कुदाल से कोड़ी या खनी हुई भूमि! भदई=खरीफ की फसल, अगहनी धान या जड़हन। यार=कृषक-मित्र।

भावार्थ—कवि का कहना है ऐ कृषक मित्रो! कुलहड़ भूमि में भदई का धान बोओ तो चिउड़ा खाने की बहार आवेगी ॥ ३ ॥

खेती करै ऊख कपास।
घर करै व्यवहरिया पास ॥ ४ ॥

ऊख और कपास की खेती करे और उधार देने वाले व्यवहारिक पुरुष के पास रहे तो अच्छा है ॥ ४ ॥

गाजर गंजी मूरी, तीनों दूरी बोवे ॥ ५ ॥

गाजर, गंजी और मूली इन तीनों को दूर-दूर पर बोवे ॥ ५ ॥

घनी-घनी जब सनई बोवै।
तब सुतरी की आसा होवै ॥ ६ ॥

भावार्थ—जब सनई को खूब घनी-घनी अर्थात् अधिक बीज बोवे तब सुतरी की आशा करे ॥ ६ ॥

---

[1]कुलहड़-भूमि=गोड़ाई। खेत की मिट्टी गोड़ने को गोड़ाई कहते हैं। इसे करने से खेत की निकाई भी हो जाती है। यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि इससे सूक्ष्म नलियों का मुँह टूट जाता है और खेत की नमी उड़ने नहीं पाती। गोड़ाई से भूमि भुरभुरी हो जाती है। हवा, प्रकाश और गर्मी का प्रवेश सरलता पूर्वक होता है।

छीछी भली जौ चना, छीछी भली कपास।
जिनकी छीछी ऊखड़ी, उनकी छाड़ो आस ॥ ७ ॥

शब्दार्थ—छीछी=हलकी, बीड़र, दूर-दूर। ऊखड़ी=ऊख, ईख।

भावार्थ—जौ, चना और कपास का बीड़र बोना अच्छा है; परन्तु जिनकी ऊख बीड़र हो उसकी तो आशा ही छोड़ देनी चाहिए ॥ ७ ॥

दाना अरसी। बोया सरसी ॥ ८ ॥

शब्दार्थ—दाना=पोस्ते का दाना, पोस्ता। अरसी=अलसी या तीसी सरसी=सरस खेत, नमी मिट्टी वाला खेत।

भावार्थ—पोस्ता और अलसी के खेत की मिट्टी सरस अर्थात् नमी वाली होने पर बोना चाहिए तभी उसके बीज जमते हैं। सूखे या कड़े खेत में ये नहीं होते ॥ ८ ॥

पहिले काँकरि पीछे धान।
उसको कहिए पूर किसान ॥ ९ ॥

शब्दार्थ—काँकरी=ककड़ी। पूर=पूरा।

भावार्थ—पहिले ककड़ी बोयी जाती है, फिर धान। जो इस प्रकार खेती करता है; वह पूरा किसान है ॥ ६ ॥

बाड़ी में बाड़ी करै, करै ईख में ईख।
वे घर योंही जायँगे, सुनै पराई सीख ॥ १० ॥

शब्दार्थ—बाड़ी=फुलवारी (संज्ञा स्त्री०), कपास। पराई=दूसरे की।

भावार्थ—जो कपास के खेत में फिर कपास ही बोता है या ईख के खेत में फिर ईख ही बोने की क्रिया करता है और जो दूसरे की बात सुनता है, अपना या अपने घर की बात नहीं सुनता, वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ॥ १० ॥

बोऊत बने तो बोइयो, नहिं बरी बनाकर खाइयो ॥ ११ ॥

भावार्थ—यदि उर्द को बोते बने तो बो डालो, नहीं तो बड़ी बनाकर खा डालो। अभिप्राय यह कि उड़द का बीज भी दूर-दूर बोया जाता है ॥ ११ ॥

मक्का जोन्हरी और बाजरी।
इनको बोवै कछुक बीड़री ॥ १२ ॥

भावार्थ—मक्का, जोन्हरी और बाजरी या बाजरा को कुछ बीड़र अर्थात् दूर-दूर पर बोना चाहिए ॥ १२ ॥

---

[२]मक्का—मक्का दो तरह का होता है ! एक देशी जिसके दाने पीले और बालें छोटी होती हैं ! देशी मक्का १५ दिन पहले हो जाता है। दूसरे किस्म का मक्का जौनपुरी होता है इसकी बालें लम्बी और दाने सफेद होते हैं। इसकी पैदावार अधिक होतीं है पर, यह देर में होता है।

जहाँ के सब किसान जौनपुरी मक्का बोते हैं, वहाँ तो कुशल है, पर अकेले दुकेले जौनपुरी मक्का बोना भारी विपत्ति सिर पर लेना है। उसकी रखवाली कैसे हो सकती है। जब देशी मक्के कट जायेंगे तब सारे जानवर पिछड़े मक्के पर आक्रमण करेंगे। उस समय कौआ उड़ाते-उड़ाते गला बैठ जायगा तब भी सफलता कम मिलेगी।

मक्का के लिये कहते हैं कि ४५ दिन ठीक है। सावन में मक्का कट जाता है। यदि मक्के की बोआई बेंचने के लिये हो तब तो जल्दी बोना और जल्दी काटना चाहिए, नहीं सो मक्के को खेत में पकने देना चाहिए। कुछ लोग पक जाने पर मक्के की बालें तोड़ लेते हैं और चारे के लिये पौधों को काम में लाते हैं। जिस समय मक्के की फसल तैयार हो जाती है उस समय वर्षा की जवानी रहती है और धूप का दर्शन कई दिन तक नहीं होता। दाने में भुकुड़ी लग जाती है। यदि सौभाग्य से मक्के की वाल सुखाने के लिये धूप मिल गई और मक्का निर्दोष हो गया तो क्या कहना है ? ऐसे दाने का लावा बढ़िया होता है। यदि मक्का सूखा न हो तो उसका दाना फूटता नही। मक्के और चने का दाना भुना हुआ बड़ा मजेदार होता है; पर होने चाहिए मजबूत दाँत ! वेदान्ती लोगों के भाग्य से ऐसी चीजें नहीं लिखी हैं। एक बात और है। जोन्हरी और चने का भुना दाना और बढ़िया गुड़ दोनों का मेल हो जाय तो फिर कहना ही क्या है ?

जब गल्ले पर कण्ट्रोल था तब मक्के का हलुवा भी शहरवाले बनाकर खाते थे। इसका सत्तू मीठा बनता है। भात भी बढ़िया होता है। रोटी भी मीठी

हरिन फलांग काकरी, पैगे पैग कपास।
जाय कहो किसान से, बोवै घनो उँखार ॥ १३॥

भावार्थ—हरिन के एक छलाङ्ग की दूरी पर ककड़ी और मनुष्य के कदम-कदम की दूरी पर कपास के बीज बोना चाहिए। किसान से जाकर कह दो कि ऊँख को घनी बोवे ॥ १३ ॥

सन घना बन बेगरा, मेढ़क फन्दे ज्वार।
पैर पैर पर बाजरा, करै दरिद्रै पार ॥ १४ ॥

शब्दार्थ—बन = कपास। बेगरा = बीड़र, बीरा। फन्दे = कुदान, फासला।

भावार्थ—सन को घना, कपास को बीड़र ज्वार को मेढक की कुदान के बराबर की दूरी पर और किसान को अपने एक-एक कदम की दूरी पर बाजरा बोना चाहिए। इस प्रकार की बोअनी दरिद्रता को दूर करने वाली होती है ॥ १४ ॥

बनती है। मक्के में मजबूती कम हैं। इसके खाने से खून कम बनता है।

मक्के की कोड़ाई कई होती है। इसी लिये जिस खेत में मक्का बोया जाता है, उसकी अगली फसल अच्छी होती है। मक्का बोने के पहले मटर का खेत होना चाहिए और मक्के के बाद मटर बोनी चाहिए। यों तो जौ भी बो सकते हैं पर मटर की पैदावार अच्छी होती है। गेहूँ की फसल धोखा देती है। गेहूँ के लिये जुठहन ठीक नहीं होता। पलिहर खेत में गेहूँ अच्छा होता है। मक्के की पैदावार काफी होती है। मक्के दो मन बिस्वा हो जाना कठिन नहीं है। यह बाल सहित जोखने की बात है। केवल दाना कम होगा। मक्के की हिफाजत हर समय करनी पड़ती है। यह अनाज बड़ी सेवा लेता है।



खाद का महत्त्व और उसका प्रकार

खेती करै खाद * से भरै।
सो अन कोठिला में ले धरै॥ १॥

भावार्थ—जिसे खेती करना हो, वह सबसे पहले खेत को खाद से भर (पाट) देवे। जो ऐसा करता है वह अन्न से अपने घर का कोठिला (बखार) भरकर रख देता है अर्थात् उसकी उपज अच्छी होती है॥ १॥

---

*खाद—भूमि से बराबर फसलके लेने से जिस वस्तु की कमी हो जाती है और जो चीज उस कमी को दूर करने के लिये काम में लायी जाती है, उसे खाद कहते हैं। यह केवल पौधों की खुराक ही नहीं है बल्कि भूमि की दशा भी बदलने के लिये दी जाती है। भूमि में पौधों से ली गई खुराक को पुनः वापस करना अत्यन्त आवश्यक है। इससे भूमि की जलधारणशक्ति बढ़ती है। यदि खाद भूमि में न डाली जाय तो पौधा ठीक से नहीं बढ़ता। यह खाद दो प्रकार की होती है—

(१) **साधारण खाद**—जिसमें पौधे के सभी उपयोगी अंश कुछ न कुछ मिलें। जैसे गोबर की खाद।

(२) **विशेष खाद**—जिसमें केवल एक या दो उपयोगी अंश अधिक मात्रा में मिलें। जैसे—शोरा।

भारतवर्ष में प्रत्येक किसान के घर गोबर की खाद मिलती है। यह खाद सभी खादों में अच्छी और सस्ती पड़ती है। इस खाद में पौधों की खुराक के सभी अंश पाये जाते हैं। **गोबर क्या है?** जानवर पौधों को खाता है और उसका कुछ अंश अपने में रख लेता है और बाकी गोबर के रूप में बाहर निकालता रहता है। गोबर की खाद में नत्रजन अधिक मिलता है।

यद्यपि गोबर से हमारे देश में उपले बनाकर इन्धन का काम लिया जाता है—यह ठीक नहीं है। जहाँ तक हो इसे रोकना ही उचित है। गोबर की खाद तीन प्रकार से बनायी जाती है—

(१) खाद का ढेर बना देना। (२) खाद पशुओं के नीचे जमा करना। (३) खाद गड्ढे में रखना।

इसमें **पहली क्रिया** जो खाद का ढेर बनाना है उसे इस रीति से बनाते हैं कि किसी एक निश्चित स्थान में गोबर डालते चले जाते हैं। देहातों में इसी रीति का अधिक उपयोग करते हैं। परन्तु इससे बड़ी हानियाँ होती हैं—

(१) पहले तो बरसात के दिन में बहुत सा उपयोगी भाग घुलकर बह जाता है।

(२) गर्मी के दिन में सूर्य के ताप से नभजन गैसके रूप में उड़कर हवा में मिल जाता है।

(३) इसका बहुत सा उपयोगी भाग बरसात में घुल जाता है और जो बचता है उसे भूमि सोख लेती है।

(४) इसका अधिक भाग पूर्णरूप में गल नहीं पाता।

(५) इस रीति में पेशाब इस्तेमाल नहीं होता जो गोबर से भी उपयोगी खाद है।

(६) खाद के तैयार होंनेमें अधिक समय लगता है।

(७) इस ढेर के पास के स्थान, खाद की गर्मी के कारण अस्वस्थ हो जाते हैं।

इसकी **दूसरी रीति**—जिसमें कि खाद को पशुओं के नीचे जमा करना कहा गया है—यह रीति पहले की अपेक्षा उत्तम है, तथापि इसमें भी कई अवगुण हैं। इसमें पशुओं के नीचे की फर्श को गहरी खनी पड़ती है। पशु का गोबर और मूत्र उस स्थान से उठाया नहीं जाता और उसी स्थान में पुआल आदि बिछाते रहते हैं। इस तरह से जब बहुत दिन हो जाता है तो उसे खोदकर निकाल लेते हैं और खेत में डालते हैं। यह पहली रीति से अच्छा है; क्योंकि मूत्र में बहुत ही उपयोगी अंश हैं उनका भी इस्तेमाल इसी रीति में होता रहता है। पहली रीतिमें मूत्रका कोई उपयोग नहीं किया जाता, परन्तु इसमें भी बहुत से अवगुण हैं—(१) खाद भलीभाँति सड़ नहीं पाती। (२) पशुओं की तन्दुरुस्ती पर बुरा प्रभाव पड़ता है; क्योंकि उनके बाँधने के स्थान में बदबू आने लगती है (३) दिवालें नम रहती हैं और मकान को कमजोर बना देती हैं। (४) इसमें मकान का फर्श नींचे बनाना पड़ता है।

तीसरा प्रकार—यह खाद छः महीने या बारह महीने में तैयार होती है। इसके लिए पशुशाला से दूर एवं गाँव के बाहर जमीन में एक गड्ढा खोद लेना

चाहिए और हो सके तो गड्ढे की जमीन की फर्श पक्की बनवा दे और उसकी दीवालें भी पक्की रहें और यदि पक्की न कर सकें तो जमीन को कूट-काट कर कड़ी कर देवे और दीवालों को चिकनी मिट्टी से लेपकर पक्की के समान कर देवे और गड्ढे के चारों तरफ ऊँची मेंड़ें बना देवे जिससे बरसात का पानी बहकर उसमें न आ सके। गड्ढे के ऊपर छप्पर रखना चाहिए जिससे सूर्यके तापसे खादका अंश गैस बनकर उड़ न जावे और गर्मी के दिन में खादपर थोड़ा-थोड़ा पानी छिड़कते रहना चाहिए। प्रतिदिन पुआल आदि पशुशाला में बिछा देना चाहिए और दूसरे दिन उसे उठाकर उसी गड्ढे में डाल देना चाहिए। जब गड्ढा भर जाय तो उसमें पत्ती और मिट्टी डालकर मुँह बन्द कर देवे। हर तीसरे महीने उस खाद को नीचे से ऊपर पलट देवे ताकि वह अच्छी तरह से सड़ जावे। अन्त में जब खाद खेत में डालने के लिये निकालै तो उसमें जो भाग गले न हों उसे निकाल कर नये गड्ढे में डाल देना चाहिए।

खाद फसल बोने से पहले ही खेत में छोड़ देना चाहिए। ऐसा करने से वह खेत में मिल जाता है और उसके सब अंश घुलनशील हो जाते हैं। कच्ची खाद देने से खेत में दीमक लगते हैं। परन्तु पक्की खाद से (१) खेत की ऊपरी शक्ति बढ़ जाती है, (२) भूमि में जलधारण की शक्ति बढ़ती है, (३) मटियार-भूमि खाद पाने से भुरभुरी हो जाती है, (४) हल चलाने में खिंचाव कम हो जाता है, (५) भूमि का रङ्ग कुछ बदलकर काला हो जाता है, जिससे खेत की गर्मी धारण करने की शक्ति बढ़ती है, (६) खाली स्थानों की संख्या बढ़ती है। इससे वायु का प्रवेश भी अधिक होता है। (७) भूमि में लाभदायक कीटाणुओं की वृद्धि होती है। भूमि में कोमलता और नमी की मात्रा बढ़ जाती है। इससे मिट्टी में जड़ें अच्छी तरह फैलती हैं और पौधा स्वस्थ रहता है तथा खेत की पैदावार अच्छी होती है।

खेते पाँसा जो न किसाना।
उसके घरे दरिद्र समाना ॥ २ ॥

भावार्थ—(इसके विपरीत) जो किसान अपने खेतों में खाद नहीं डालता और अपने खेतों को खाद से पाट नहीं देता मानों उसके घर में दरिद्र घुस जाता है ॥ २ ॥

गोबर चोकर चँकवर रूसा।
इनका छोड़े होय न भूसा ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो किसान अपने खेतों में गोबर, चोकर, चँकवर और अरूसा के पत्ते छोड़ता है उसकी खेती में अन्न को कौन कहे भूसा भी नहीं होता ॥३॥

गोबर मैला नीम की खली।
इनसे खेती दूनी फली ॥ ४ ॥

भावार्थ—जो अपने खेत में गोबर, मैला या विष्टादिक मल और नीम की खली छोड़ता है उसकी खेती दूनी फलती है अर्थात् अच्छी पैदावार होती है ॥४॥

गोबर मैला पाती सड़ै।
तब खेती में दाना पड़ै ॥ ५ ॥

भावार्थ—जब खेतों में गोबर, मैला और पत्तियाँ सड़ती हैं तब उस किसान की खेती में अधिक अन्न उत्पन्न होता है साथ ही पुष्ट दाने पड़ते हैं ॥५॥

जेकरे खेत पड़ा नहिं गोबर।
उस किसान को जानो दूबर ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिस किसान के खेत में गोबर की खाद नहीं पड़ी उसे दूबर (कमजोर, दरिद्र) हुआ समझो ॥ ६ ॥

प्रश्नः—

(१) खाद की आवश्यकता क्या है और इससे क्या लाभ होता है?
(२) गोबर क्या है? इसको किस प्रकार खाद में प्रयोग करते हैं?
(३) खाद बनाने के क्या नियम हैं?
(४) गड्ढे की रीति से बनाई गई खाद क्यों उत्तम है?

——:*:——

पानी के प्रयोग

अर्थात्—खेतों की सिंचाई

काले फूल न पाया पानी।
धान मरा अधबीच जवानी ॥ १ ॥

भावार्थ—धान में फूल लगते ही यदि वह पानी न पावे और काला हो जावे तो उसे यथा शीघ्र पानी देने की व्यवस्था करे अन्यथा वह अपनी जवानी के आधे अंश में पहुँचते ही मर जायगा ॥ १ ॥

चेना जी का लेना, सोलह पानी देना।
बीस बीस के बच्छा हारे, हारे बलम-नगीना ॥

हाथ में रोटी बगल में पैना।
एक बार बहे पुरवाई, लेना है देना ॥ २ ॥

शब्दार्थ—चेना = एक अन्न का नाम। बच्छा = बछड़ा, नये बैल। बलम-नगीना = नौजवान पति। पैना = बैलों को हाँकनेवाला बाँस का डंडा। पुरवाई = हवा, वायु।

भावार्थ—चेना नामक अन्न प्राण को ले लेने वाला है, जिसमें मिलना-जुलना कुछ नहीं अर्थात् जिसके बोने से कुछ भी लाभ नहीं होता। कारण, इसमें पानी बहुत देना होता है। कृषकों के आचार्य घाघ कवि के शब्दों में चेना बोने वाले किसान की स्त्री उसके कष्टों को किस प्रकार व्यक्त करती हुई कहती है—'यह चेना नहीं प्राण का लेना है कि जिसमें सोलह पानी दिये जाते हैं और पानी के देने में मेरे बीस-बीस मुट्ठी के बछड़े (नवीन) बैल और अँगूठी के नगीने के समान खूब-सूरत मेरा नौजवान पति हार गया। इस 'चेना' के पीछे तो मेरा पति एक हाथ में रोटी लिए दूसरे हाथ से तोड़कर खाते हुए, बगल में बाँस का डंडा दबाए हल बैलों के पीछे चलता ही रहता है। उस पर भी यह भय लगी ही रहती है कि यदि कहीं पुरवैया ने एक बार भी कृपा की तो यह देना-लेना सबकुछ चौपट हो जायगा ॥ २ ॥

तरकारी है तर-कारी। यामे पानी की अधिकारी ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—तरकारी = शाक-भाजी। तर-कारी = तर करने योग्य।

भावार्थ—शाक भाजी सर्वदा तर रखने की चीज है। इसको पानी से तर करते रहना चाहिए ॥ ३ ॥

साठी होवे साठ दिना।
जब पानी बरसे रात दिना ॥ ४ ॥

भावार्थ—जब पानी रात दिन बरसता रहे, तब साठी धान केवल साठ दिन में ही तैयार हो जाता है ॥ ४ ॥

साठी होई साठे दिन।
जब पानी पावे आठे दिन ॥ ५ ॥

शब्दार्थ—साठी = धान। साठे = साठवें। आठे = आठवें।

भावार्थ—साठी धान को यदि आठवें दिन भी पानी मिलता रहे तो भी वह साठवें दिन तैयार हो जाता है ॥ ५ ॥

पाठान्तर—'साठे के, स्थान में 'साढवें' से और 'आठे' के स्थान में 'आठवें' से भी पद्य-रचना में अतुकान्त दोष प्रत्यक्ष होता हैं; अस्तु साठे और आठे ही उसका समाधान है।

सभी किसान हेठी। अगहनियाँ पानी जेठी ॥ ६ ॥

भावार्थ—खेती में सिंचाई की प्रधानता को देखते हुए उसे अगहन का पानी पाना सर्वश्रेष्ट है। इसके आगे किसान की सारी योग्यता न्यून है ॥ ६ ॥

घाघ की कृषि सम्बन्धी अन्य कहावतें

अगहन बवा कहूं मन कहूं सवा ॥ १ ॥

भावार्थ—अगहन की बोअनी से कहीं एक मन और कहीं सवामन प्रति बीघा की उपज होती है। अधिक नहीं ॥ १ ॥

अगहन में ना दी थी कोर।
तेरे बैल क्या ले गये चोर ॥ २ ॥

शब्दार्थ—कोर=कोड़ना, कोड़ाई या जोताई* ।

भावार्थ—अगहन के महीने में खेतों की कुड़ाई या जोताई होना बड़ा आवश्यक है। कवि कहता है कि ऐ किसान ! क्या तेरे बैल चोर चुरा ले गये थे जो खेतों को अगहन में नहीं जोता था ? ॥ २ ॥

अगहन में सरवा भर, फिर करवा भर ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—सरवा भर=तालाब का एक चुल्लू भर या कटोरा भर। करवा भर=एक घड़ा भर।

---

*जोताई।

यह भूमि की वह स्थिति है कि जो फसल को खेत की भूमि में बढ़ने में सहायता प्रदान करती है। खेत में हल चलाकर ऐसी जोताई करे कि वह घास-पात से सर्वथा ही रहित हो जावे और नमी का भी रक्षण हो तथा मिट्टी के ढ़ेले बड़े-बड़े न रहकर कण के रूप में बारीक और भुरभुरी मिट्टी बन जावे, क्योंकि यह भुरभुरी मिट्टी ही जड़ों को नीचे फैलाने में सहायक होती है तथा खेत की नमी ही पौधों की रक्षा के साथ उनके कीटाणुओं का भी सृजन करती है इसके साथ ही खेत को हवा और गर्मी भी उचित रूप की जोताई से ही प्राप्त होती है कि जिसमें उसमें अन्न उपजाने की शक्ति आती है। यदि खेत अच्छी तरह जोते न जायँ तो फसल कहाँ से पैदा होगी ? भूमि के जोतने से (१) एक लाभ तो यह होता है कि इससे भूमि के ढ़ेलों या कणों के मध्य की दूरी बढ़ जाती है जिससे भूमि में हवा का संचार होता है जो खेत के पौधों और कीटाणुओं के लिए सर्वथा ही लाभप्रद है।

(२) जोताई में खेत की भूमि में जलधारण और अवरोधन (उसके रोकने की) शक्ति प्राप्त होती तथा ताप-क्रम का संचार भी सरल हो जाता है।

(३) खेत के कण या ढ़ेले बारीक हो जाते हैं और घास-पात भी दब-दबाकर खाद का काम देती हैं। मिट्टी उलट-पलटकर सूखती और नम होती तथा इस प्रकार उत्पादन शक्ति को धारणकर उसके योग्य पक जाती है। पृथ्वी में जो फसल के लिए हानिकर कीड़े या अंडे इत्यादि रहते हैं वे भी जोताई होने पर ढ़ेलों के साथ ऊपर आ जाते हैं और इस प्रकार पक्षियों और चीटियों के ग्रास बनकर नष्ट हो जाते हैं। फिर जो कुछ कूड़े-करकट रहते हैं भूमि के अन्दर दबकर खाद बनकर खेत को लाभ पहुँचाते हैं।

भावार्थ—(यहाँ फसल की सिचाई के लिए कवि कहता है)—अगहन में तालाब का एक कटोरा पानी काफी होता है। अथवा कठौते या बाँस की बेड़ियों और काठ के हथवाहों द्वारा जो खेत सींचे जाते हैं—ऐसी क्रिया द्वारा फसलों को सींचो। फिर चाहे घड़े भरकर ही सींचो तो फसल तैयार हो जायगी। इसका यह दूसरा अर्थ भी होता है कि जब तालाब का पानी सूख जावे तब कुओं के द्वारा कूड़ों और मोटों से खेतों की सिंचाई करे ॥ ३ ॥

अगहन बरसे हून, पूस दून।
माघ सवाई, फागुन मूर गवाँई ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—हून = पर्याप्त, काफी। दून = दूनी। मूर = बीज।

भावार्थ—अगहन में वर्षा हो जावे तो फसल में पर्याप्त (काफी) वृद्धि होती है। पूस में वर्षा हो तो दूनी, माघ में वर्षा होने से सवाई पैदावार होती है, परन्तु वही वर्षा यदि फाल्गुन में होवे तो जानो कि मूलधन बीज भी चला जाता है ॥ ४ ॥

अनाई बोवाई। सवाई लवाई ॥ ५ ॥

भावार्थ—आगे की बोवनी सवाया लाभ देती है अर्थात् समय पर जो जितना ही आगे बोता है वह उतना ही सवाया अन्न काटता है ॥ ५ ॥

अब्बर खेती जो जुट्ठो खाय।
सड़े बहुत तो बहुत मोटाय ॥ ६ ॥

शब्दार्थ—जो = यदि। अब्बर = कमजोर। जुट्ठी = नील, खाद।

भावार्थ—यदि कमज़ोर खेत में बीज बोया जाय और खाद डाली जाय तो वह उपजाऊ हो जाता है ॥ ६ ॥

अदरा में जो बोवै साठी।
दुःखै मार निकारै लाठी ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो आर्द्रा में साठी धान बो देवे तो दरिद्रता को डण्डे मारकर भगा देवे ॥ ७ ॥

आगे की खेती आगे आगे।
पीछे की खेती भागे जागे ॥ ८ ॥

जो खेती का कार्य सबके आगे-आगे करता है तो उसकी खेती की उपज भी सबसे आगे ही तैयार हो जाती है और पीछे की खेती तो भाग्य जागेगी तब तैयार होगी या नहीं इसको कौन जाने ? ॥ ८ ॥

आकर कोदो, नीम जवा। गाड़र गेहूँ बेर चना ॥ ९ ॥

शब्दार्थ—आकर=मदार। गाडर=एक घास।

भावार्थ—जिस साल मदार खूब फूले और फले तथा उसकी वृद्धि हो तो समझो कि उस वर्ष कोदो का फसल अच्छी होगी और जब नीम फूले-फले तब जानों कि जौ अच्छा होगा। जब गाड़र नामक घास की अधिकता हो तो गेहूँ अच्छा हो और बेर की फसल अच्छी हो तब समझना चाहिए इस वर्ष चना अच्छा होगा ॥ ९ ॥

आये मेष हरि न देख ॥ १० ॥

भावार्थ—मेष की संक्रान्ति तक खेतों में हरियाली नहीं दिखाई पड़ती अर्थात् तब तक सारी फसलें सूखकर कट जाती हैं ॥ १० ॥

आस-पास रबी[1], बीच में खरीफ[2]।
नोंच मिर्च डालकर खा गया हरीफ ॥ ११ ॥

शब्दार्थ—रवी=गेहूँ की फसल। खरीफ=धान की फसल। हरीफ=एक कीड़ा, धातक प्रभाव।

भावार्थ—खरीफ की फसल वहाँ बोओ जहाँ आस-पास रबी की फसल के खेत (पलिहर) न हों; अन्यथा उस पर घातक प्रभाव पड़ेगा। पलिहर में लोग अपनी गायें और भैंस चराने को लावेंगे वही उसे नमक मिर्च के रूप में लेकर हड़प कर जायँगीं अर्थात् चर जायँगी ॥ ११ ॥

रबी ओर खरीफ के खेत

खरीफ की फसल बरसात पर पूर्णतः निर्भर है। पौधों की जड़ में पानी तो जरूरी है, पर बरसाती फसल के लिये ऊपर से पानी पड़ना भी आवश्यक है। इसके (खरीफ के) पौदों के सीमों में पानी पड़ना चाहिए। ऊपर से मी सिंचाई जरूरी है। इसीलिये ज्वार, बाजरा, मक्का, सनई इत्यादि बरसाती चीजों के लिये रोज थोड़ा-थोड़ा पानी चाहिए। चार दिन तो दूर की चीज है। दो दिन भी

यदि सख्त धूप निकल आये तो पौदे मुरझाये हुए प्रतीत होंगे। फिर पानी पड़ते ही हरे-भरे दिखलाई देते हैं।

कुछ फसलें तो ऐसी हैं जिनके लिये रात-दिन पानी चाहिये, पर थोड़ा। एक बात और है—अधिक पानी पड़ने से बरसाती फसलें पीली पड़ जाती हैं और उनका विकास रुक जाता है। इसलिये प्यास लगते ही पानी की आवश्यकता पड़ती है।

खरीफ की फसल में साँवाँ सबसे पहले छींटा जाता है। इसके लिये जमीन का गर्म रहना जरूरी है। जमीन ठण्डी हो जानेपर इसकी जमावट रुक जाती है। साठी है इसी की बहन, पर उसके साथ गर्मी-सर्दी का बन्धन नहीं है। इन दोनों फसलों को प्रायः रोज ही जल की जरूरत है। इसके दाने पानी से पकते हैं। जैसा कहा है—

साँवाँ साठी साठ दिना। जब देवा बरसें रात दिना॥

एक बात और है—साँवाँ के दाने मेह में हतो पड़े रहते हैं और जल्दी खराब नहीं होते।

२ खरीफ के लिये खेत--जहाँ पानी ठहरता है, जहाँ के खेत समतल हैं, बहाव कम है, नदी-नाले का किनारा नहीं है। वहाँ खरीफ़ की फ़सल कम होती है। खेत में पानी भर जाने के बाद फिर खरीफ़ की फ़सल की आशा छोड़ देनी चाहिए। साथ ही कुछ फसलें तो ऐसी हैं कि उनके लिये बलुई ज़मीन होना नितान्त आवश्यक है। मोथी (मोठ) को ले लीजिए। इसके लिये रेतीली भूमि चाहिए और ज्यों ही रबी की फसल कट जावे त्यों ही खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से उसे जोत देना चाहिए।

उसके बाद गर्मी के दिनों में दो-एक बार फिर मिट्टी पलटने वाले हल से जोत-कर उसी हालत में छोड़ देते हैं और यदि रबी कटने के बाद उस खेत में नमी न हो तो सिंचाई करके तब जुताई करते हैं कि जिससे नमी होने पर किसान देशी हल से खेत को जोतकर बीज बो देते हैं।

१ रबी के लिये खेत=इसी तरह जब खरीफ की फसल तैयार हो जावे जैसे मटर कट गई तो खेत को फौरन ही जोतवा देवे तो उसमें धान या मक्का अच्छा होता है। अथवा हरी खाद वाले खेतों में या (२) परती छोड़े हुए खेतों में जैसे पलिहर में गेहूँ बोया जाता है।

जुताई के बाद खेत को पाटे या हेंगा से खूब रगड़ कर मिट्टी भुरभुरी बना देवे। फिर गोबर की खाद छोड़कर ४५ बार खेत की खूब जुताई कर देवे और प्रत्येक जुताई के बाद पाटा देता ही जावे।

हरी खाद वाला वह खेत है जिसमें सनई या नील बो कर उसके सहित खेत को जोत दिया जाता है। यदि फसल (सनई या नील) को सींचने के लिये खेत में पर्याप्त नमी नहीं है तो उसे पानी से सींच देवे, क्योंकि खाद अच्छी तरह न सड़ने से खेत में दीमक लगने का भय रहता है। इस प्रकार उसे जोतकर हेंगा या पटड़े से उसकी मिट्टी को बराबर कर देते हैं और दो-तीन बार जोत कर पाटा देकर खेतों को रबी के लिये बना ले। ऐसे ही परती छोड़े हुए खेत को जिसे पलिहर कहते हैं और जिसमें मुख्य करके गेहूँ बोना है उसको बराबर जोतता रहे और उसके ढेले पहले खूब धूप और फिर बरसात का काफी जल खाकर तैयार होते रहें और जब-जब अवसर मिले उसे उलटता-पलटता रहे। जब बरसात समाप्त हो जावे तब पाँच-सात बार उसे जोते और मिट्टी को बराबर पटड़ा देकर भुरभुरी करता रहे और इस प्रकार उस खेत को इतना अच्छा हल्का-फुलका और मिट्टी को इतना कोमल और दिव्य चमकीला बना देवे कि यदि खड़े होकर जल का भरा घड़ा छोड़ दिया जावे और घड़ा न फूटे तो समझो कि वह खेत गेहूँ बोने के योग्य तैयार हो गया।

अधकचरी विद्या दहे, राजा दहे अचेत।
ओछे कुल तिरिया दहे, दहे कलर का खेत॥ १२॥

भावार्थ—अधूरी विद्या, असावधान राजा; नीच कुल की स्त्री और कपास का खेत नष्ट हो जाता है॥ १२॥

अहिर बरदिया बाम्हन हारी।
गई सावनी और असारी॥ १३॥

शब्दार्थ—बरदिया=बैलवाला हो (पु० बहुबचन)। बाम्हन=ब्राह्मण। हारी=हलवाहा। सावनी=रबी की फसल। असारी=(असाढ़ी) खरीफ का फसल।

भावार्थ—यदि हलवाहा अहीर या ब्राह्मण हो तो जानो रबी और खरीफ की दोनों फसलें नष्ट हो गईं और कुछ भी पैदावार न होगी॥ १३॥

अंवाभोर चलै पुरवाई।
तब जानो बरषा ऋतुआई ॥ १४ ॥

शब्दार्थ—अंबाभोर=अनवरत, लगातार।

भावार्थ—जब लगातार पुरुबा (पूर्वी) हवा चले तब समझो कि अब वर्षा ऋतु आ गई है ॥ १४ ॥

असाढ़ जोतैं लड़के बारे। सावन भादों में हलवाहे ॥
कुआर में जोतै किसान का बेटा। तब ऊंचे हौं होनेहारे ॥ १५ ॥

भावार्थ—असाढ़ में तो लड़के भी हलवाही करके खेत जोत लेते अर्थात् किसानी को सम्हाल लेते हैं; परन्तु सावन में तो पूरा जवान हलवाहा ही सँभाल सकता है। परन्तु क्वार में तो कोई होनहार किसान का बेटा ही खेतों को जोतता है कि जिसे ऊँचा बनने की इच्छा होती है ॥ १५ ॥

ओझा कमिया बैद किसान।
आंडू बैल औ खेत मसान ॥ १६ ॥

शब्दार्थ—कमिया=मजदूर या हलवाहा। आँडू=अंडू बिना वधिया किया हुआ। मशान—श्मशान।

भावार्थ—यदि मजदूर या हलवाहा ओझा हो जावे और किसान वैद्य हो जावे तथा जिसका बैल विना बधिया किया अंडू हो तो जानो कि उस किसान का खेत श्मशान हो गया ॥ १६ ॥

ईख तिस्सा। गेहूँ विस्सा ॥ १७ ॥

भावार्थ—ईख तीस गुना और गेहूँ बीस गुना पैदा होना चाहिए ॥ १७ ॥

ईख तक खेती, हाथी तक बनिज ॥ १८ ॥

भावार्थ—ईख से बढ़कर खेती नहीं और हाथी से बढ़कर श्रेष्ठ कोई व्योपार नहीं होता ॥ १८ ॥

उत्तम खेती मध्यम बान।
निराघिन सेवा भीख निदान ॥ १९ ॥

प्रत्येक कार्यों में खेती का कार्य सबसे उत्तम है। व्यापार का कार्य मध्यम है और सेवा अर्थात् नौकरी करना घृणित तथा भीख माँगना सबसे अन्तिम निन्दनीय कर्म है ॥ १६ ॥

पाठान्तर—निषिद्ध का 'निरधिन' और चाकरी का 'सेवा' अभ्यस्त होने से उपर्युक्त जान पड़ता है।

उत्तम खेती आप सेती। मध्यम खेती भाई सेती।
निकृष्ट खेती नौकर सेती। बिगड़ गई बलाय सेती॥ २०॥

भावार्थ—अपने हाथ से की हुई खेती उत्तम है और जो भाई से करावे तो मध्यम और नौकर से उसका सेवन करावे तो निकृष्ट कही जाती है; क्योंकि यदि बिगड़ गई तो नौकर की बला से; उसे इसकी चिन्ता ही क्या है ?॥ २०॥

उत्तम खेती जो हर गहा।
मध्यम खेती जो संग रहा॥ २१॥

भावार्थ—खेती तो उसकी उत्तम होती है जो स्वयं अपने हाथ से अपने खेत में हल चलाता है और मध्यम खेती उसकी होगी कि जो हलवाहे के साथ रहकर खेती कराता है॥ २१॥

उलटा बादर जो चढ़े, विधवा खड़ी नहाय।
घाघ कहै सुन भड्डरी, वह बरसे वह जाय॥ २२॥

भावार्थ—कृषि के आचार्य घाघ कवि कहते हैं—हे भड्डरी! सुन, जब बादल हवा के विपरित उलटे चढ़े और विधवा स्त्री खड़ी होकर नग्न स्नान करे तब निश्चित है कि वह (बादल) तो बरसेगा। और विधवा किसीके साथ निकल जायगी॥ २२॥

उड़द मोठ क खेती करिहौ।
कुंडा तो ऊसर में धरिहौ॥ २३॥

भावार्थ—यदि उड़द और मोठ की खेती करोगे तो मिट्टी का कुंडा तोड़कर ऊसर में रख आओगे अर्थात् अन्न से घर भर जायगा॥ २३॥

पाठान्तर—उर्द का उड़द और मोथी का मोठ ही उपयुक्त है।

उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़े।
बरखा होइ भूइँ जल बढ़ै॥ २४॥

भावार्थ—जब गिरगिट उलटा होकर ऊपर की ओर चढ़ने लगे,, (ऐसा

जब देखो) तब समझो कि घनघोर वर्षा होगी और पृथ्वी पर जल बढ़ेगा अर्थात् बाढ़ आवेगी ॥ २४ ॥

उठके बजरा यो हँस बोले।
खाये बूढ़ जुवा होइ जाय ॥ २५ ॥

भावार्थ—बाजरा हँसकर यों कहता है कि उसे खानेवाला यदि बुड्ढा भी हो तो वह जवान हो जायगा ॥ २५ ॥

ऊत्तर मलके करे दक्खिन निशान।
कह दो अहिरा से ऊपर करै बधान ॥ २६ ॥

भावार्थ—उत्तर में बादल मलकर दक्षिण दिशा में यदि बिजली चमके तो अहीर से कह दो कि अपनी गायों को ओसारे में बाँधे क्योंकि पानी खूब बरसेगा ॥ २६ ॥

ऊख कन्नई काहे से।
स्वातीक पानी पाये से ॥ २७ ॥.

ऊख कन्नी क्यों हो गई ? स्वाती का पानी पड़ गया ॥ २७ ॥

ऊख करै सब कोई। जो बीच में जेठ न होई ॥ २८ ॥

भावार्थ—ऊख की खेती तो सभी लोग कर लें, यदि उसके बीचमें जेठ की तपन कष्टदायक न हो ॥ २८ ॥

ऊख सरबती दिवला धान।
इन्हें छाँड़ि जनि बोओ आन ॥ २९ ॥

भावार्थ—कवि कहता है कि ऊख में सरौती ऊख और धान में दिवला नामक धान को छोड़कर दूसरा न बोओ अर्थात् इनमें पैदावार अच्छी होती है ॥ २९ ॥

ऊँचे चढ़िके बोला मँडुवा। सब नाजों का मैं हूँ भँडुवा।
आठ दिना जो मुझको खाय। भले मर्द से उठा न जाय ॥३०॥

भावार्थ—सब अन्नों में 'मड़ुवा' नाम का अन्न बड़ा हानिकारक है। उसका कहना है कि वह 'भँडुवा' है॥ वह कहता है कि उसे यदि कोई भला चंगा जवान भी आठ दिन तक खा लेवे तो उससे उठते-बैठते न बने अर्थात्

वह इतना वायुकारक है कि उसे निर्बलता आ जायगी और गठिया पकड़ लेगी ॥ ३० ॥

एक मास ऋतु आगे धावै।
आधा जेठ असाढ़ कहावै ॥ ३१ ॥

भावार्थ—मौसम का प्रभाव एक महीना पहले ही से ज्ञात होता है। आधे जेठ से ही असाढ़ कहलाता है ॥ ३१ ॥

एक हर हत्या दो हर काज।
तीन हर खेती चार हर राज ॥ ३२ ॥

एक हल की खेती हत्या है, दो हर की खेती कुछ काम की होती है और तीन हरकी खेती खेती करने योग्य होती है तथा चार हरकी खेती राज्य के समान है ॥ ३२ ॥

एक मास दो गहना।
राजा मरै कि सहना ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ—गहना = ग्रहण। सहना = प्रजा का प्रधान व्यक्ति।

भावार्थ—यदि एक ही मास में दो ग्रहण लगें तो या तो राजा मरे या प्रजा का ही कोई प्रधान व्यक्ति मर जावे ॥ ३३ ॥

कहा होय बहु बाहें।
जोता जाय न थाहें ॥ ३४ ॥

यदि गहराई की एक थाह लगाकर अर्थात् गहिरा न जोता जाय तो ऊपर ही ऊपर कई बार जोतने से क्या लाभ होगा? ॥ ३४ ॥

कातिक मास रात हल जोतौ।
टाँग पसारे घर मत सूतौ ॥ ३५ ॥

भावार्थ—जब कार्तिक का महीना आवे तब किसान को उचित है कि वह रात में हल जोते और घरपर टाँग फैलाकर सोता न रहे ॥ ३५ ॥

कीकर पाथा सिरस हल, हरियाने[1] का बैल।
लोधा डाल लगाय के, घर बैठा चौपड़ खेल ॥ ३६ ॥

जिस किसान के पास सिरस (शीशम) का हल, बबूल का जाँघा, पाथा (फल के ऊपर की लकड़ी जिसे पाटा भी कहते हैं) और हरियाने का बैल हो तथा जिसके लोध का वृक्ष या बबूल का वृक्ष लगा हो; उसका कहना ही क्या है ? वह घर बैठे ही चौपड़ क्यों न खेलता रहे, उसकी खेती का काम मजे में होता रहेगा ॥ ३६ ॥

१—**हरियाने का बैल**—इस जाति के बैल पंजाब के रोहतक, हिसार, कर्नाल और गुरगाँव जिलों में पाये जाते हैं। इस जाति के बैल जुताई में तो मजबूत और तेज पड़ते ही हैं, साथ ही बोझा ढोने में भी बड़े बलवान होते हैं। इन बैलों का मुँह, गर्दन, डील और आगे का भाग गाढ़ा भूरा होता है। चेहरा लम्बा और पतला होता है। माथा चौड़ा उभड़ा हुआ, आँखें बड़ी-बड़ी और निकली हुई होती हैं। सींगें छोटी, ऊपर को सीधी निकली हुई और अन्दर मुड़ी हुई होती हैं। कान छोटे और नुकीले होते हैं। शरीर लम्बा, गर्दन छोटी और डील छोटा होता है। चमड़ा सफेद बहुत कोमल और शरीर से सटा रहता है। दुम सुन्दर कोड़े की तरह, लम्बी और पूँछ के अन्तिम भाग पर काले बालों का गुच्छा होता है।

कोठिला बैठी बोली जई। आधे अगहन काहे न बई ॥
जो कहुँ बोते बिगहा चार। तो मैं डरतिउँ कोठिला फार ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ—जई=जौ। बई=बीज बोना, बोआई। कोठिला=अन्न का बखार। मिट्टी का डेहरा।

भावार्थ—मिट्टी के बने हुए डेहरे या बखार पर बैठकर जौ किसान से कहता है—मुझे आधे अगहन में क्यों नहीं बोया ? यदि कहीं चार बीघा मुझे बो दिया होता तो तुम्हारा यह बखार फाड़ देता अर्थात् अन्न से घर भर देता ॥ ३७ ॥

कच्चा खेत न जोतै कोई।
नाहीं बीज न अँकुरै होइ ॥ ३८ ॥

भावार्थ—गीला खेत कोई न जोतो नहीं तो बीज से अँखुआ भी नहीं निकलेगा ॥ ३८ ॥

कपास चुनाई। खेत खनाई ॥ ३९ ॥

भावार्थ—कपास की चुनाई और खेत खनाई (कोड़ाई) ही प्रधान है ॥३९॥

कर्महीन खेती करै, बैल मरै कि सूखा परै ॥ ४० ॥

जब कोई भाग्यहीन मनुष्य खेती करने लगता है, तब या तो बैल मरने लगते हैं या सूखा ही पड़ जाता है ॥ ४० ॥

कामिनि गरभ औ खेती पकी।
ये दोनों हैं दुर्बल बदी ॥ ४१ ॥

गर्भवती स्त्री और पक्की खेती ये दोनों ही कमजोर हैं ॥ ४१ ॥

कुम्भे आवै मीने जाय।
पेड़ी लागै पालौ खाय ॥ ४२ ॥

कुम्भ की संक्रान्ति से गेहूँ में गेरुई रोग लगता है जो मीन की संक्रान्ति तक निवृत हो जाता है। यह रोग गेहूँ की जड़ से लगता है और पल्लव तक खा लेता है अर्थात् गेहूँ के लिए यह 'गेरुई' नामक रोग बड़ा ही खराब है ॥ ४२ ॥

काँसी कूसी चौथक धान।
अब का रोपौ धान किसान ॥ ४३ ॥

काँस—कुश भी तो फूल गये और भादों शुक्ल पक्ष की चौथ का चन्द्रमा भी आ गया, यदि अब तक धान (जड़हन) नहीं रोपा, बैठाया गया तो अब क्या बैठाते हो ? ॥ ४३ ॥

कातिक बोवै अगहन भरै।
ताको हाकिम फिर का करै ॥ ४४ ॥

जो कार्तिक में फसल रबी की ठीक समय से बोवे और अगहन में उसे पानी से भरे अर्थात् सींचे या सिचाई कर देवे। फिर सरकार के अफसर या हाकिम उसका क्या कर सकते हैं ? उसकी मालगुजारी (भूमिकर) नहीं रुक सकती ॥४४॥

खाँन के काटै घन के मोराये।
जब बरदा के दाम सुलाये ॥ ४५ ॥

ऊख को जब खूब खनकर अर्थात् जड़ से काट कर कोल्हू में भलीभाँति पेर कर लाभ उठाओगे तभी बैलों का परिश्रम सफल होगा ॥ ४५ ॥

खेती वह जो खड़ा रखावै।
सूनी खेती हरिना खावै ॥ ४६ ॥

खेती वही है जो खड़े-खड़े अर्थात् खूब सचेत होकर रखायी जाती है। सूनो खेती को हिरन आदिक पशु चर जाते हैं ॥ ४६ ॥

खेती करै अधिया, न बैल न बधिया ॥ ४७ ॥

यदि बैल-बधिया न हों तो अधिया पर भी खेती करना बुरा नहीं है ॥ ४७ ॥

खेती तो थोरी करे, मिहनत करे सिवाय।
राम कहैं वहि मनुष को, टोटा कबौं न आय ॥ ४८ ॥

खेती करने के लिए खेत भले ही थोड़े हों; यदि उसमें परिश्रम अधिक किया जाय तो राम की कृपा से उस मनुष्य को कोई कमी नहीं रहती ॥ ४८ ॥

खेती तो उनकी जो करे अहान-अहान।
औ उनकी क्या खेती, जो देखें साँझ-बिहान ॥ ४९ ॥

शब्दार्थ—अहान-अहान = देख-भाल।

भावार्थ—खेती तो उनकी अच्छी होती है जो हर समय उसकी देख-भाल करते रहते हैं। और जो साँझ-सबेरे ही देखेंगे उनकी खेती क्या अच्छी होगी ॥४६॥

खेती करै साँझ घर सोवै।
काटै चोर हाथ धरि रोवै ॥ ५० ॥

जो खेती करके सन्ध्या होते ही घर में जाकर सो रहता है और रात भर पड़ा रहता है उसकी देख-भाल नहीं करता, उसकी फसल को चोर काट ले जाते हैं, फिर वह शिर पर हाथ धरकर रोता है ॥ ५० ॥

खेती करै तो अपने बहै।
ना तो जाय कन्हौड़े रहै ॥ ५१ ॥

शब्दार्थ—बहै = बहो, काटो ('बहना' क्रिया सकर्मक)। कन्हौड़े = सिर पर सवार रहना, निगरानी करना।

भावार्थ—खेती करो तो स्वयं ही उसे काटो या लगे रहो और नहीं तो काटते समय (कटिया, लौनी के समय) मजदूरों के सिर पर डटे रहो ॥ ५१ ॥

गेहूं बाहा, धान गाहा। ऊँख गोड़ाई से है आहा ॥ ५२ ॥

शब्दार्थ—बाहा = जोतने की क्रिया, बाँह लगाना। आहा = अच्छा।

भावार्थ—गेहूँ कई बार की जोताई के बाहों से और ऊख कई बार के गोड़ने (गोड़ाई से) अच्छी होती है ॥ ५२ ॥

गहिर न जोतै बोवै धान ।
सो घर कोठिला भरै किसान ॥ ५३ ॥

धान बोने के लिए गहरी जोताई नहीं होनी चाहिए । जो हल्की जोताई करके धान बोता हैं वह किसान धान सें अपना घर भर देता है ॥ ५३ ॥

गेहूं भवा काहें । असाढ़ के दुइ बाहें ।
गेहूं भवा काहें । सोलह बाहें नौ गाहें ॥ ५४ ॥

गेहूं भवा काहें । सोलह दाहें बाहें ।
गेहूं भवा काहें । कातिक के चौबाहें ॥ ५५ ॥

शब्दार्थ—बाहें=कई बार के जोतने से । गाहें=हेंगा से हेंगाने या पाटा देने से । चौबाहें=चार बार जोतने से । दायें=खड़ी जोताई । बाहें=बड़ी जोताई ।

भावार्थ—घाघ कवि का कहना है कि गेहूँ के खेत को असाढ़ में दो बार अवश्य जोते और कुल सोलह बार तो जोताई करे और नौ बार हेंगाई करे अर्थात् पटरा से खेत की मिट्टी के कणों को बराबर करे । इसप्रकार खड़िया और बेंड़िया सोलह बाँह तो अवश्य ही करे । इसके अतिरिक्त कार्तिक में जब गेहूँ बोता हो तब चार बाँह और करे । इतनी जोताई और हेंगाई करके जो किसान गेहूँ बोता है उसकी पैदावार अच्छी होती है ॥ ५४-५५ ॥

गेहूं बाहें धान बिदाहें ॥ ५६ ॥

गेहूँ की पैदावार, उसकी जोताई अर्थात् जैसा ऊपर कहा गया है कि हल द्वारा बारम्बार खेत का बाँह लगाने पर ही होती है; जिसमें सोलह बार तक की जोताई और नौ बार पाटा चलाई की विधि क्रिया की जाती है । इसी प्रकार धान बोया गया, वह जमा (उगा) भी और कुछ दो-चार-छः इंच का पौधा भी हो गया; परन्तु उसकी बिदहनी (पाटा देने की क्रिया) न की जाय तो फसल अच्छी नहीं हो सकती । कहा जाता है कि धान की बिदहनी कर देने से उसकी बालें बड़ी-बड़ी होती हैं और हरतरह से वह तभी अच्छा होता है जब पानी से भरे हुए धान के उस

खेत को एक-एक या दो-दो बालिश्त की दूरी पर बहुत हल्के तरीके से ऊपर ही ऊपर जोतकर लकड़ी के हल्के पट्ठे से (हेंगा से) खेत को ४-६ बार हेंगा दिया जाय। इससे धान के पौधों का हरतरह से विकास तो होता ही है, साथ ही उन्हें (पौधों को) हानि पहुँचानेवाले सँवई, मकरा, मोथा, नकली धान (डौंरा) आदि पाटा से दबाए जाने पर जोती हुई मिट्टी में दबकर सड़ जाते हैं और फिर नहीं उभड़ते—इस प्रकार बिदहनी से धान की वह निकाई भी हो जाती है। 'कृषि निरावहिं चतुर किसाना' ॥ ५६ ॥

गेहूं बाहे चना दलाये।
धान गाहें मक्की निराये 'ऊख कसाये' ॥ ५७ ॥

गेहूँ बाहों द्वारा अर्थात् बहुत बार की जोताई द्वारा अर्थात् जब उसका खेत पलिहर के रूप में तैयार हो, चना खोटने और पैरों से कांड़ने (दबाये जाने, दल-मल जाने) पर, धान जोतने, पानी भरने पर, मक्का निराने से और ऊख को बोने के पहले उसे रात भर पानी में डुबो रखने से लाभ होता है ॥ ५७ ॥

गेहूं जौ जब पछिवाँ पावै।
तब जल्दी से दायां जावै ॥ ५८ ॥

गेहूँ और जौ जब पछिवाँ हवा पाता है तब शीघ्र दायाँ जाता है ॥ ५८ ॥

गेहू गेरुई गाँधी धान।
बिना अन्न के मरा किसान ॥ ५९ ॥

जब गेहूँ में गेरुई नामक रोग (जिससे गेहूँ के कोमल पौधे पीले पड़ जाते हैं) लग जाता है और धान में खैरा रोग लग जाता है तब समझो कि अन्न के बिना किसान मर जायगा; क्योंकि इन दोनों रोगों के लगने से गेहूँ और धान की दोनों फसलें मारी जाती हैं ॥ ५९ ॥

ठाढ़ी खेता गाभिन गाय।
तब जानें जब मुँह में जाय ॥ ६० ॥

भावार्थ—खड़ी खेती (तैयार फसल) और गाभिन गाय को तब सफल समझें जब (खेती का अन्न और गाय का दूध) मुँह में जावे अर्थात् खाने को मिले ॥६०॥

चना सींच पर जब हो आवै।
ताको पहिले तुरत खोटावै॥ ६१॥

चना जब सींचने योग्य हो जावे तब उसको पहले खोंटवा देवे, फिर भरवावे—इससे चना अच्छा होता है॥ ६१॥

चना अधपका जौ पका काटै[1]।
गेहूं बाली लटका काटै॥ ६२॥

चना अधपका भी कट जावे तो कोई हर्ज नहीं—उसकी यही विधि भी है; परन्तु जौ पकने पर और गेहूँ तो पूर्णतः पककर जब उसकी बालें टेढ़ी-टेढ़ी होकर लटक जायें तब काटो॥ ६२॥

चिरैया में चीरफार।
असरेखा में टार टार।
मघा में काँदो सार॥ ६३॥

चिरैया (चित्रा नक्षत्र) में अगहनी धान का खेत या ताल थोड़ा बहुत जोतकर धान रोप दिये जायें तभी ठीक होता है उसीप्रकार श्लेषा में यदि उसके (खेत के) ढेलों को हटा-बढ़ाकर भी धान लगा दिए जाँय तो काम चल जाता है; परन्तु मघा नक्षत्र के आ जाने पर तो उसकी अच्छी जोताई और सड़ी हुई खाद पतवार डालकर ही जब धानों के पौधे बैठाओगे, तब अच्छा होगा॥ ६३॥

१ कटाई—गेहूँ आदि रबी की फसल को तैयार होने में पाँच-सात महीने लगते हैं। इसकी कटाई अन्तिम मार्च से अप्रैल के मध्य तक होती है। चैत्र, वैसाख।

चना में सरदी बहुत समाई।
ताको जान गधैला खाई॥ ६४॥

जब चना के खेत में सर्दी अधिक समा जाती है, तब जानो कि उसे गधैला नामक कीड़े ही खा जायेंगे और पैदावार न होगी॥ ६४॥

छोटी नसी, धरती हसी।
हर लगा पताल, तो टूट गया काल॥ ६५॥

शब्दार्थ—नसी = हल का फल।

भावार्थ—हल के छोटे फल या फाल (लोहे की फाल) को देखकर भूमि हँसती है कि यह मुझसे क्या पैदा कर लेगा ? परन्तु जब हल धरती की गहराई में लग जा सकता है, तब अकाल एवं दरिद्र का भय नहीं रहता; क्योंकि पैदावार अच्छी होती है ॥ ६५ ॥

जब बरसे तब बाँधो क्यारी।
बड़ा किसान जो हाथ कुदारी ॥ ६६ ॥

जब पानी बरसना आरम्भ हो और खेत बोने के दिन हों तब फौरन ही उसमें मेंड़ बाँधने पहुँच जाओ। सबसे बड़ा किसान वह है जो ऐसे समय में हाथ में कुदाल लिये खेतों पर पहुँच जाता है अथवा जो हाथ में कुदाल लिए रहता है ॥ ६६ ॥

जब सैल खटाखट बाजै।
तब चना खूब ही गाजै ॥ ६७ ॥

चना बोने के लिए खेत की जोताई होते समय जब बैलों के जुआठे की सैल (बाँस की बनी हुई बैलों को रोकनेवाली एक लकड़ी या यंत्र) खटखटाकर बजने लगे अर्थात् खेत में कड़ापन हो क्योंकि चने के लिए नम मिट्टी नहीं चाहिए। तब समझो कि इस खेत में चने की पैदावार अच्छी होगी। इसीलिए चना, धान कटने पर उसी खेत में बोना चाहिए और उस खेत को 'जरी' कहते हैं ॥ ६७ ॥

जेठ में जरै माघ में ठरै।
तब जीभी पर राड़ा परै ॥ ६८ ॥

जो किसान जेठ की जलन और माघ की ठारी (शीत, जाड़ा) को सहन करके ऊख की खेती पूर्णतया निभा लेता है उसी की जबान पर गुड़ के गीले और सूखे रोड़े पड़ते हैं ॥ ६८ ॥

जेतना गहिरा जोतौ खेत, बीज परे फल अच्छा देत ॥ ६९ ॥

खेत को जितना ही गहिरा जोतोगे, बीज पड़ने पर उतना ही अच्छा फलदायक होगा ॥ ६९ ॥

जो जौ चहै तो उत्तरा गहै।
काँच पकै के जोतत रहै ॥ ७० ॥

यदि जौ की पैदावार अच्छी चाहो तो उत्तरा नक्षत्र में खेत को जोत-कर उसे पकाकर फिर ढेलों को रोरी एवं उनके बारीक कण बनाकर तैयार करो और पुनः उसमें जौ बोओ तो अच्छी फसल होगी ॥ ७० ॥

जो तेरे कुनबा घना, तो क्यों न बोये चना ॥ ७१ ॥

यदि तेरा परिवार लंबा है, बाल-बच्चे या अधिक व्यक्ति हैं तो चना क्यों नहीं बोता ? अर्थात् अवश्य बोओ ॥ ७१ ॥

जै दिन भादौं बहै पछार।
तै दिन पूस में पड़े तुसार ॥ ७२ ॥

शब्दार्थ—पछार=पछुवाँ हवा। तुसार=पाला।

भावार्थ—जितने दिन भादों में पछिवाँ हवा चलती है उतने ही दिन पूस में पाला पड़ता है ॥ ७२ ॥

जेकरे ऊखर लगे लोहाई।
तेहिपर आवै बड़ी तबाही ॥ ७३ ॥

शब्दार्थ—ऊखर=ऊख। लोहाई=लाही, सूखा रोग।

भावार्थ—जिसकी ऊख में लाही या सूखा नामक रोग लग जाता है उसपर बड़ी तबाही (विपत्ति) आ जाती है ॥ ७३ ॥

जो कपास को नाहीं गोड़ी।
उसके हाथ न आवै कोडी ॥ ७४ ॥

कपास गोड़ाई चाहती है जो नहीं गोड़ता उसके हाथ में पैसा कौड़ी नहीं आती। तात्पर्य यह कि बिना कोड़े कपास नहीं पैदा होती ॥ ७४ ॥

जो तू भूखा माल का।
तो ईख कर ले नाल का ॥ ७५ ॥

शब्दार्थ—नाल—नारा, नाला, रास्ता या मार्ग (पंजाबी)। माल=धन, दौलत।

भावार्थ—यदि तुझे धन की भूख है तो ईख बोने का रास्ता कर ले अथवा नाले की ओर खेत में ईख बोया करो ॥ ७६ ॥

जोत न मानै अरसी चना।
पोस न मानै हरामी जना ॥ ७६ ॥

शब्दार्थ—अरसी = अलसी या तीसी। पोस = अच्छाई, पालन-पोषण। हरामी = दुष्ट। जना = व्यक्ति विशेष। जोत = जोताई।

भावार्थ—अलसी और जना खेत की जोताई होना वैसे ही अच्छा नहीं समझता कि जैसे दुष्ट व्यक्ति पालन-पोषण, या अच्छाई को नहीं मानते ॥७६॥

जब बर्रं बरौठे आई।
तब रबी की होय बोआई ॥ ७७ ॥

जब बर्रं उड़ती हुई छतों में आने लगें तब जानों कि अब रबी की बोआई आरम्भ कर देनी चाहिये ॥ ७७ ॥

जोंधरी बोवै तोड़ मरोर।
तब वह डारै कोठिला फोर ॥ ७८ ॥

जोंधरी का खेत खूब उलट-पुलटकर जोतना चाहिए। तब वह इतनी अधिक पैदा होगी कि बखार को फोड़ डालेगी अर्थात् रखने की जगह न मिलेगी ॥७८॥

जोतै खेत घास न टूटै।
तेकर भाग साँझ ही फूटै ॥ ७९ ॥

जिस किसान की खेत जोताई में उसकी घास नहीं टूट ज़ाती, समझो उसका भाग्य साँझ ही को फूट गया अर्थात् वह कितना मन्द भाग्य का है ॥ ७९ ॥

जो हर होंगे बरसन हार।
काह करे दक्खिनी बयार ॥ ८० ॥

यदि भगवान् बरसने पर होंगे तो दक्षिणी हवा क्या करेगी ? ॥ (दक्षिणी हवा चलने पर पानी नहीं बरसता। परन्तु ईश्वर सर्वोपरि है) ॥ ८० ॥

जो हल जोतै खेती वाकी।
और नहीं तो जाकी ताकी ॥ ८१ ॥

जो स्वयं ही हल जोतता है उसी की तो खेती अच्छी होती है और नहीं तो जिसकी जैसी है, उसकी वैसे ही रहती है और अच्छी नहीं होती ॥ ८१ ॥

ढेले ऊपर चील जो बोलै।
गली गली में पानी डोलै ॥ ८२ ॥

जब देखो कि कहीं खेत में ढेले के ऊपर बैठी हुई चील्ह बोल रही है तब जानो कि वर्षा अच्छी होगी और पानी गली-गली में घूमता फिरेगा ॥ ८२ ॥

तीन कियारी तेरह गोड़।
तब देखो ऊखी कै पोर ॥ ८३ ॥

तीन बार तो क्यारी बनाकर पानी भरो और तेरह बार गोड़ाई करो। तब ऊख के अच्छे पोर दिखाई पड़ेंगे ॥ ८३ ॥

तीन बैल घर में दो चाकी।
पूरब खेत राज की बाकी ॥ ८४ ॥

घर में तीन बैल, दो चक्कियाँ (बटवारा), पूर्व दिशा में खेतों का होना और राजकीय कर या कर्ज का बकाया—ये चारों बातें किसान के लिये बड़ी घातक हैं ॥ ८४ ॥

तिल कोरैं, उर्द बिलोरैं ॥ ८५ ॥

तिल कोड़ने [और उर्द विलोरने (निकाई करने से) अच्छा होता है ॥ ८५ ॥

तेरह कातिक तीन असाढ़।
जो चूका सो गया बजार ॥ ८६ ॥

कार्तिक में तेरह दिन और असाढ़ में तीन दिन जो किसान चूक गया वह बाजार ही जाता है ॥ (खेती में पैदा न होने से फिर बाजार का ही भरोसा रहता है) ॥ ८६ ॥

थोड़ा जोतै बहुत हेंगावै, ऊँच न बाँधै आड़।
ऊँचे पर खेती करै, पैदा होवै भाड़ ॥ ८७ ॥

जो किसान थोड़ा तो जोतता है, हेंगाता बहुत है और खेतों के किनारे ऊँची मेंड़ नहीं बाँधता और ऊँचाई पर खेती करता है उसके खेत में केवल भाड़ (एक काँटेदार वृक्ष) के सिवा और क्या होगा ? ॥ ८७ ॥

थोर जोताई बहुत हेंगाई, ऊंचे बाँधै आरी।
उपजै तो उपजै नहीं, घाघै देवै गारी ॥ ८८ ॥

थोड़ी जोताई और अधिक हेंगाई करने से तो पैदावार होती ही नहीं; परन्तु

घाघ का कहना है कि यदि खेत के किनारे के मेड़ ऊँचे बँधे हों तो शायद पैदावार हो ही जाय अन्यथा गालियाँ तो दोगे ही ॥ ८८ ॥

दिनको बादर रात को तारे।
चलो कंत जहँ जीवें बारे ॥ ८९ ॥

दिन में बादल और रात में तारों के उदय को देखकर किसान की स्त्री कहती है कि समय अच्छा नहीं होगा अर्थात् अकाल पड़ेगा। अतः हे कंत! (स्वामी।) ऐसे स्थान को छोड़कर वहाँ कहीं चलो जहाँ ये छोटे-छोटे बच्चे जी सकें ॥ ८९ ॥

दूई हर खेती एक हर बारी।
एक बैल से भली कुदारी ॥ ९० ॥

खेती के लिये कम से कम दो हल होना चाहिये। एक हर से तो खेती नहीं किन्तु फुलवाड़ी या तरकारी की बाड़ी होती है और जिस किसान के पास एक ही बैल हो तो अच्छा होगा कि वह कुदाल से ही खेती करे, किन्तु एक बैल व्यर्थ है ॥ ९० ॥

दस बाहों का माड़ा।
बीस बाहों का गाड़ा ॥ ९१ ॥

गेहूँ का खेत कम से कम दस बार तो जोतो; परन्तु ऊख का खेत तो बीस बार जोतना आवश्यक है ॥ ९१ ॥

दिवाली को बोये दिवालिया ॥ ९२ ॥

दिवाली के दिन जो किसान खेत बोता है, उसका दिवाला हो जाता है, अर्थात् दिवाली को बोना निषेध है ॥ ९२ ॥

दो पत्ती क्यों न निराये।
अब बीनत क्यों पछताये ॥ ९३ ॥

धान या ऐसी किसी भी फसल की निकाई (निरवाही या निरौनी) का मुख्य समय उसका वह आरम्भिक काल है, जब उसमें दो-दो पत्तियाँ निकल आवें; क्योंकि बाद में तो खर-पतवार इतने बढ़ जाते हैं कि जिनसे फसल को

ानि भी होती है और निकाई में कठिनाई आ जाती है। दूसरा अर्थ यह कि दि आरम्भ ही में कपास की निकाई न कर दिया तो फसल मारी जाने पर अब यों पछता रहे हो ? ॥ ६३ ॥

दो दिन पछिवाँ छः पुरवाई। गेहूँ जौ को लेव दँवाई॥
ताके बाद ओसावै सोई। भूसा दाना अलगे होई॥ ९४॥

दवाँई के लिये दो दिन पछिवाँ और छः दिन पुरवा हवा मिल जाय तो तने दिन में ही गेहूँ और जौ को दवाँ लेना चाहिये। उसके बाद उसे ओसालो, ना-भूसा अलग हो जायगा ॥ ६४ ॥

दस हल राव, आठ हल राना।
चार हलों का बड़ा किसाना॥ ६५॥

जिस किसान के पास दस हल हो वह राव है और जिसके पास आठ हल वह खेती में राना है, और जिसके पास चार हल हों वह एक बड़ा किसान है ॥ ६५ ॥

दखिनी कुलखिनी। माघ पूस सुलखिनी॥ ६६॥

खेती के लिये दक्षिणी वायु कुलक्षणी और वही यदि माघ, पूस में चले ो सुलक्षणी अर्थात् अच्छी कही गई है ॥ ६३ ॥

दिन सात जो चले बाँड़ा।
सूखे जल सातो खाँड़ा॥ ६७॥

यदि यह दक्षिणी हवा कुछ पश्चिम से मिलकर निरन्तर सात दिन तक चलती है तो जानो कि पृथ्वी के सातों खण्ड तक पानी से सूख जायगा ॥ ६७ ॥

दो तोई, घर खोई॥ ९८॥

जिस घर में दो तवे चढ़ते हों अर्थात् गृह-कलह से अलगाव हो गया हो मझो कि वह घर नष्ट हो जायगा ॥ ६८ ॥

धान गिरै सुभागे का।
गेहूँ गिरै अभागे का॥ ६६॥

धान भाग्यवान् का गिरता है (धान का गिरना अच्छा है।) और गेहूँ ारता है अभागे का (मन्दभागी का) अर्थात् गेहूँ की खेती का खेत में गिरना

उसके बारहवें दिन खत खरिहान अर्थात् फसल काटकर खलिहान में लाओ और उसके बारहवें दिन धान को लाकर बखार में रखो ॥ १५४ ॥

सावन सूखे धान भादों सूखे गेहूं ॥ १५५ ॥

सावन के सूखा से धान और भादों के सूखा से गेहूँ अच्छा होता है ॥१५५॥

सावन सुक्र न दीसै, निहचै पड़ै अकाल ॥ १५६ ॥

जिस वर्ष श्रावण के महीने में ही शुक्रास्त हो जावे, उस वर्ष निश्चय ही अकाल पड़ेगा ॥ १५६ ॥

सात सेवाती धान उपाठ ॥ १५७ ॥

स्वाती नक्षत्र के सात दिन बाद धान पक जाता है ॥ १५७ ॥

सावन शुक्ला सप्तमो, उगत न दीखै भान।
तब लगि देव बरीसि हैं, जब लगि देव बिहान ॥ १५८ ॥

यदि श्रावण शुक्ला सप्तमी को सूर्य बादलों में छिपे हों और निकलते हुए दिखाई न पड़ें तो समझो कि जब तक देवोत्थान एकादशी आवेगी तब तक इन्द्रदेव वर्षा करते ही रहेंगे ॥ १५८ ॥

हथिया में हाथ गोड़ चित्रा में फूल।
चढ़त सेवाती झम्पा झूल ॥ १५९ ॥

हस्त नक्षत्र में उड़द अपनी नाल फैलाता है, जड़हन रेंड़ता है, चित्रा नक्षत्र में फूलता है और ज्यों ही स्वाती नक्षत्र चढ़ता है उसके झोंपें झूलने लगती हैं ॥ १५४ ॥

——:*:——

नीति सम्बन्धी कहावतें

अगसर खेती अगसर मार। कहैं घाघ ते कबहुँ न हार ॥ १ ॥

घाघ कवि का कहना है, जो खेत बोने में अगाही कर लेता है अर्थात् आगे बोता है और जो सबसे पहले मारता है वह कभी नहीं हारता ॥ १ ॥

अँतरे खोतरे डंड करै।
ताल नहाय ओस माँ परै।
दैव न मारै आपुइ मरै॥ २॥

जो अंतर देकर या कभी-कभी दंड (कसरत) करता है और तालाब या पोखरे में स्नान करके ओस में सोता है, उसे दैव (ईश्वर) नहीं मारते, स्वयं ही मरता है॥ २॥

अहिर मिताई बादर छाहीं। होवै होवै नाहीं नाहीं॥ ३॥

अहिर की मित्रता और बादल की छाया का क्या भरोसा, हुआ तो हुआ और नहीं तो नही हुआ॥ ३॥

आमा नीबू बानियाँ, गर चाँपे रस देयँ।
कायथ कौआ करहटा, मुर्दा हू से लेयँ।४॥

आम, नीबू और बनियाँ, गला चाँपने (दबाने) से ही रस देते हैं और कायस्थ, कौवा और गीध ये मुर्दे से भी रस ले लेते हैं॥ ४॥

आठ कठौती मट्ठा पीवै, सोरह मकुनी खाय।
उसके मरे न रोइये, घर का दारिद जाय॥ ५॥

जो आठ कठौती भरकर मट्ठा पीता हो और मटर की सोलह मोटी रोटियाँ (मकुनी) खाता हो, उसके मरने पर न रोवे, क्योंकि मानो घर का दरिद्र दूर हो गया॥ ५॥

आपन आपन सब कोइ होइ। दुख माँ नाहिं सँघाती कोइ॥
अन्न बस्त्र खातिर झगड़न्त। घाघ कहै यह बिपति क अन्त। ६॥

देखने में तो सब अपने ही अपने हैं; परन्तु दुःख में कोई साथ नहीं देता। जब अन्न वस्त्र के लिए झगड़ते हैं, तब घाघ का कहना है कि भला इस बिपत्ति का भी कहीं अन्त हो सकता है?॥ ६॥

आठ गाँव का चौधरी, बीस गाँव का राउ।
अपने काम न आवई, अपनी ऐसी तैसी में जाउ॥ ७॥

यदि कोई आठ गाँव का चौधरी-मुखिया या बीस गाँव का राव ही क्यों न हो; परन्तु अपने काम में न आवे तो वह अपनी ऐसी की तैसी में जाय। हमारा उससे कोई प्रयोजन नहीं है ॥ ७ ॥

ओछो मन्त्री राजै नास, ताल बिनासै काई।
सान साहिबी फूट बिनासै, घग्घा पैर बिवाई ॥ ८ ॥

यदि राजा का मंत्री हल्के स्वभाववाला अर्थात् नीच प्रकृति का हो तो वह उसके राज्य को नष्ट कर देता है और यदि ताल में काई हो तो वह ताल को नष्ट कर देती है। घाघ कवि का कहना है, यदि आपस में फूट हो तो वह मनुष्य के व्यक्तित्व का नाश कर देती है और यदि पैर में बेवाई हो तो वह पैर की शोभा को नष्ट कर देती है ॥ ८ ॥

ओछे बैठक, ओछे काम। ओछी बातें, आठो याम ॥
घाघ बताये तीन निकाम। भूलि न लीजो इनको नाम ॥ ९ ॥

ओछे आदमियों के साथ बैठना, ओछे काम करना और आठों घड़ी (दिन-रात) ओछी (हल्की) बातें करना ये तीनों काम बुरे हैं, घाघ कवि का कहना है इनका (उपरोक्त तीनों कामों का) भूल कर भी नाम न लेना ॥ ९ ॥

आलस नींद किसानै नासै, चोरै नासै खाँसी।
अँखिया लीबर बेसवै नासै, बाबै नासै दासी ॥ १० ॥

आलस्य और नींद किसान को नष्ट कर देती है और खाँसी चोर का नाश करती है। आँख में कीचड़ हो तो वह वेश्या का नाश करती है और बाबा (साधु सन्यासी) को दासी अर्थात् स्त्री नाश कर देती है ॥ १० ॥

एक तो बसो सड़क पर गाँव। दूजे बड़े बड़ेन में नाँव ॥
तीजे परे दरब से हीन। घग्घा हमको बिपदा दीन ॥ ११ ॥

एक तो गाँव सड़क पर बसा है, दूसरे बड़े बड़ों में नाम है। तीसरे द्रव्य से हीन हूँ—घाघ कवि का कहना है कि ये तीनों ही बातें हमारे लिए बड़े विपत्ति की हैं ॥ ११ ॥

उधार काढ़ि ब्योपार चलावै, छप्पर डारै तारो।
सारे के सँग बहिनी पठवै, तीनिउ का मुँह कारो ॥ १२ ॥

जो मनुष्य कर्ज लेकर व्योपार चलाता है, जो छप्पर के मकान में ताला बन्द करता है और जो साले के साथ अपनी बहन को कहीं या उसके घर भेजता है, उन तीनों के मुख में कालिख लगती है ॥ १२ ॥

ऊँच अँटारी मधुर बतास । घाघ कहै घरही कैलास ॥ १३ ॥

यदि अपने पास ऊँची अटारी (कोठे पर मकान) हो और उसमें बैठा हो उस समय धीमी-धीमी हवा चलती हो, तो घाघ कहते हैं—घर बैठे हो कैलास का सुख प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

कलियुग में दो भगत हैं, बैरागी औ ऊँट ।
वै तुलसीबन काटहीं, ये किये पीपर ठूँठ ॥ १४ ॥

कलियुग में भक्त दो ही हैं, एक तो वैरागी और दूसरे ऊँट। ये (वैरागी, वैष्णव साधू) तुलसी के बन को काटते हैं, तो ये (ऊँट) पीपल के वृक्ष को ठूँठ करते हैं ॥ १४ ॥

कुतवा मूतनि मरकनी, सरबलील कुचकाट ।
घग्घा चारौ परिहरौ, तब तुम पौढ़ो खाट ॥ १५ ॥

जिस चारपाई पर कुत्ते पेशाब करते हों, जो मरमराती हो, जिसमें आदमी घुस जाता हो अर्थात् टूटी हुई झिलँगा हो और जो एँड़ी की नस काटनेवाली हो। घाघ का कहना है—इन चारों प्रकार की खाटों को छोड़कर अच्छी खाट पर अर्थात् जिस खाट में चारों अवगुण न हों उस पर तुम सोओ ॥ १५ ॥

कोपे दई मेघ ना होइ । खेती सूखति नैहर जोइ ॥
पूत बिदेस खाट पर कंत । कहैं घाघ ई बिपति क अन्त ॥१६॥

जब ईश्वर के कुपित होने से बादल जल न बरसाते हों, खेती सूख रही हो, स्त्री नैहर में हो, पति बीमारी के कारण खाट पर पड़ा हो तथा पुत्र विदेश में हो तो घाघ कहते हैं कि यह विपत्ति का अन्त नहीं तो क्या है ? ॥ १६ ॥

कोदो महुआ अन्न नहीं । जोलहा धुनियाँ जन नहीं ॥ १७ ॥

जैसे कोदो और महुआ अन्न नहीं हैं, वैसे ही जोलहा और धुनियाँ मनुष्य भी मनुष्यों में नहीं गिने जाते ॥ १७ ॥

कीरी संचै तीतर खाय। पापी को धन पर ले जाय॥ १८॥

जैसे चींटी के संचित अन्न को तीतर खा जाते हैं वैसे ही पापियों के धन को पराये अर्थात् दूसरे लोग ही ले जाते हैं॥ १८॥

काँटा बुरा कटील का, औ बदरी का घाम।
सौत बुरी है चून की, औ साझे का काम॥ १६॥

जैसे करील का काँटा और बदली का घाम बुरा होता है, वैसे ही यदि सौत आँटे की भी हो तो वह बुरी है और साझे का काम (रोजगार) भी बुरा होता है॥ १६॥

खेत न जोतै राड़ी, न भैंस बेसाहै पाड़ी॥
न मेहरी मरद क छाँड़ी, क्यों पावै बिपदा गाढ़ी॥ २०॥

शब्दार्थ—राड़ी=राड़ा नामक एक कड़ी घास। पाड़ी=पड़िया, भैंस की बच्ची। गाढ़ी=कठिन, कड़ी।

भावार्थ—राड़ीवाला खेत कदापि न जोते और पड़िया भैंस न खरीदे। पर-पुरुष की त्याग की हुई स्त्री न रक्खे, ऐसा करके कोई कठिन विपत्ति क्यों प्राप्त करे?॥ २०॥

खेती करै वनिज को धावै। ऐसा डूबै थाह न पावै॥ २१॥

यदि खेती करनेवाला (किसान) व्यापार या रोजगार की तरफ दौड़ता है, तो वह ऐसे डूब जाता है कि उसे कहीं स्थान नहीं प्राप्त होता॥ २१॥

खेती पाती बीनती, औ घोड़े की तंग।
अपने हाथ सँवारिये, तब जिव रहे अनन्द॥ २२॥

खेती करना, पत्र लिखना, विनती अर्थात् प्रार्थना करना और घोड़े की तंग कसना—यह अपने ही हाथ से करना अच्छा होता है और तभी जी को आनन्द रहता है॥ २२॥

खाइ के मूते सूतै बाउँ। काहे वैद बसावै गाँउँ॥ २३॥

जो भोजन करने के पश्चात् पेशाब करले और पहले बायें करवट सोवे तो उसे अपने गाँव में वैद्य बसाने की क्या आवश्यकता है?॥ २३॥

गया पेड़ जब बकुला बैठा। गया गेह जब मुड़िया पैठा॥
गया राज जहँ राजा लोभी। गया खेत जहँ जामी गोभी॥२४॥

जब जिस वृक्ष पर बगुला बैठने लगता है, तब वह नष्ट हो जाता है। जिस घर में संन्यासी का प्रवेश होता है उसका भी नाश हो जाता है और जहाँ राजा लोभी होता है वहाँ का राज्य नष्ट हो जाता है तथा वह खेत भी नष्ट हो जाता है जिसमें गोभी उत्पन्न होती है॥ २४॥

घर की खुनुस औ जर की भूख। छोट दमाद बराहे ऊख॥
दूबर खेती बउरहा भाय। घाघ कहैं दुख कहाँ समाय॥२५॥

घाघ कहते हैं—घर का लड़ाई झगड़ा और ज्वर के बाद की भूख। छोटा दामाद, सूखती हुई ईख, कमजोर खेती और मूर्ख भाई हो तो यह दुःख कहाँ तक सहन होगा? ॥ २५॥

घर घोड़ा पैदल चलै, तीर चलावै बीन।
थाती धरै दामाद घर जगमें भकुआ तीन॥ २६॥

जो घर में घोड़ा रहते हुए भी पैदल चलता है और जो बीन—बीनकर तीर चलाता है तथा जो अपनी कमाई की थाती एवं बचे-बचाये धन को दामाद (जमाई) के घर जमा रखता है, संसार में ये तीनों ही मूर्ख हैं॥ २६॥

घर में नारी आँगन सोवै। रन में चढ़के छत्री रोवै॥
रात को सतुआ करै बिआरी। घाघ मरै तेहिर महतारी॥ २७॥

जिसकी स्त्री घर के आँगन में सोती हो, जो क्षत्री रण में चढ़कर रोता हो। जो रात्री में सतुआ खाता हो—घाघ कहते हैं (यह देखकर) उसकी माँ को बड़ा दुःख होता है अर्थात् वह मृतक-सी हो जाती है॥ २७॥

घाघ बात अप मन गुनहीं। ठाकुर भगत न मूसर धनुहीं॥ २८॥

घाघ कवि अपने मन में पूर्णतया विचार कर कहते हैं कि (ठाकुर नाम वाले, रजपूत, साव-महाजन कहलाने वाला, मालिक की पदवी वाला) कभी भगवान् का भक्त नहीं हो सकता और न तो मूशल धनुष हो सकता है ये दोनों ही बातें असम्भव हैं॥ २८॥

चाकर चोर राज बेपीर, कहैं घाघ का राखै धीर ॥ २९ ॥

घाघ कवि कहते हैं—यदि नौकर चोर हो और राजा निर्दयी हो, तो ऐसी अवस्था में धैर्य की कहाँ तक रक्षा हो सकती है ॥ २९ ॥

चार छावैं तीन निरावैं, तीन खाट दो बाट ॥ ३० ॥

छप्पर की छवाई के लिये चार; निरौनी (निकाई) के लिये तीन, चारपाई बीनने के लिये तीन और रास्ता चलने के लिये दो आदमियों की आवश्यकता पड़ती है ॥ ३० ॥

चोर जुआरी गँठकटा, जार औ नार छिनार।
सौ सौगंधें खायँ जौं, घाघ न करु इतबार ॥ ३१ ॥

यदि चोर, जुआड़ी, गिरहकट, पर-स्त्री-गामी (व्यभिचारी) और छिनार स्त्री सैकड़ों कसमें क्यों न खावें, घाघ कहता है इनका कदापि विश्वास न करे ॥ ३१ ॥

चैते गुड़ बैसाखे तेल। जेठ क पंथ असाढ़ क बेल ॥
सावन साग न भादौं दही। क्वार दूध न कातिक मही ॥
अगहन जीरा पूसै धना। माघै मिश्री फागुन चना ॥ ३२ ॥

चैत्र के महीने में गुड़, बैसाख में तैल, जेठ में रास्ता चलना अषाढ़ का बेल, सावन में साग, भादों में दही, क्वार में दूध, कार्तिक में मट्ठा, अगहन में में जीरा, पूस में धनियाँ, माघ में मिश्री और फागुन में चना खाना अच्छा नहीं है ॥ ३२ ॥

छज्जे की बैठक बुरी, परछाहीं की छाँह।
नियरे का रसिया बुरा, नित उठि पकरै बाँह ॥ ३३ ॥

कोठे के छज्जे की बैठक और परछाईं की छाया बुरी होती है। इसी प्रकार निकट का प्रेमी भी बुरा होता है कि जो नित्य प्रातः उठते ही बाँह पकड़ लेता है ॥ ३३ ॥

जोइगर, बँसगर, बुझगर भाई। तिय सतवंती नीक सुभाई ॥
धन पुत हो मन होय विचार। कहै घाघ ई सुक्ख अपार ॥ ३४ ॥

जिसके विवाहित, बलवान और समझदार भाई हो तथा जिसके पास अच्छे

स्वभाव वाली सुन्दरी और पतिव्रता स्त्री हो। जो धनवान, पुत्रवान और विचार-शील मनवाला हो—घाघ कहते हैं, उसे इस प्रकार अपार सुख प्राप्त होता है ? ॥३४॥

जेकरे ऊँचा बैठना, जेकर खेत निचान।
ओकर बैरी का करै, जेकर मीत दिवान॥ ३५॥

जिसका उच्च जनों में तो बैठना (उठक-बैठक) हो और जिसके खेत नीचे की जमीन के हों तथा जिसके मित्र दिवान साहब हों, उसके शत्रु क्या कर सकते हैं ? ॥ ३५ ॥

जहाँ चारि काछी, उहाँ बात आछी।
जहाँ चारि कोरी, उहाँ बात बोरी॥
जहाँ चारि भुंजी, उहाँ बात उँझी॥ ३६॥

जहाँ चार काछी रहते हों वहाँ की बातें अच्छी होती हैं। जहाँ चार कोरी रहते हैं वहाँ की बातें डूब जाती हैं। परन्तु जहाँ चार भुँजवे रहते हैं वहाँ की बातें उलझ जाती हैं और निर्णय नहीं हो पातीं ॥ ३६ ॥

जेहि घर साला सारथी, तिरिया की हो सीख।
सावन में बिन हल लवै, तीनों माँगै भीख॥ ३७॥

जिसके घर में साले का सारथ्य अर्थात् प्रधानता हो और स्त्री की शिक्षा एवं आदेश पर सारा काम चलता हो तथा श्रावण के महीने में जो किसान बिना हल का हो—वे तीनों ही भीख माँगते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं ॥ ३७ ॥

जेहि की छाती होय न बार।
ओहि से सदा रहो हुशियार॥ ३८॥

जिसकी छाती में बाल न होवें उससे सर्वदा होशियार रहो ॥ ३८ ॥

जाको मारा चाहिए, बिन मारे बिन घाव।
वाको यही बताइए, घुइयाँ पूरी खाव॥ ३९॥

जिसको बिना आघात (चोट) के एवं बिना मारे ही मारना चाहो, उसको यही बताओ कि घुइयाँ (अरवी का शाक) और पूरी खाओ ॥ ३९ ॥

झिलँगा खटिया बातल देह।
तिरिया लम्पट हाटे गेह॥
बेगा बिगरिके मुदई मिलन्त।
घाघ कहै यह विपति क अंत॥ ४०॥

घाघ कहता है—झिलँगा (टूटी हुई) खटिया, बात रोग से फूली हुई देह, कुलटा स्त्री, बाजार में घर, भाई का बिगड़कर शत्रु से मिलाप—यह विपत्ति (दुःख) का अन्त है॥ ४०॥

ढीठ पतोहु धिया गरियार। खसम बेपीर न करै बिचार॥
घरे जलान अन्न न होई। घाघ कहैं सो अभागो जोई॥४१॥

जिसकी पतोहू (पुत्रवधू) ढीठ अर्थात् निडर हो; पुत्री काम-काज में गादर हो, पति अविचारी और बेदर्द हो, घर में जलावन के लिये लकड़ी और भोजन बनाने के लिए अन्न भी न हो तो वह स्त्री बड़ी अभागिनी है॥ ४१॥

तीनि बैल दुइ मेहरी, काल बैठ या डेहरी॥ ४२॥

जिस किसान के पास तीन बैल और दो स्त्रियाँ हों समझो कि उसका काल हर समय उसके द्वार पर ही बैठा है॥ ४२॥

ताका भैंसा गादर बैल। नारि कुलच्छन बालक छैल॥
इनसे बाँचे चतुरा लोग। राज छाँड़ि के साधै जोग॥ ४३॥

तिरछे देखने वाला भैंसा, गादर (परुवा, कायर) बैल, कुलक्षणा स्त्री शोहदा या शौकीन बेटा—इन चारों से चतुर लोगों को सदैव बचना चाहिए अन्यथा यदि राज्य का भी सुख हो तो उसे त्याग कर योग की साधना करे॥ ४३॥

धौले भले हैं कापड़े, धौले भले न बार।
आछी कालो कामरी, काली भली न नार॥ ४४॥

सफेद वस्त्र तो अच्छे लगते हैं, परन्तु बाल सफेद अच्छे नहीं लगते। ऐसे ही कमरी (कम्बल) तो काली अच्छी लगती है, परन्तु काले रंग की स्त्री

अच्छी नहीं लगती। ऐसा ही कुछ मिलता हुआ एक दोहा महाकवि केशवदास ने भी इस प्रकार कहा है ॥ ४४ ॥

"उजरी उजरी सब भली, उजरी भली न केस।
कामिनि डरै न रिपु नवै, न आदर करै नरेस ॥"

ना अति बरखा ना अति धूप।
ना अति बकता ना अति चूप ॥ ४५ ॥

न तो अधिक वर्षा अच्छी है, न अधिक धूप ही अच्छा है। ऐसे ही न तो अधिक बोलने वाला ही अच्छा है और न अधिक चुप रहना ही अच्छा है ॥ ४५ ॥

नसकट पनहीं बतकट जोय। जो पहिलौंठी बिटिया होय ॥
पातरि कृषी बौरहा भाय। घाघ कहैं दुख कहाँ समाय ॥४६॥

घाघ कवि का कहना है—यदि जूता पैरों का नस काटने वाला हो, स्त्री बात काटने वाली हो और उसके पहले-पहल कन्या ही उत्पन्न हो, खेती कमजोर हो, भाई अत्यन्त सीधा, बौड़हा (बेवकूफ़) हो तो भला यह दुःख कहाँ समायेगा अर्थात् इस दुःख का अन्त नहीं है ॥ ४६ ॥

नसकट खटिया दुलकन घोर।
घाघ कहैं यह विपति कै ओर ॥ ४७ ॥

घाघ कवि कहते हैं कि यदि चारपाई नसकट अर्थात् छोटी हो और दुलकी चलने वाला घोड़ा हो तो इस विपत्ति का अन्त नहीं है ॥ ४७ ॥

नीचन से व्योहार बिसाहै, हँसि के माँगै दम्मा।
आलस नींद निगोड़ी घेरे, घग्घा तीनि निकम्मा ॥ ४८ ॥

जो व्यवहार तो नीचों से करता है अर्थात् जिसका सम्पर्क निम्नतर है, जो अपना भी पैसा हँसकर माँगता है और जिसे प्रतिक्षण आलस्य और निगोड़ी नींद ही घेरे रहती है—घाघ कवि का कहना है कि ये तीनों ही निकम्मे हैं ॥ ४८ ॥

नित्तै खेती दुसरे गाय। नाहीं देखै तेकर जाय ॥
घर बैठल जो बनवै बात। देह में वस्त्र न पेट में भात ॥ ४९ ॥

जो किसान अपनी खेती और अपनी गाय अर्थात् गौ को नित्य स्वयं ही देख-भाल नहीं करता और घर बैठे बातें ही बनाता रहता है उसको न तो पेट भरने को भात ही मिलता है और न शरीर ढँकने के लिए वस्त्र ही प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

नारि करकसा कटहा घोर, हाकिम होइ के खाइ अँकोर।
कपटी मित्र पुत्र है चोर, घग्घा इनको गहिरे बोर ॥ ५० ॥

कड़े स्वभाव की स्त्री, कटहा घोड़ा, घूस लेने वाला न्यायाधीश, कपटी मित्र, चोर पुत्र—घाघ कहते हैं इन पांचों को कहीं गहरे पानी में डुबो दे तो अच्छा है ॥ ५० ॥

प्रातकाल खटिया ते उठि के, पियै तुरन्तै पानी।
ता घर बैद कभी ना आवैं, बात घाघ कै जानी ॥ ५१ ॥

जो प्रातःकाल चारपाई से उठते ही तुरन्त पानी पी लेवे तो उसके घर वैद्य कभी न आवे अर्थात् वह सदैव नीरोग रहेगा—घाघ की यह बात बहुत सत्य जानो ॥ ५१ ॥

निहपछ राजा मन हो हाथ। साधु परोसी नीमन साथ ॥
हुकुमी पुत्र धिया सतवार। तिरिया भाई रखै विचार ॥
कहैं घाघ हम करत विचार। बड़े भाग से दे करतार ॥ ५२ ॥

जिसका राजा (स्वामी या न्यायकर्ता) निष्पक्ष हो और जिसका मन हाथ में हो अर्थात् वश में हो। जिसे सज्जन का पड़ोस और अच्छी सङ्गति प्राप्त हो तथा स्त्री और भाई जिसके बड़प्पन अथवा महत्व का ख्याल रखते हों। तब घाघ कवि इन लोगों के सन्बन्ध में कहते हैं कि मैं विचार करता हूँ तो ईश्वर बड़े भाग्य से ही ऐसा संगठन और सुयोग देता है ॥ ५२ ॥

परमुख देखि अपन मुख गोवै। चूरी, कंकन, बेसरि टोवै।
आँचर टारि के पेट देखावै। अब छिनार का ढोल बजावै ॥५३॥

जो स्त्री दूसरे का मुँह देखकर अपना मुँह छिपा लेती है और चूरी, कंकण और बेसर (नथिया या नथ) टोने लगती है तथा जो अंचल हटाकर पेट दिखलाती है, तब क्या अब ढोल बजाकर कहेगी कि मैं छिनाल हूँ ॥ ५३ ॥

पूत न मानै आपन डाँट। भाई लड़ै चहै नित बाँट॥
तिरिया कलही करकस होय। नियरे बसल दुष्ट सब कोय॥
मालिक नाहित करै विचार। घाघ कहैं ये विपति अपार॥५४॥

जब पुत्र अपनी डाँट-डपट अर्थात् कहना नहीं मानता हो, भाई नित्य बाँट-बखरा के लिये लड़ाई करता हो, स्त्री कर्कशा और झगड़ालू हो, आस-पास सारे दुष्ट ही बसते हों और मालिक न्याय-अन्याय का विचार न करता हो तो घाघ कहते हैं कि इन सब विपत्तियों का अन्त नहीं है॥ ५४ ॥

परहत बनिज सँदेशे खेती। बिन बर देखे ब्याहै बेटी॥
द्वार पराये गाड़ै थाती। ये चारों मिलि पीटैं छाती॥५५॥

जो दूसरे के भरोसे व्यापार करे और जो सन्देश देकर अपनी खेती कराता हो, जो बिना वर देखे ही बेटी का व्याह करता है तथा जो दूसरे के द्वार पर अपना धन गाड़ देता है—ये चारों (एक न एक दिन जब कभी मिलते हैं) अथवा अकेले ही छाती पीटकर रोते हैं॥ ५५ ॥

फूटे से बहि जातु हैं, ढोल, गवार, अँगार।
फूटे से बनि जातु हैं, फूट, कपास, अनार॥५६॥

ढोल, गँवार, अंगार ये तीनों फूट जाने से नष्ट हो जाते हैं। परन्तु फूट (पकी हुई ककरी का फूट), कपास और अनार ये तीनों फूटने से बन जाते हैं अर्थात् मूल्यवान् हो जाते हैं॥ ५६ ॥

बिन बैलन खेती करै, बिन भैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार॥ ५७॥

जो बिना बैलों के खेती करता है, बिना भाइयों की मदद के झगड़ा लड़ाई करता है और जो बिना स्त्री के घर-गृहस्थी करता है जानो वह चौदह पुश्तों का लबार (झूठा) है॥ ५७ ॥

बनियाँ क सखरज ठकुर क हीन।
बैद क पूत व्याधि नहिं चीन॥
पंडित चुप चुप बेसवा मइल।
कहैं घाघ पाँचो घर गइल॥ ५८॥

यदि बनियें का लड़का शाहखर्च हो, क्षत्रिय का लड़का तेजहीन हो, वैद्य का पुत्र रोगों की पहचान न कर सकता हो, जो पंडित होकर भी चुप्पा हो और यदि वेश्या मैली-कुचैली रहती हो तो घाघ कहते हैं कि इन पाँचो घरों को नष्ट हुआ समझो ॥ ५८ ॥

बैल मरकहा चमकुल जोय। वा घर ओरहन नित उठि होय ॥५९॥

मरकहा अर्थात् मारने वाला बैल, चमकुल अर्थात् चटक-मटक से रहने वाली, चिढ़ने वाली अथवा एकांगी स्वभाव की स्त्री जिस घर में होती है वहाँ प्रातः काल सोकर उठते ही नित्य उलाहना होता रहता है ॥ ५६ ॥

बाछा बैल बहुरिया जोय। ना घर रहै न खेती होय ॥ ६० ॥

बाछा अर्थात् बछवा बैल और बहुरिया अर्थात् नव वधू से न तो घर रहता है और न खेती ही हो सकती है। अनुभवशून्य कुछ नहीं कर सकते ॥ ६० ॥

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा। खेती उपजै अपने कर्मा ॥ ६१ ॥

पुत्र की उन्नति पिता के धर्मात्मा होने से ही होती है। यदि पिता कर्मण्य-शील होता है तो उसके पुत्र भी उन्नतिशील होते हैं। इसी प्रकार खेती की उपज भी अपने ही कर्म से होती है ॥ ६१ ॥

बिगड़ बिराने जो रहै, मानै तिय की सीख ॥
तीनों योंही जायँगे, पाही बोवै ईख ॥ ६२ ॥

जो अपने घर से क्रुद्ध होकर (नाराज होंकर या रूठकर) दूसरे के घर जाकर रहे और जो स्त्री की सिखलाई हुई बात को मानकर वैसा ही आचरण करे तथा जो दूसरे गाँव पर ऊख की खेती करे तो ये तीनों नष्ट हो जाते हैं ॥६२॥

बिना घाघ घिउ खिचड़ी खाय। बिन गौने ससुरारी जाय ॥
बिना ऋतू के पहिरै पौवा। घाघ कहैं ये तीनों कौवा ॥६३॥

जो बिना माघ आये घी खिचड़ी खाता है, बिना गौना हुए ससुराल जाता है, बिना बरसात ऋतु के आये पौवा (रस्सी लगी खड़ाऊँ) पहनता है— घाघ कहते हैं ये तीनों ही कौवा अर्थात् मूर्ख हैं ॥ ६३ ॥

बिशेषः—कहा जाता है जब इस पद को महाकवि घाघ ने बनाया तब उसे सुनकर उनकी पतोहू जो संभवतः उनके समान ही कवियित्री थी, उसने भी यह पद बनाया था।

मन चाहे घिउ खिचरी खाय, मन चाहे सुसरारी जाय ॥
करै जोग ते पहिरै पौवा, कहै पतोहू घाघै कौवा ॥६४॥

इस प्रकार कई स्थानों में उन ससुर और पतोहू के मनोरंजनपूर्ण नोक-झोंक की कहावतें सुनी जाती हैं ॥ ६४ ॥

विप्र टहलुआ चीक धन, औ बेटी की बाढ़ि ।
याहू पर धन ना घटै, करै बड़न से राढ़ि ॥६५॥

(दरिद्र होने के लक्षण) ब्राह्मण से सेवा कराने से, चिकवा या कसाई का कर्म कर धनसंग्रह करने एवं बकरी पालने से और कन्याओं की बढ़ती होने पर भी यदि धन न घटे तो बड़े लोगों से झगड़ा ठान लेवे, फिर वह मनुष्य शीघ्र ही दरिद्र हो जायगा ॥ ६५ ॥

बैल चौकना जोत में, औ चमकीली नार ।
ये बैरी हैं जानके, कुशल करैं करतार ॥६६॥

जिसकी जोत में (खेती में) बैल चौंकने वाला हो और घर में चमकीली (सुन्दरी) स्त्री हो तो जानो ईश्वर ही खैर करें; क्योंकि ये दोनों उस पुरुष के प्राणघातक हैं ॥ ६६ ॥

बाँस, बाँध, बिगहा, बिया, बारी, बेटा, बैल ।
ब्योहर, बढ़ई, बन, बबुर, बात सुनो यह छैल ॥
जो बकार बारह बसैं, सो पूरन गिरहस्त ।
औरन को सुख दे सदा, आप रहै अलमस्त ॥ ६७ ॥

बाँस, बाँध; बीघा (खेत की जमीन के बीघे), बीज, बारी (बारी जाति की प्रजा या बाड़ा), बेटा, बैल, ब्योहार (अन्न और रुपये का लेन देन), बढ़ई, बन, बबूल के वृक्ष और बात की साख—जिसके पास ये बारह बकार हों उसी को पूरा गृहस्त जानो । ऐसा व्यक्ति दूसरों को सुख देता हुआ स्वयं भी सर्वदा प्रसन्न रहता है ॥ ६७ ॥

बैल बगौधा निरधन जोय । ता घर ओरहन कबहुँ ना होय ॥६८॥

जिस किसान के बैल सदैव बगनी से लगे हुए ठीक तरह से बाँधे रहते हैं और जिसकी स्त्री रुपये पैसे का लेन-देन नहीं करती, निस्पृह और सीधे-सादे ढँग से रहती है, उसके घर पर उलाहना कभी नहीं जाता ॥ ६८ ॥

बूढ़ा बैल बिसाहै, झीना कापड़ लेय।
आपुन करै नसौनी, दैवै दूषन देय ॥ ६६ ॥

जो व्यक्ति बूढ़ा बैल खरीदता है और झीना कपड़ा लेता है। वह स्वयं अपने इस कर्म से तो अपना नाश करता ही है; परन्तु व्यर्थ ही में दैव को दोष लगाता है ॥ ६६ ॥

भुइयाँ खेड़े हर हों चार। घर हो गिहथिन गऊ दुधार ॥
रहरकी दाल जड़हन कै भात। गागल निबुआ औ घिउ तात ॥
दही खाँड़ जो घर में होय। बाँके नैन परोसै जोय ॥
कहै घाघ तब सबही झूठा। उहाँ छाँड़ि इहवैं बैकुण्ठा ॥ ७० ॥

जिस किसान के खेत गाँव के आस-पास ही सटे हुए हों और चार हल की खेती हो। जिसके घर में गृहस्थी में निपुण स्त्री हो और अच्छा दूध देने वाली गऊ हो। जिसे अरहर की दाल और जड़हन के भात के साथ रसदार नीबू और गरम घी मिलता हो, साथ ही जब उसे तिरछी चितवनवाली स्त्री परोसती हो, तब घाघ का कहना है कि इसके आगे सारे आनन्द झूठे हैं तथा उसके लिये स्वर्ग को छोड़ कर यहीं वैकुण्ठ है ॥ ७० ॥

भूरी हथिनी चँदुली जोय पूस महावर बिरले होय ॥ ७१ ॥

भूरे रंग हथिनी, गंजे सिर की स्त्री और पूस मास की वर्षा ये विरले ही किसी को भाग्य से ही प्राप्त होती है ॥ ७१ ॥

भेदिया सेवक सुंदरि नारि। जीरन पट कुराज दुख चारि ॥७२॥

सुन्दरी स्त्री, भेद जाननेवाला नौकर, जीर्ण (पुराना) वस्त्र और बुरा राज्य, ये चारों दुःखदायक होते हैं ॥ ७२ ॥

भैंस सुखी जब मड़िया परै। राँड़ सुखी जब सबकर मरै ॥७३॥

भैंस को सच्चा सुख तो तब मिलता है जब वह पानी और कीचड़ से भरे गड्ढे में पड़कर लोट-पोट करती है। ऐसे ही बिधवा स्त्री को तो तब सुख प्राप्त होता है जब उसकी तरह सबके पति मर जायें और सब स्त्रियाँ उसके समान राँड़ हो जायँ ॥ ७३ ॥

मारि के टरि रहै। खाय के परि रहै ॥ ७४ ॥

यदि किसी को मारे तो फौरन ही वहाँ से हट जावे। ऐसे ही जब भोजन कर लेवे तब फौरन ही सो रहे अर्थात् लेट लेवे ॥७४॥

माघ पूस की बादरी, और कुवारा घाम ॥
ये दोनों जो कोइ सहैं, करैं पराया काम ॥७५॥

वही दूसरे का काम कर सकता है जो माघ-पूस की बदली की कठिन सर्दी और क्वार की धूप को सहन करता है ॥७५॥

माँ ते पूत पिता के घोर। नाहीं ढेर तो थोरै थोर ॥७६॥

पुत्र में माता का कुछ न कुछ अंश अवश्य ही विद्यमान रहता है। यह तो मनुष्यजाति की अवस्था है। परन्तु पिता का अंश (पशुजाति) घोड़े में अवश्य ही पाया जाता है॥ ७६ ॥

पाठान्तर—"घोड़ा और थोड़ा-थोड़ा तथा बहुत नहीं।"

मुये चाम से चाम कटावै। भुइ सकरी माँ सोवै।
कहै घाघ ई तीनो भकुवा, उढ़रि गये पर रोवै ॥७७॥

जो मरे हुए चमड़े से चमड़ा कटाता है अर्थात् जो मारे शौकीनी के तंग जूता पहन कर मुये चमड़े से अपने पैर का जीवित चमड़ा कटाता है और जो तंग जमीन में (स्थान में) सोता है तथा जो स्त्री के भाग जाने पर रोता है—घाघ कहते हैं ये तीनों ही भकुआ अर्थात् मूर्ख हैं ॥ ७७ ॥

रहै निरोगी जो कम खाय। बिगरै काम न जो गम खाय ॥७८॥

जो अपनी भूख से एक ग्रास कम खाता है वह निरोग रहता है, और जो गम खाता है उसका काम नहीं बिगड़ता ॥ ७८ ॥

राँड़ मेहरिया अनाथ भैंसा। जब बिचले तब होवे कैसा ॥७९॥

विधवा स्त्री और लावारिस भैंसा, जव ये बिगड़ें अर्थात् क्रुद्ध हो जायें तब कैसा हो अर्थात् तव खैर (कुशल) नहीं होता ॥७९॥

लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान। ममिला बिगरै साँझ बिहान ॥८०॥

यदि लड़का ठाकुर (स्वामी) हो जावे अर्थात् स्वामी के पद पर बालक हो और मन्त्री वृद्ध हो तो उसके (स्वामी के) सारे मामले (काम-काज) साँझ-सबेरे में (शीघ्र ही) बिगड़ जाते हैं॥ ८० ॥

सबके कर। हर के डर ॥८१॥

सब की भलाई करो और ईश्वर को डरो—यही मनुष्य का मुख्य धर्म है।॥८१॥

सावन घोड़ी भादों गाय। माघ मास जो भैंस बिआय॥
कहैं घाघ यह साँची बात। आप मरे या मलिकै खात ॥८२॥

यदि सावन में घोड़ी, भादों में गौ और माघ के महीने में भैंस ब्यावे तो या तो वह खुद मर जावेगी या मालिक को ही खा जायगी अर्थात् उसका नाश करेगी ॥ ८२ ॥

सुथना पहिरे हर जोतै, औ पौला पहिरि निरावै ॥
घाघ कहै ये तीनों भकुआ, सिर बोझा ले गावै ॥८३॥

जो सुथना (चूड़ीदार पाजामा) पहनकर हल जोते और जो पौला (एक प्रकार की खड़ाऊँ जिसमें खूँटी के स्थान में रस्सी लगी हो) पहन कर निरवाही करे और जो सिर पर बोझा लेकर गीत गाता हुआ चलता हो—घाघ कहते हैं ये तीनों ही मूर्ख हैं ॥ ८३ ॥

सावन हरैं भादों चीत। क्वार मास गुड़ खायउ मीत।
कातिक मूली अगहन तेल। पूस में करै दूध से मेल ॥
माघ मास घिउ खिचड़ी खाय। फागुन उठिके प्रात नहाय ॥
चैत मास में नीम बेसहती। बैसाखे में खाय जड़हती ॥
जेठ मास जो दिन में सोवै। ओकर जर असाढ़ में रोवै ॥८४॥

साबन में हरैं, भादों में चीता, क्वार में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध, माघ में घी-खिचड़ी, फाल्गुन में प्रातःकाल का स्नान, चैत्र में नीम, बैसाख में जड़हन का भात, जो इन चीजों को समय समय पर खाता-पीता और सेवन करता है अथवा जो जेठ के महीने में दिन में सोता है उसको असाढ़ में होने वाला ज्वर नहीं होता ॥ ८४ ॥

सधुवै दासी, चोरवै खाँसी, प्रेम बिनासै हाँसी।
घग्घा उनकी बुद्धि बिनासै, खाय जो रोटी बासी ॥८५॥

साधू को दासी (स्त्री), चोर को खाँसी और प्रेम को हँसी नाश करती है। इसी प्रकार घाघ का कहना है कि जो बासी रोटी (बासी भोजन) खाते हैं उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है ॥ ८५ ॥

सावन सोवे ससुर घर, भादों खाये पूआ।
खेत खेत में पूँछत डोलैं, तोहरे केतिक हूआ ॥ ८६ ॥

जो किसान सावन के महीने में तो श्वसुर के घर अर्थात् ससुराल में जाकर रहा और भादों में भी बैठा हुआ पूआ खाता अथवा मौज मारता रहा, वह तो अब अवश्य ही दूसरों के खेतों में जाकर यह पूछता ही रहेगा कि कहो भाई ! तुम्हारे खेत में कितना हुआ ॥ ८६ ॥

साँझै से परि रहतीं खाट। पड़ी भड़ेहर बारह बाट ॥
घर आँगन सब घिन घिन होय। घग्घा गहिरे देव डुबोय ॥ ८७ ॥

फूहड़ स्त्री के सम्बन्ध में घाघ कवि का कहना है कि—ऐसी स्त्रियाँ शाम होते ही खाट पर जाकर पड़ रहती हैं, भले ही घर के बर्तन भाँड़े इधर-उधर पड़े रहें और प्रातः तक घर-आँगन में गन्दगी से मक्खियाँ भिनभिनाती रहें, अतः ऐसी स्त्रियों को तो गहरे पानी में डूब जाना चाहिए ॥ ८७ ॥

हँसुवा ठाकुर खँसुवा चोर। इन्हें ससुरवन गहिरे बोर ॥ ८८ ॥

हँसकर बात करने वाला ठाकुर (स्वामी) और खाँसने वाले चोर इन ससुरों (दुष्टों) को जब पकड़ पाओ तब गहिरे पानी में जाकर खूब गोता दो, जिसमें वे भी समझ जायें कि बुरे काम का अंज़ाम अच्छा नहीं होता ॥ ८८ ॥

हरहट नारी बास एकाह। परुवा बरद सुहुत हरवाह ॥
रोगी होइ होइ इकलन्त। कहै घाघ ई बिपति क अन्त ।८६॥

शब्दार्थ—हरहट=इधर-उधर विचरने वाली, दुष्ट। एकाह=एकान्त, अकेले। परुवा=कायर, गादर। सुहुत=सुस्त। इकलन्त=अकेले।

भावार्थ—दुष्टा स्त्री, एकान्त का बास, गादर बैल सुस्त हरवाहा और रोगी होकर अकेले रहना—घाघ कहते हैं यह विपत्ति का अन्त है ॥ ८६ ॥

हलकन बेंट कुदारी। हो गोहरावै नारी ॥
भैया कहिके माँगै दामा। तीनों काम निकामा ॥ ६० ॥

कुदाल की बेंट का ढीलापन, स्त्री को 'हो' कहकर पुकारना और भैया कहकर अपना बाकी दाम माँगना—ये तीनों ही काम निकम्मे अर्थात् अच्छे नहीं हैं ॥ ६० ॥

घाघ कवि की रचनायें

❀ समाप्त ❀

भड्डरी की कहावतें

कातिक सुदी एकादशी, बादल बिजुली होय।
तो असाढ़ में भड्डरी, बरखा चोखी होय ॥ १ ॥

यदि कार्तिक शुक्ल एकादशी को बादल हों और बिजुली भी चमके तो भड्डरी का कहना है कि आषाढ़ में अच्छी वर्षा होगी ॥ १ ॥

कातिक मावस देखो जोसी, रबि सनि भौमवार जो होसी।
स्वाति नखत अस आयुष जोग, काल पड़ै अस नासैं लोग ॥ २ ॥

कवि कहता है—यदि कार्तिक की अमावस्या के दिन रविवार और शनिवार और मङ्गलवार पड़ता हो और स्वाती नक्षत्र आयुष्य जोग भी पड़ता हो तो ज्योतिष विचार से अकाल पड़ेगा और लोगों का नाश भी होगा ॥ २ ॥

कातिक सुद पूनो दिवस। जो कृतिका रिख होइ ॥
तामें बादर बीजुरी। जो संजोग सों होइ ॥
चार मास तो वर्षा होसी। भलीभाँति यों भाखै जोसी ॥ ३ ॥

यदि कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन कृतिका नक्षत्र हो और उसमें बादल और बिजली का भी संयोग हो तो भड्डर जोतिषी पूर्णतया विचार कर कहता है कि चार महीने अच्छी वर्षा होगी ॥ ३ ॥

मार्ग महीना माहिं जो, ज्येष्ठा तपै न मूर।
तो इमि बोलै भड्डली, निपटै सातों तूर ॥ ४ ॥

यदि अगहन के महीने में ज्येष्ठा नक्षत्र न तपे और न मूल नक्षत्र ही तपे तो भड्डरी का ऐसा कहना है कि निश्चय ही सातों प्रकार के अन्न पैदा होंगे ॥ ४ ॥

मार्ग बदी आठैं घरा, बिज्जु समेतो जोइ।
तो सावन बरसै भलो, साखि सवाई होइ ॥ ५ ॥

यदि अगहन बदी अष्टमी को बिजली सहित बादल होवें तो समझो कि श्रावण में अच्छा पानी बरसेगा और पैदावार सवाई होगी ॥ ५ ॥

पौस अँध्यारी सत्तमी, जो पानी नहिं देइ।
तो आर्द्रा बरसै सही, जल-थल एक करेइ ॥ ६ ॥

यदि पौष बदी सप्तमी को पानी न बरसे तो समझो कि आगे नक्षत्र अवश्य बरसेगा और इतना कि जल-थल एक कर देगा ॥ ६ ॥

पौस अँध्यारी सप्तमी, बिन जल बादर जोय।
सावन सुदि पूनो दिवस, बरखा अवसहिं होय ॥ ७ ॥

यदि पौष बदी सप्तमी को बादल तो होवे; परन्तु पानी न बरसे तो श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन अवश्य ही वर्षा होगी ॥ ७ ॥

पौष मास दशमी दिवस, बादल चमकै बीच।
तौ बरसे भर भादवाँ, साधौ खेलौ तीज ॥ ८ ॥

यदि पौस महीने की दशमी के दिन बादलों के मध्य में बिजली चमके तो भादों भर वर्षा होगी। फिर हे सज्जनों ! तीज का त्योहार आनन्द से खेलो ॥ ८ ॥

पौस अँध्यारी तेरसै, चहुँ दिसि बादर होय।
सावन पूनो मावसै, जलधर अति ही जोय ॥ ९ ॥

यदि पौष बदी तेरस को चारों दिशाओं में बादल होवे तो श्रावण की पूर्णिमा और अमावस्या को बड़ी वर्षा होगी ॥ ९ ॥

पौस अमावस मूल को, सरसै चारों बाय।
निहचै बाँधो झोपड़ो, बरखा होय सिवाय ॥ १० ॥

यदि पूस की अमावस्या को मूल नक्षत्र हो और चौआई बहे तो निश्चय है कि बड़े जोर की वर्षा होगी। अतः अपने झोंपड़े और छप्परों को ठीक तरह से बाँध रक्खो ॥ १० ॥

सोम सुक्र सुरगुरु दिवस, पौष अमावस होय।
घर घर बजे बधावड़ा, दुखी न दीखै कोय ॥ ११ ॥

यदि पौष की अमावस्या को सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार पड़े तो समझो कि घर-घर में आनन्द के बाजे बजें और कोई दुखी न दिखाई दे ॥ ११ ॥

मार्ग बदी आठै घन दरसै।
सो मग्घा भरि सावन बरसै ॥ १२ ॥

यदि अगहन बदी अष्टमी को बादल दिखाई पड़े तो मघा नक्षत्र सावन भर वर्षा करता रहे ॥ १२ ॥

पूस मास दशमी अँधियारी। बदली घोर होय अधिकारी ॥
सावन बदी दशमी के दिवसे। भरे मेघ चारों दिसि दरसे ॥१३॥

यदि पौष कृष्ण दशमी को बदली हो और अत्यन्त ही घोर घटायें घिर आई हों तो समझो कि सावन वदी दशमी को वही बादल चारों दिशाओं में फिर भर जायँगे और अच्छी वर्षा होगी ॥ १३ ॥

पूस उजेली सप्तमी, अष्टमी नौमी गाज।
मेघ होय तो जान लो, अब शुभ होवै काज ॥ १४ ॥

जब पूस शुक्ल सतमी, अष्टमी और नौमी को बादल गरजें तो यह जान लो कि वर्षा होगी और अब सारे काम शुभ होंगे ॥ १४ ॥

माघ अँधेरी सप्तमी, मेघ विज्जु दमकन्त।
मास चारि बरखै सही, मत सोचै तू कन्त ॥ १५ ॥

माघ बदी सतमी को यदि बादल में बिजली की दमक हो तो किसान की स्त्री कहती है—हे प्रियतम! अब तुम कुछ भी चिन्ता न करो। चार महीने अर्थात् बरसात भर वर्षा अवश्य होगी ॥ १५ ॥

नौमी माघ अँधेरिया, मूल रिच्छ को भेद।
हो भादों नवमी दिवस, जल बरसै बिन खेद ॥ १६ ॥

यदि माघ कृष्ण नवमी को मूल नक्षत्र पड़े तो समझो कि भादों की नवमी के दिन जल अवश्य बरसेगा इसमें कुछ भी खेद नहीं है ॥ १६ ॥

माह अमावस गर्भमय, जो केहु भाँति विचारि।
भादों की पूनों दिवस, वर्षा पहर जु चारि ॥ १७ ॥

यदि माघ की अमावस्या के गर्भ में वर्षा हो तो समझो कि भादों की पूर्णिमा को चार पहर वर्षा अवश्य होगी ॥ १७ ॥

माघ सप्तमी ऊजलो, बादल मेघ करन्त।
तो असाढ़ में भड्डुरी, घनो मेघ बरसन्त ॥ १८ ॥

यदि माघ शुक्ल सप्तमी के दिन बादल पानी बरसें तो भड्डुरी का कहना है कि असाढ़ में घोर वर्षा होगी ॥ १८ ॥

माघ सुदी जो सप्तमी, बिज्जु मेह हिम होय।
चार महीना बरस सी, सोक करौ मति कोय ॥ १९ ॥

यदि माघ शुक्ल की सप्तमी को बादल हों, बिजली भी चमकती हो और पाला भी पड़ा हो तो समझो कि बरसात के चारों महीने पानी बरसेगा ॥ १९ ॥

माघ जो साते कज्जली, आठैं बादर होय।
तो असाढ़ में धूरवा, बरसै जोसी जोय ॥ २० ॥

यदि माघ बदी सप्तमी और अष्टमी को आकाश में बादल हों तो ज्योतिषी को देखना चाहिए कि असाढ़ में वर्षा अवश्य होगी ॥ २० ॥

माघ पाँच जो हो रविवार।
तो भी जोसी समय विचार ॥ २१ ॥

यदि माघ मास में पाँच रविवार पड़ें तो ज्योतिषी को समय का विचार करना चाहिए ॥ २१ ॥

फागुन बदी दुइज दिन, बादर होय न बीज।
बरसै सावन भादवाँ, साधो खेलो तीज ॥ २२ ॥

यदि फागुन बदी दूज के दिन बादल की एक भी रेखा न हो तो सावन, भादों में खूब वर्षा होगी, फिर हे सज्जनों! आनन्द से तीज का त्योहार मनाओ ॥ २२ ॥

चैत मास दसमी खरी, जो कहुँ कोरी जाय।
चौमासे भर बादला, भली भाँति बरसाय ॥ २३ ॥

यदि चैत्र के महीने में दशमी को बादल न हों तो समझो कि बरसात के चारों महीने में अच्छी वर्षा होगी ॥ २३ ॥

चैत पूर्णिमा होय जो, सोम गुरौ बुधवार।
घर पर होय बधावड़ा, घर-घर मंगलचार ॥ २४ ॥

यदि चैत्र की पूर्णिमा को सोम, बुध और बृहस्पतिवार हो तो चारों ओर घर-घर आनन्द के बाजे बजेंगे ॥ २४ ॥

असनी गलिया अन्त विनासै। गली रेवती जल को नासै ॥
भरनी नासै तृनौ सहूतो। कृतिका बरसै अन्त बहूतो ॥२५॥

जब चैत्र के अन्त में अश्वनी नक्षत्र बरसे तो समझो कि चौमासे के अन्त में सूखा पड़ेगा और रेवती हो और वर्षा करे तो भी समझो कि वर्षा न होगी ॥ यदि भरणी नक्षत्र वर्षा कर दे तो समझो कि ऐसा कड़ा सूखा पड़ेगा कि तृण तक का नाश हो जायगा और कृत्तिका बरसे तो समझो कि उसका परिणाम अच्छा होगा और अच्छी वर्षा होगी ॥ २५ ॥

बादर ऊपर बादर धावै।
कह भड्डुर जल आतुर आवै ॥ २६ ॥

भड्डुर कवि का कहना है कि जब बादल पर बादल दौड़ते हुये दिखाई दें तो समझो कि वर्षा शीघ्र होगी ॥ २६ ॥

जो चित्रा में खेलैं गाई।
निहचै खाली साख न जाई ॥ २७ ॥

यदि चित्रा नक्षत्र में गौवें अधिक खेल (उछल-कूद) करें तो निश्चय है कि फसल अच्छी होगी ॥ २७ ॥

असनी गल भरनी गली, गलियो जेष्ठा मूर।
पुरवाषाढ़ा धूल किन, उपजै सातो तूर ॥ २८ ॥

यदि कहीं अश्विनी, भरनी, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रों ने वर्षा करके गली-कूँचे को भर दिया तो पूर्वाषाढ़ा में कितनी धूल बचेगी, अतः सातों प्रकार के अन्न पूर्णतया उत्पन्न होंगे ॥ २८ ॥

आद्रा तौ बरसे नहीं, मृगशिर पौन न जोय।
तौ जानौ ये भड्डरी, बरखा बूँद न होय॥ २६॥

यदि आर्द्रा न बरसे और मृगशिरा में वायु न चले तो भड्डरी कहता है, यह निश्चय समझो कि एक बूँद भी वर्षा न होगी॥ २६॥

बैसाख सुदी प्रथमै दिवस, बादर बिज्जु करेइ।
दामा बिना विसाहिजै, पूरा साख भरेइ॥ ३०॥

यदि वैशाख शुक्ल के प्रथम दिन में बादल-बिजली हो तो समझो कि वर्षा तो अच्छी होगी ही, साथ ही इतना अन्न पैदा होगा और ऐसी सस्ती होगी कि बिना मूल्य दिये ही जितना चाहो उतना अन्न खरीद लो॥ ३०॥

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवै संजूत।
तो भाखै यों भड्डरी, उपजै नाज बहूत॥ ३१॥

यदि वैशाख की अक्षय तृतीया के दिन वृहस्पतिवार पड़े तो भड्डरी का कहना है कि अन्न बहुत पैदा होगा॥ ३१॥

चैत मास जो बीज बिजोवै।
भरि वैसाख हि टेसू धोवै॥ ३२॥

यदि कहीं चैत के महीने में बिजली चमक जावे तो वैशाख के महीने में इतना पानी बरसे कि टेसू के फूल का रंग धुल जावेगा॥ ३२॥

जेठ मास जो तपै निरासा।
तौ जानों बरखा की आसा॥ ३३॥

यदि जेठ के महीने में खूब कड़ी तपन पड़े तो जानो कि वर्षा अवश्य होगी॥ ३३॥

उतरे जेठ जो बोलै दादर।
कहैं भड्डरी बरसै बादर॥ ३४॥

यदि जेठ के उतरते समय दादुर बोलें तो भड्डरी का कहना है कि वर्षा होगी॥ ३४॥

धुर असाढ़ी बिज्जुली, चमक निरन्तर होय।
सोमाँ सुकराँ सुरगुराँ, तो भारी जल होय॥ ३५॥

यदि अषाढ़ शुक्ल में सोमवार, शुक्रवार और वृहस्पतिवार के दिन

आकाश में हट-बढ़कर बारम्बार बिजली की चमक दिखाई पड़े तो समझो कि पानी खूब बरसेगा ॥ ३५ ॥

दसैं असाढ़ी कृष्ण की, मंगल रोहिनि होय।
सस्ता धान बिकाइहैं, हाथ न छुइहैं कोय ॥ ३६ ॥

यदि आषाढ़ कृष्ण दशमी को मङ्गलवार और रोहिणी नक्षत्र होवे तो धान इतना सस्ता बिके कि कोई हाथ से भी न छूवेगा ॥ ३६ ॥

सुदि असाढ़ की पञ्चमी, गरज धमधमो होय।
तो यों जानों भड्डरी, मधुरी मेघा जोय ॥ ३७ ॥

यदि अषाढ़ शुक्ल पञ्चमी को आकाश में बादलों की गड़गड़ाहट होवे तो भड्डरी का कहना है कि वर्षा अच्छी होगी ॥ ३७ ॥

सुदी असाढ़ की नौमी दिना, बाहर झीनो चन्द।
जानै भड्डर भूमि पर, मानों होय अनन्द ॥ ३८ ॥

यदि अषाढ़ शुक्ल पक्ष की नौमी के दिन चन्द्रमा पर हल्के बादल छाये हों तो यह जानो कि पृथ्वी पर आनन्द होगा ॥ ३८ ॥

आसाढ़ी पूनो दिना, बादर भीनों चन्द।
सो भड्डर जोसी कहै, सकल नराँ आनन्द ॥ ३९ ॥

यदि असाढ़ की पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा बादलों से पूर्णतया आच्छादित हों तो भड्डर ज्योतिषी का कहना है कि सभी मनुष्य आनन्दित होंगे ॥ ३९ ॥

आसाढ़ो पूनों दिना, गाज बीज बरसन्त।
नासै लच्छन काल का, आनन्द मानों सन्त ॥ ४० ॥

यदि असाढ़ की पूर्णिमा के दिन बादल गरजे, बरसे और बिजली भी चमके तो अकाल के समस्त लक्षणों का नाश हो और सभी को आनन्द हो ॥ ४० ॥

जो बदरी बादर माँ खमसे।
कहै भड्डरी पानी बरसे ॥ ४१ ॥

भड्डरी का कहना है—यदि बादल-बादल में विलीन होते हुए दिखाई पड़ें तो पानी अवश्य बरसेगा ॥ ४१ ॥

आसाढ़ मास आठें अँधियारी। जो निकले चन्दा जलधारी।
चन्दा निकले बादल फोड़। साढ़े तीन मास बरखा का जोड़ ॥४२॥

यदि असाढ़ बदी अष्टमी को चन्द्रमा बादल से रहित हो जाय तो जानों कि साढ़े तीन महीने तक लगातार वर्षा होती रहेगी ॥ ४२ ॥

आगे रबि पीछे चलै, मङ्गल जो आसाढ़।
तो बरसै अनमोल ही, भूमि अनन्दै बाढ़ ॥ ४३ ॥

जब सूर्य आगे और मङ्गल पीछे चलते हों तब पानी का बड़ा योग है। और पृथ्वी पर बड़ा आनन्द होता है ॥ ४३ ॥

आसाढ़ मास पूनो दिवस, बादल घेरे चन्द।
तो भड्डर जोसी कहै, होवै परम अनन्द ॥ ४४ ।

जब असाढ़ की पूर्णिमा के दिन बादल चन्द्रमा को घेर ले तो भड्डर ज्योतिषी का कहना है कि पृथ्वी पर आनन्द होगा ॥ ४४ ॥

पुरुब क बादर पच्छिम चरै, राँड़ बतकही हँसि हँसि करै।
ऊ बरसै ऊ करै भतार, भड्डर के मन यही बिचार ॥ ४५ ॥

जब पूरब के बादल पश्चिम दिशा की ओर जाते हों और विधवा स्त्री हँस-हँस-कर बातें करती हो, तब उन्हें देखकर भड्डर के मन में यही बिचार आता है कि वह बादल तो बरसेगा और वह राँड (विधवा) दूसरा पति करेगी ॥ ४५ ॥

रोहनी जो बरसै नहीं, बरस जेठ नित मूर।
एक बूँद स्वाती पड़ै, लागै तीनों तूर ॥ ४६ ॥

यदि रोहिणी नक्षत्र न बरसे; परन्तु ज्येष्ठा और मूल बरस जाये और स्वाती भी एक बूँद (हल्की वर्षा) बरस दे तो निश्चय ही गेहूँ, जौ और चना ये तीनों अन्न अच्छे होंगे ॥ ४६ ॥

सावन पहली चौथ में, जो मेघा बरसाय।
तो भाखै यो भड्डरी, फसल सवाई जाय ॥ ४७ ॥

जब श्रावण कृष्ण चौथ के दिन बादल पानी बरसे, तब भड्डरी का कहना है कि फसल सवाई होगी ॥ ४७ ॥

सावन सुकला सप्तमी, छिपि कै उगै भान।
तब लग देव बरीसि हैं, जब लग देव उठान ॥ ४८ ॥

यदि श्रावण शुक्लपक्ष की सप्तमी को इतनी घोर बदली हो कि सूर्य उगते हुये दिखाई न पड़ें तो समझना चाहिये कि वर्षा तब तक होती रहेगी कि जब तक देवोत्थान एकादशी न हो जायगी ॥ ४८ ॥

सावन केरे प्रथम दिन, उगत न दीखै भान।
चार महीना बरसै पानी, याको है परमान ॥ ४९ ॥

सावन के पहले दिन यदि सूर्य बादलों में छिपे हों और उगते हुये दिखाई न पड़ें तो इसका यही प्रमाण है कि अब से चार महीने तक पानी बरसता रहेगा ॥ ४९ ॥

सावन बदी एकादशी, बादल उगै न सूर।
तो यों भाखै भड्डरी, घर घर बाजै तूर ॥ ५० ॥

यदि श्रावण कृष्णपक्ष की एकादशी को बादलों के कारण सूर्योदय होते दिखाई न पड़े तो भड्डरी इस प्रकार कहता है कि घर-घर अनन्द की बंशी बजेगी अर्थात् समय अच्छा होगा ॥ ५० ॥

तीतर बरनी बादरी, रहै गगन पर छाय।
कहै घाघ सुन भड्डरी, बिन बरसे ना जाय ॥ ५१ ॥

घाघ का कहना है—हे भड्डरी! सुनो, जब आसमान पर तीतर वर्ण के बादल छाये हों, तब बिना बरसे वे नहीं जा सकते ॥ ५१ ॥

तीतर बरनी बादरी, विधवा काजर रेख।
वे बरसैं वे घर करैं, कहैं भड्डरी देख ॥ ५२ ॥

(इसपर) भड्डरी ने कहा—देखो, जब आकाश में तीतर वर्ण के बादल छाये हों और विधवा स्त्री की आँखों में काजल की रेखा दिखाई पड़ती हो तब

समझना चाहिये कि वह बदली तो जल बरसावेगी और वह विधवा स्त्री दूसरा घर करलेगी ॥ ५२ ॥

सावन पछिवाँ, भादों पुरुवा, आसिन बहै इसान।
कातिक कन्ता सींक न डोलै, गाजैं सबै किसान ॥ ५३ ॥

यदि श्रावण के महीने में पछिवाँ, भादों में पुरुवा और क्वार में ईशान कोण (दक्षिण पश्चिम कोण) की वायु चले तो हे प्रियतम ! कार्तिक में सींक भी हिलने योग्य वायु न चलेगी और सारे किसान मौज करते फिरेंगे ॥ ५३ ॥

पवन थक्यो तीतर लवै, गुरुहिं सुदेवै नेह।
कहत भड्डरी जोतिसी, ता दिन बरसै मेह ॥ ५४ ॥

भड्डरी ज्योतिषी कहते हैं—जब वायु चलते-चलते थकित होकर रुक गयी हो, तीतर प्रेम से लगते अर्थात् जोड़े खाते हों, गुरु-पुष्य योग्य हो तो उस दिन वर्षा अवश्य होती है ॥ ५४ ॥

कल से पानी गरम है, चिड़ियाँ न्हावैं धूर।
अण्डा लै चींटी चढ़ैं, तौ बरखा भरपूर ॥ ५५ ॥

कल से (एक दिन पहिले ही से) अथवा घड़े का जल गरम है, पक्षियाँ धूल-स्नान कर रही हैं, अपना अण्डा लिये चींटियाँ ऊपर आ रही हैं—यदि ऐसा हो तो समझो कि वर्षा अच्छी होगी ॥ ५५ ॥

बोले मोर महातुरी, खाटी होय जु छाछ।
मेह मही पर परन को, जानै काछे काछ ॥ ५६ ॥

जब मोर अत्यन्त ही आतुर होकर बोलें और मट्ठा खट्टा हो जाय तो जानो कि अब बादल पृथ्वीपर पड़ने के लिये कछनी काछे तैयार हैं ॥ ५६ ॥

सावन ऊखम, भादों जाड़।
बरखा मारे ठाढ़ कछाड़ ॥ ५७ ॥

यदि सावन के महीने में गर्मी और भादों के महीने में सर्दी पड़े तो भी समझो कि वर्षा शीघ्र होगी; क्योंकि बादल पृथ्वीपर गिरने के लिये कछाँड़ मारकर तैयार हैं। जब कूद पड़ें कुछ भी विलम्ब नहीं है ॥ ५७ ॥

सावन पहली पंचमी, गरभे उदवैं भान।
बरखा होगी अति घनी, ऊँचो जानौ धान ॥ ५८ ॥

यदि श्रावण की पहली पंचमी को सूर्य बादलों के गर्भ से निकल कर बाहर उदय होवें तो समझो कि ये (सूर्य) श्रेष्ठ हैं और घनी वर्षा होगी ॥ ५८ ॥

सर्व तपै जो रोहिणी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ को, उपजै सातो तूर ॥ ५६ ॥

यदि ज्येष्ठ मास की रोहिणी और मूल सारा तप जाये और परिवा तक वैसाही तपे तो समझो कि सातों प्रकार के अन्न उत्पन्न होंगे ॥ ५६ ॥

जो पुरुवा पुरवाई पावै, झूरी नदी नाव चलावै।
ओरी क पानी, बड़ेरी जावै ॥ ६० ॥

यदि कहीं पूर्वा नक्षत्र को पुरुवा की (पूर्व की) हवा मिल जावे तो कहना ही क्या है? सूखी नदी में भी नाव चल सकती है। छज्जे से गिरा हुआ जल पुनः उसकी चोटी पर चढ़ सकता है अर्थात् घोर वर्षा होगी ॥ ६० ॥

सुक्कर केरी बादरी, रही सनीचर छाय।
तो यों भाखै भड्डरी, साख भली निरधार ॥ ६१ ॥

यदि शुक्रवार की लगी हुई बदली शनिवार तक छाया ही किये रहे तो यह अपनी शाख को पूर्णतया निभा कर ही जायगी ॥ ६१ ॥

उत्तरा उत्तर दै गई, हस्त गयो मुख मोरि।
भली विचारी चित्तरा, परजा लेइ बहोरि ॥ ६२ ॥

किसान कहता है—उत्तरा नक्षत्र तो जबाब दे गई और हस्त ने भी मुँह मोड़ लिया अर्थात् नहीं बरसी, पूरी मरण हो गई थी, पर चित्रा विचारी का भला हो कि अब प्रजा अपने बोये हुये बीज को लौटा तो लेगी ॥ ६२ ॥

भादों की सुदि पंचमी, स्वाति संजोगी होय।
दोनों शुभ जोगैं मिलैं, मंगल बरती लोय ॥ ६३ ॥

यदि भादों शुक्लपक्ष की पंचमी को स्वाति-नक्षत्र का संयोग हो जाय

अर्थात् वह (स्वाति) बरस देवे तो इन दोनों के मांगलिक मिलाप से लोग मंगल के व्रत का आनन्द लूटेंगे ॥ ६३ ॥

भादों मासै ऊजरी, लखौ मूल रविवार।
तो यों भाखै भड्डरी, साख भली निरधार ॥ ६४ ॥

जब भादों मास के शुक्लपक्ष का रविवार मूल नक्षत्र में पड़ा हो, तब भड्डरी का ऐसा कहना है कि यह भी अपनी शाख का अच्छी तरह पालन करेगा ॥ ६४ ॥

जिन बारा रबि संक्रमै, तासों चौथे बार।
अशुभ परंती शुभ करै, जोसी जोतिष सार ॥ ६५ ॥

जिस दिन संक्रान्ति हो उसके चौथे दिन यदि कोई अशुभ पड़े तो शुभ-कारक होता है ॥ ६५ ॥

जाड़े में सूतो भलो, बैठो बरखा काल।
गरमी में ऊभो भलो, चोखो करै सुकाल ॥ ६६ ।

यदि द्वितीया का चन्द्रमा जाड़े में सोया हुआ, वर्षा-ऋतु में बैठा हुआ और गरमी में खड़ा हो तो अच्छा सुकाल-कारक होता है ॥ ६६ ॥

अगहन द्वादश मेघ अखाड़।
असाढ़ बरसे अछना धार ॥ ६७ ॥

यदि अगहन की द्वादशी को आकाश में मेघों का अखाड़ा (जमाव) लगा हो तो निश्चय है कि असाढ़ में घोर वर्षा होगी ॥ ६७ ॥

मोर पंख बादर उठे, राँड़ा काजर रेख।
वह बरसे वह घर करे, यामे मीन न मेख ॥ ६८ ॥

जब आकाश में मोरपंख के समान बादल उठें और विधवा स्त्री काजल लगावे तो निश्चय है कि वह बादल तो बरसेगा और वह विधवा दूसरा घर करेगी ॥ ६८ ॥

अद्रा भद्रा कृत्तिका, आर्द्रा रेख मघाहिं।
चंदा ऊगै दूज को, सुख से नरा अघाहिं ॥ ६९ ॥

यदि द्वितिया का चन्द्रमा आर्द्रा, कृत्तिका, श्लेषा और मघा नक्षत्र में किंतु अर्द्रा में उदय होवे तो समझो कि मनुष्य सुख से तृप्त हो जायँगे ॥ ६९ ॥

साते पाँच तृतीया दशमी, एकादसि में जीव।
यहि तिथिया पर जौतिये, तौ प्रसन्न हो सीव ॥ ७० ॥

सप्तमी, पंचमी, तृतीया, दशमी और एकादशी तिथियों में जीव का बास होता है अर्थात् ये जीवित तिथियाँ हैं। यदि इन तिथियों पर खेत की जोताई आरम्भ करो तो शिवजी प्रसन्न हों ॥ ७० ॥

भादों की छठ चाँदनी, जो अनुराधा होय।
ऊबड़ खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा होय ॥ ७१ ॥

यदि भादों शुक्लपक्ष की छठ को अनुराधा नक्षत्र पड़े तो उस दिन जैसे भी नीच-ऊँच सीधा-टेढ़ा बोअनी कर दे तो बहुत अन्न होवे ॥ ७१ ॥

कर्क के मंगल होयँ भवानी।
दैव धूलि बरसेंगे पानी ॥ ७२ ॥

शिवजी कहते हैं—हे भवानी! जब मंगल कर्क लग्न के होवें तो दैव (इन्द्र) भूमि पर खूब पानी बरसेंगे ॥ ७२ ॥

——:*:——

महँगी और अकाल के लक्षण

आसाढ़ी पूनो दिना, निर्मल ऊगै चन्द।
पीव जाव तुम मालवे, आवैगो दुःख द्वन्द ॥ १ ॥

किसान की स्त्री के शब्दों में—यदि आसाढ़ की पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा स्वच्छ आकाश में उदय हों तो हे प्रियतम! तुम मालवे चले जाना क्योंकि यहाँ दुःखपूर्ण झगड़ा लड़ाई होगा, अर्थात् कठिन दुःख आ जायगा ॥ १ ॥

आगे मङ्गल पीछे भान।
बरषा होवे ओस समान ॥ २ ॥

जब मंगल तो आगे हों और सूर्य पीछे चलें, तब समझो कि वर्षा का योग बहुत कम है और ओस के समान ही वर्षा होगी ॥ २ ॥

आगे मेघा पीछे भान।
पानी पानी रहैं किसान ॥ ३ ॥

यदि मघा के पीछे सूर्य हों तो समझो कि खेती करने वाले किसान पानी-पानी ही रटते रहेंगे, परन्तु वर्षा न होगी ॥ ३ ॥

आगे मेघा पीछे भान।
बरषा होवे ओस समान ॥ ४ ॥

जब मघा के पीछे सूर्य हों तब वर्षा बहुत थोड़ी ओस के समान होगी ॥ ४ ॥

आगे मङ्गल पीठ रवि, जो असाढ़ के मास।
चौपद नासै चहुँ दिसा, बिरलै जीवन आस ॥ ५ ॥

यदि असाढ़ के महीने में मङ्गल तो आगे हों और सूर्य उनके पीछे-पीछे चलते हों तो देश में चारों ओर नाश के लक्षण दिखाई पड़ें, उस समय कोई बिरला ही जीवन की आशा करेगा ॥ ५ ॥

आद्रा भरणी रोहिणी, मघा उत्तरा तीन।
दिन मंगल आँधी चलै, तब लौं बरखा छीन ॥ ६ ॥

जब मङ्गलवार के दिन आर्द्रा, भरणी, रोहिणी और तीनों उत्तरा नक्षत्रों में आँधी चले तब समझना चाहिए कि वर्षा की गति क्षीण है ॥ ६ ॥

आस्विन बदी अमावसी, जो आवै सनिवार।
समयो होवै कि खरो, जोसी करो विचार ॥ ७ ॥

जब क्वार बदी अमावस्या को शनिवार आवे तब समय या तो अच्छा ही होगा या बुरा होगा—इसमें ज्योतिष से दोनों ही विचार आया है ॥ ७ ॥

अखै तीज रोहिणी न होई। पौष अमावास मूल न जोई ॥
राखी श्रवणो हीन बिचारो। कातिक पूनो कृतिका टारो ॥
महि माहीं खल बलहिं प्रकासै। कहत भड्डरी सालि बिनासै ॥ ८ ॥

यदि वैसाख की अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र न हों और पौष की अमावस्या को मूल नक्षत्र न हो। रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक की पूर्णिमा को कृत्तिका टली हुई हो तो पृथ्वी पर दुष्टों का बल बढ़ता है और धान का भी नाश होता है ॥ ८ ॥

एक मास में ग्रहण जो दोई।
तो भी अन्न महगो होई ॥ ९ ॥

यदि एक ही महीने में दो ग्रहण पड़े तो समझो कि अन्न महँगा होगा ॥ ९ ॥

कर्क राशि में मङ्गलवारी।
ग्रहण परै दुर्भिक्ष विचारी ॥ १० ॥

जब चन्द्रमा कर्क राशि में हो और मंगलवार का दिन हो तब ग्रहण पड़े तो समझो कि दुर्भिक्ष पड़ेगा ॥ १० ॥

कर्क संक्रमी मङ्गलवार, मकर संक्रमी सनिहि विचार।
पन्द्रह महूरतवारी होय, देस उजाड़ करै यों जोय ॥ ११ ॥

जब कर्क की संक्रान्ति मङ्गलवार और मकर की संक्रान्ति शनिवार को पड़े यदि वह १५ मुहूर्त की हो तो यह जानों कि वह देश को उजाड़ देगी ॥ ११ ॥

कुही अमावस मूल बिन, बिन रोहिनि अखतीज।
श्रवण बिना हो श्रावणी, आधा उपजै बीज ॥ १२ ॥

यदि अमावस्या मूल नक्षत्र रहित हो और अक्षय तृतीया भी रोहिणी के बिना अर्थात् उससे रहित हो और श्रावणी बिना ही श्रावण का महीना आरम्भ हो जावे तो समझो कि खेती में पैदावार कुछ न होगी बड़ी मुश्किल से लोग अपना बोया हुआ आधा बीज ही प्राप्त कर सकेंगे ॥ १२ ॥

क्या रोहिनि बरसा करै, बचै जेठ नित मूर।
एक बूँद कृतिका पड़ै, नासै तीनों तूर ॥ १३ ॥

रोहिणी या रोहिन नक्षत्र की वर्षा और ज्येष्ठ मास की रक्षा करने से भी क्या

लाभ होगा यदि कृत्तिका ने अपना एक बूँद भी जल पृथ्वी पर गिरा दिया, इससे तो गेहूँ, जौ और चना इन तीनों ही अन्नों का नाश हो जाता ॥ १३ ॥

कै जु सनीचर मीन को, कै जु तुला को होय।
राजा विग्रह प्रजा छय, बिरला जीवै कोय ॥ १४ ॥

यदि शनि मीन और तुला के हों तो राजा-प्रजा में ऐसा विग्रह हो कि बिरला ही कोई जी सकेगा ॥ १४ ॥

करक जु भीजै काँकरो, सिंह अभीनो जाय।
ऐसा बोलै भड्डुरी, टीड़ी फिर फिर खाय ॥ १५ ॥

जब श्रावण के महीने में सूर्य कर्क राशि पर हों, तब यदि इतनी अल्प वृष्टि हो कि केवल कंकड़ ही भीगें और सिंह राशि भी सूखा ही चला जाय और वृष्टि न हो, तो भड्डुरी का ऐसा कहना है कि टीड़ी बार-बार फसल को खा जायेंगी ॥ १५ ॥

कृष्ण असाढ़ी प्रतिपदा, जो अम्बर गरजन्त।
तौ छत्री-छत्री लड़ैं, निहचै काल पड़न्त ॥ १६ ॥

यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को आकाश में बादल गरजें, तो क्षत्रिय से क्षत्रिय तो युद्ध करेंगे ही और निश्चय ही अकाल पड़ेगा ॥ १६ ॥

कृतिका जो कोरी गई, आद्रा मेह न बूँद।
तो यों जानो भड्डुरी, काल मचावै दंद ॥ १७ ॥

यदि कृत्तिका नक्षत्र बिना बरसे ही चली गई और आर्द्रा में भी वर्षा न हुई तो निश्चय ही अकाल अपना द्वंद मचावेगा ॥ १७ ॥

कर्क बुलावै काँकरी, सिंह अबोनो जाय।
ऐसा बोले भड्डुरी, कीड़ा फिर-फिर खाय ॥ १८ ॥

जो कर्क में ककड़ी बोवे और सिंह में न बोवे तो भड्डुरी का कहना है कि उसे (कर्क की बोई हुई लकड़ी को) बार-बार कीड़े हो खाते हैं ॥ १८ ॥

काहे पण्डित पढ़ि-पढ़ि मरौ, पूस अमावस की सुधि करौ।
मूल बिसाखा पूर्वाखाढ़, भूरा जानौ बाहिरे ठाढ़ ॥ १९ ॥

हे पण्डित ! क्यों पढ़-पढ़कर प्राण देते हो ? भला, पौष मास की अमावस्या को मूल, विशाखा और पूर्वाषाढ़ा की नक्षत्र को तो देखो कि जिसके पड़ने से सूखा अर्थात् अकाल मानो तुम्हारे द्वार के बाहर ही आकर खड़ा है ॥ १९ ॥

कार्तिक मावस देखो जोसी, रबि सनि भौमवार जो होसी।
स्वाति नखत अरु आयुष जोगा, काल पड़े अरु नासै लोगा ॥२०॥

भड्डरी जोतिषी कहते हैं—हे ज्योतिषियों ! कार्तिक की अमावस्या को तो देखो कि उस दिन रविवार, शनिवार और मङ्गलवार के दिन स्वाती नक्षत्र और आयुष्य जोग भी है। यदि ऐसा पड़े तो समझो कि यह अकाल और लोगों के नाश होने का लक्षण है ॥ २० ॥

गुरु-बासर धन बरखा करई।
थावर वारा राजा मरई ॥ २१ ॥

जब गुरुवार को धन राशि पर चन्द्र ग्रहण लगे या रविवार का दिन पड़े तो राजा की मृत्यु होती है ॥ २१ ॥

गहथा आथा गहथो ऊगे।
तोऊ चोखी साख न पूगे ॥ २२ ॥

जब ग्रहण ग्रस्तास्त अथवा ग्रस्तोदय हो तो फसल पूरी न होगी ॥ २२ ॥

चैत मास उजियारी पाख। आठें दिवस बरसता राख ॥
नव बरसे जित बिजली होय। ता दिसि जाल हलाहल होय ॥ २३ ॥

जब चैत्र के महीने में शुक्ल पक्ष में उसके आठवें दिन आकाश धूल से भरा हुआ दिखाई पड़े तो नवें दिन पानी तो बरसेगा परन्तु जिधर बिजली चमके उधर घोर दुर्भिक्ष पड़ने का लक्षण है ॥ २३ ॥

चैत मास की दसमी खड़ा, बादल बिजुरी होय।
तौ जानो चित माहिं यह, गर्भ गला सब जोय ॥ २४ ॥

यदि चैत कृष्ण दशमी के दिन पानी बरसे और बिजली चमके तो अपने हृदय में यह जानो कि वर्षा का गर्भ गल गया है, अर्थात् बहुत कम वर्षा होगी ॥ २४ ॥

चित्रा स्वाति विसाखहूँ, सावन नहिं बरसन्त ।
हालो अन्ने संग्रहो, दूनो मोल करन्त ।। २५ ।।

यदि चित्रा, स्वाती और विसाखा नक्षत्रें सावन में भी न बरसें तो शीघ्र ही अन्न खरीद लो नहीं तो दूने महँगे हो जायँगे ।। २५ ।।

चित्रा स्वाति विसाखड़ो, जो बरसै आसाढ़ ।
चालो नरा विदेसड़ो, परिहै काल सुगाढ़ ।। २६ ।।

जब आषाढ़ मास में चित्रा, स्वाति और विसाखा नक्षत्र बरसे, तब ऐ लोगों ! देश छोड़ विदेश को चले जाओ, यहाँ बड़ा गहिरा अकाल पड़ेगा ।। २६ ।।

छः ग्रह एकै राशि बिलोकौ ।
महाकाल को दीन्हो कोकौ ।। २७ ।।

जब एक ही राशि पर छः ग्रह लगे हों तो समझो कि महाकाल को काम का निमन्त्रण दिया है ।। २७ ।।

जेठ पहिल परिवा दिना । बुधवासर जो होय ।
मूल असाढ़ी जो मिले । पिरथी कन्पै जोय ।। २८ ।।

यदि जेठ की पहिल परिवा के दिन बुधवार पड़े और आषाढ़ की पुर्णिमा का मूल से मिलाप हो जावे तो समझो कि भूकम्प होगा ।। २८ ।।

जेठ बदी दशमी दिना, जो सनिवासर होय ।
पानी होय न धरनि पर, बिरला जीवै कोय ।। २९ ।।

यदि ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की दशमी शनिवार को हो, तो पृथ्वी पर जल नहीं बरसेगा और बिरला ही कोई जी सकेगा अर्थात् अकाल पड़ जायगा ।। २९ ।।

जेठ उजारे पक्ष में, आद्रादिक दस रिच्छ ।
सजल होय निरजल कह्यो, निरजल सजल प्रत्यक्ष ।। ३० ।।

जब आद्रादिक दशों नक्षत्र जेठ शुल्क पक्ष तक बरस जावें तो समझो कि वर्षा के चारों महीने सूखा जायँगे और यदि उधर न बरसें तब चौमासा सजल होगा ।। ३० ।।

जेठ उजारी तीज दिन, आद्रा रिष बरसन्त।
जोसी भाखै भड्डुरी, दुर्भिछ अवसि करन्त ॥ ३१ ॥

भड्डुरी ज्योतिषी का कहना है—यदि ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया के दिन आर्द्रा नक्षत्र बरस जाये तो वह अवश्य ही दुर्भिक्ष कारक है ॥ ३१ ॥

ज्येष्ठा आर्द्रा शतभिषा, स्वाति सुलेखा माहिं।
जो संक्रान्ति तो जानिये, महँगो अन्न बिकाहिं ॥ ३२ ॥

यदि ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिषा, स्वाती, श्लेषा नक्षत्र में संक्रान्ति हो तो जानो कि अनाज महँगा बिकेगा ॥ ३२ ॥

जै दिन जेठ बहै पुरवाई।
तै दिन सावन धूरि उड़ाई ॥ ३३ ॥

ज्येष्ठ के महीने में जितने दिन पुरुवा हवा चले, सावन में उतने ही दिन धूल उड़ेगी और वर्षा न होगी ॥ ३३ ॥

जिन बाराँ रबि संक्रमै, तिनै अमावस होय।
खप्पर हाथ लै जग भ्रमै, भीख न घालै कोय ॥ ३४ ॥

जब किसी दिन में संक्रान्ति हो और उसी दिन अमावश्या भी हो, तब यह समझो कि संसार ही हाथ में खप्पर लेकर भीख माँगता फिरेगा; परन्तु कोई दाता न रहेगा जो उसमें थोड़ा-बहुत (भीख) डाल दे ॥३४॥

तपा जेठ में जो चुइ जाय।
सभी नखत हलके परि जायँ ॥ ३५ ॥

यदि तपते हुये जेठ में कहीं पानी बरस जाय तो समझो कि सभी नक्षत्र हल्के पड़ जायँगे और वर्षा न होगी ॥ ३५ ॥

तेरह दिन का देखो पाख।
अन्न महँग समझो बैसाख ॥ ३६ ॥

जिस वर्ष में कोई पक्ष तेरह दिन का पड़ा हुआ देखो तो समझो कि बैसाख में अन्न महँगा होगा ॥ ३६ ॥

दो आश्विन दो भादौं, दो असाढ़ के माँह।
सोना चाँदी बेंचकर, नाज बेसाहो साह ॥ ३७ ॥

जब किसी साल दो क्वार या दो भादों अथवा दो असाढ़ पड़ जावें तो हे सावजी! सोना चाँदी बेचकर अन्न खरीद लो, बड़ा फायदा उठाओगे ॥ ३७ ॥

दूजे तीजे फिर बरो, रस कुसुम्भ महँगाय।
पहले छठयें आठयें, पिरथी परलै जाय ॥ ३८ ॥

संक्रान्ति के दूसरे, तीसरे दिन बड़ा खतरा है। रसवाले और तेलवाले पदार्थ महँगे हो जायँगे और संक्रान्ति का पहला, छठवाँ और आठवाँ दिन तो प्रलयकारी ही होते हैं ॥ ३८ ॥

धुर असाढ़ की अष्टमी, ससि निर्मल जो दीख।
पीव जाइके मालवा, माँगति फिरिहैं भीख ॥ ३९ ॥

अषाढ़ कृष्ण अष्टमी को यदि चन्द्रमा निर्मल (बादल-रहित) दिखाई पड़े तो अवश्य ही अकाल पड़ेगा जिसमें कितनों के ही पति मालवा जाकर भीख माँगते फिरेंगे ॥ ३९ ॥

पाँच सनीचर पाँच रबि, पाँच मँगर जो होय।
छत्र टूटी धरनी परै, अन्न महँगो होय ॥ ४० ॥

जब किसी वर्ष एक महीने में पाँच शनि, रवि या पाँच मंगलवार हो जावे, तब समझो कोई छत्रधारी राजा की मृत्यु होगी और अनाज महँगा होगा ॥४०॥

पुरुब का बादर पच्छिम जाय। वासे वृषि अधिक बरसाय।
जो पच्छिम से पूरब जाय। बरखा बहुत न्यून हो जाय ॥४१॥

यदि पूरब दिशा के बादल पश्चिम की ओर जाते हो तो उससे पानी अधिक बरसता है; और यदि पश्चिम से पूरब जावे तो वर्षा बहुत थोड़ी होगी ॥ ४१ ॥

पाँच मंगरौ फागुनौ, पौष पाँच सनि होय।
काल पड़ै तब भड्डरी, बीज बवौ मत कोय ॥ ४२ ॥

जब फाल्गुन में पाँच मंगल और पौष में पाँच शनिवार पड़े, तब भड्डरी का कहना है कि अकाल पड़ेगा, कोई धरती में बीज न बोओ ॥ ४२ ॥

भोर समै डर डम्बरा, रात उजेरी होय।
दुपहरिया सूरज तपै, दुरभिछ तेऊ जोय ॥ ४३ ॥

जब प्रातः समय तो आकाश में बादल छाये हों और रात में आकाश निर्मल हो जाता हो तथा दोपहर में सूर्य खूब तपते हों तो यह दुर्भिक्ष का लक्षण है ॥ ४३ ॥

भादों बदी एकादशी, जो ना छिटकै मेघ।
चार मास बरसै नहीं, कहै भड्डरी देख ॥ ४४ ॥

यदि भादों कृष्ण एकादशी को आकाश में बादल न छिटके हों, तो भड्डरी का कहना है—अब चार महीने तक पानी नहीं बरसेगा ॥ ४४ ॥

भादों जै दिन पछिवाँ ब्यारी।
तै दिन माघ में पड़ै तुसारी ॥ ४५ ॥

भादों में जितने दिन पछिवाँ वायु चले, माघ में उतने ही दिन पाला पड़ेगा ॥ ४५ ॥

माघ उज्यारी तीज को, बादर बिज्जु जु देख।
गेहूँ जौ संचय करौ, महँगो होसी पेख ॥ ४६ ॥

यदि माघ शुक्ल तीज को बादल और बिजली देखो तो गेहूँ और जौ का संचय करो क्योंकि महँगी दिखाई पड़ती है ॥ ४६ ॥

माघ उजेरी चौथ को, मेंह बादरो जान।
पान और नारियल तैं, महँगो अवसि बखान ॥ ४७ ॥

जब माघशुक्ल की चौथ को बादल होकर पानी बरस जावे, तो जानो कि पान और नारियल अवश्य महँगा होगा ॥ ४७ ॥

माघ उजेरी पंचमी, परसै उत्तम बाय।
तौ जानौ की भादवौं, बिन जल कोरौ जाय ॥ ४८ ॥

जब माघ शुक्लपक्ष की पंचमी को अच्छी हवा शरीर का स्पर्श कर रही हो, तो जानो कि भादों सूखा ही जायगा ॥ ४८ ॥

माघ छठी गरजै नहीं, महँगो होय कपास।
सातें देखा निर्मली, तो नाहीं कछु आस ॥ ४९ ॥

यदि माघ (शुक्ल) की छठ को आकाश में बादलों की गर्जन न सुनाई दे तो कपास महँगी होगी और यदि सप्तमी को आकाश निर्मल रहे और बादल न हों तो वर्षाकी कोई आशा नहीं है ॥ ४९ ॥

माघ सुदी जो सप्तमी, सोमवार दीसन्त।
काल पड़ै राजा लड़ै, सगरै नरा भ्रमन्त ॥ ५० ॥

यदि माघ शुक्ल सप्तमी को सोमवार दिखाई पड़े, तो अकाल पड़े, राजाओं में युद्ध हो और सारे मनुष्य दुःखों के चक्र में पड़ जायँ ॥ ५० ॥

माघ सुदी जो सप्तमी, भौमवार को होय।
तो भड्डर जोशी कहै, नाज किरानो लोय ॥ ५१ ॥

यदि माघ शुक्ल पक्ष की सप्तमी को मङ्गलवार का दिन हो, तो भड्डर जोतिषी का कहना है कि अन्नों में कीड़े लग जायँगे ॥ ५१ ॥

माघ सुदी आठैं दिवस, जो कृतिका रिखि होय।
की फागुन रोली पड़ै, की सावन महँगी होय ॥ ५२ ॥

यदि माघ शुक्ल अष्टमी को कृत्तिका नक्षत्र होवे, तो फाल्गुन में पत्थर पड़े या सावन में अनाज की महँगी हो जावे ॥ ५२ ॥

माघी नौमी निर्मली, बादर रेख न जोय।
तौ सरवर भी सूखहीं, महि में जल नहिं होय ॥ ५३ ॥

यदि माघ शुक्ल नौमी को आकाश स्वच्छ हो और बादल की एक भी रेखा न दिखाई पड़े, तो तालाबों के जल तो सूख ही जायँगे, पृथ्वी में कहीं पानी नहीं होगा ॥ ५३ ॥

माघ सुदी पूनो दिवस, चन्द्र निर्मलो जोय।
पसु बेंचो कन संग्रहौ, काल हलाहल होय ॥ ५४ ॥

यदि माघ शुक्ल की पूर्णिमा को आकाश में निर्मल चन्द्रमा दिखाई पड़े, तो पशुओं को बेचकर अन्न खरीद लो क्योंकि घोर दुर्भिक्ष (अकाल) पड़ेगा ॥ ५४ ॥

माघ जु परिवा ऊजली, बादर वायु लो होय।
तेल और सरपी सबै, दिन-दिन महँगो होय ॥ ५५ ॥

यदि माघ शुक्ल को प्रतिपदा हो और बादल बिजली भी हो, तो तेल और सरपी (घी) दिन-दिन महँगा ही होता जायगा ॥ ५५ ॥

माघ उज्यारी दूज दिन, बादर बिज्जु समाय।
तो भाखै यों भड्डरी, अन्न जु महँगो होय ॥ ५६ ॥

यदि माघ शुक्ल दूज के दिन बादलों में बिजली कौंधती हो, तो भड्डरी का कहना है कि अन्न महँगा होगा ॥ ५६ ॥

मङ्गल सोम होय शिवराती। पछिवाँ बाय बहै दिन राती।
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ै। राजा मरै कि धरती परै ॥ ५७ ॥

यदि शिवरात्रि सोमवार या मङ्गलवार को होवे और दिन रात पछिवाँ वायु बहती रहे। घोड़ा, रोड़ा और टिड्डियाँ उड़े तथा कोई राजा मरेगा या पृथ्वी पर सूखा पड़ेगा ॥ ५७ ॥

मङ्गलवारी मावसी, फागुन चैती जोय।
पशु बेंचौ कन संग्रहौ, अवसि दुकाली होय ॥ ५८ ॥

जब फागुन और चैत की अमावस्या जो मङ्गलवार पड़े, तब पशुओं को बेचकर अन्न खरीदो; क्योंकि अवश्य ही दुर्भिक्ष पड़ेगा ॥ ५८ ॥

मृगशिर वायु न बाजिया, रोहिणी तपै न जेठ।
गोरी बानै काँकरा, खरा खेजड़ी हेठ ॥ ५९ ॥

यदि मृगशिरा नक्षत्र में हवा न चले और जेठ में पड़नेवाला रोहिणी नक्षत्र न तपा तो वर्षा न होगी। उस दशा में किसान की खेती बिचारी किसी वृक्ष के नीचे कंकड़ ही चुनती फिरेगी ॥ ५९ ॥

नवैं असाढ़े बादलो, जो गरजै घनघोर।
कहै भड्डरी जोतिसी, काल पड़े चहुँओर ॥ ६० ॥

भड्डरी जोतिषी का कहना है—यदि आसाढ़ बदी नवमी को बादलों में घोर गर्जन हो, तो देश में चारों ओर ही अकाल पड़ेगा ॥ ६० ॥

मङ्गल रथ आगे चलै, पीछे चलै जो सूर।
मन्द बृष्टि तब जानिये, पड़सी सगलै मूर ॥ ६१ ॥

जब मङ्गल का रथ आगे और सूर्य का पीछे चलता हो, तब यह जानो कि वर्षा थोड़ी होगी (पृथ्वी के थोड़े ही भाग में होगी) और सर्वत्र सूखा ही रहेगा ॥ ६१ ॥

माघ उजेरी अष्टमी, बार होय जो चन्द।
तेल घीव की जानिये, महँगा होय दुचन्द ॥ ६२ ॥

यदि माघ शुक्ल की अष्टमी के दिन सोमवार पड़ेतो ऐसा जानो कि तेल और घी दूना महँगा हो जायगा ॥ ६२॥

मीन सनीचर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय।
गोहूँ गोरस गोरड़ा, बिरला बिलसै कोय ॥ ६३ ॥

जब मीन, शनि, कर्क गुरु (बृहस्पति) और तुला मङ्गल के हों, तब दूध, गेहूं और गुड़ इतने महँगे हो जायँगे कि कोई विरला ही पावेगा ॥ ६३ ॥

मृगसिर वायु न बादला, रोहिनी तपै न जेठ।
आर्द्रा जो बरसे नहीं, कौन सहै अलसेठ ॥ ६४ ॥

यदि मृगशिरा नक्षत्र में वायु और बादल न हो, जेठ में रोहिणि भी न तपे और जब अर्द्रा भी न बरसे, तब खेती करने का झंझट उठाना व्यर्थ है ॥६४॥

मघादि पञ्च नछत्तरा, भृगु पच्छिम दिसि होय।
तो यों जानो भड्डरी, पानी पृथ्वी न जोय ॥ ६५ ॥

यदि मघादिक पाँच नक्षत्रों (मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा) में शुक्र पश्चिम हों, तो जानो अवर्षण ही रहेगा ॥ ६५ ॥

मूल गल्यो रोहिनि गली, अद्रा बाजी बाय।
हाली बेचों बरधिया, खेती लाभ नसाय ॥ ६६ ॥

मौन अमावस मूल बिन, रोहिन बिन अखतीज।
सावन सरवन ना मिले, वृथा बखेरो बीज ॥ ६७ ॥

रवि के कर धनवन्तरि होय, सोम करै सेवा फल होय।
बुध बिहफै सुक भरै बखार, सनि मङ्गल अन आय न द्वार ॥६८॥

रवी उगन्ते भादवाँ, अम्मावस रबिवार।
धनुष उगन्ते पच्छिमा, होसी हाहाकार ॥ ६९ ॥

रवि के आगे सुरगुरू, ससि सुका परवेश।
दिवस जू चौथे पाँचवें, रुधिर बहन्तो देश ॥ ७० ॥

रात्यो बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल।
तो यों भाखै भड्डरी, निहचै परै अकाल ॥ ७१ ॥

रात निर्मली दिन को छाहीं।
कहै भड्डरी पानी नाहीं ॥ ७२ ॥

रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जो संक्राति सो जानिये, संबत महँगो जात ॥ ७३ ॥

रोहिणि माहीं रोहणी, एक घड़ी जो दीख।
हाथ में खपरा मेदिना, घर घर माँगै भीख ॥ ७४ ॥

शनि आदित और मंगल, पौष अमावस होय।
दुगुनो तिगुनो, चौगुनो, नाज की महँगी होय ॥ ७५ ॥

स्वाती विसाखा चित्तरा, जेठ सुकोरा जाय।
पिछलो गरभ गल्यो कहा, बनी साख मिट जाय ॥ ७६ ॥

सुदि असाढ़ में बुध को, उदै भयो जो देख।
सुक्र अस्त सावन लखो, महा काल अवरेख ॥ ७७ ॥

सावन पहली पाख में, दशमी रोहिणी होय।
महँगा नाज-रू अल्पजल, विरला विलसै कोय ॥ ७८ ॥

सावन कृष्णा एकादशि, गर्जि मेघ घहरात।
तुम जाओ पिय मालवै, हम जावें गुजरात॥ ७९॥
सावन कृष्णपक्ष को देखो। तुलको मंगल होय बिसेखो॥
कर्करासि पर गुरु जो जावै। सिंहरासि में सुक्र सुहावै॥
ताल सो सोखै बरसै धूर। कहूँ न उपजै सातो तूर॥८०॥
सावन उजरे पाख में, जो यह सब दरसाय।
दुंद होय छत्री लड़ैं, भिरैं भूमि-पति-राय॥ ८१॥
सावन शुक्ला सप्तमी, उगत जो दीखै भान।
या जल मिलिहैं कूप में, या गंगा असनान॥ ८२॥
सावन सुकला सप्तमी, जो बरसे अधिरात।
तू पिय जाओ मालवा, हम जावें गुजरात॥ ८३॥
सावन सुकला सप्तमी, चन्दा छिटिक करेय।
की जल देखौ कूप में, की कामिनि सीस धरेय॥ ८४॥
सावन पहली पंचमी, जोर की चलै बयार।
तुम जाना पिय मालवा, हम जावें पितु सार॥ ८५॥
सूर उगे पच्छिम दिसा, धनुष उगन्तो जान।
दिवस जो चौथे पांचवें, रुंड मुंड महिमान॥ ८६॥
स्वाती दीपक जो बरै, खेल विसाखा गाय।
घना गयंदा रन चढ़ै, उपजी साख नसाय॥ ८७॥
सावन सुक्ला सप्तमी, उभरे निकले भान।
हम जायें पिय माइके, तुम कर लो गुजरान॥ ८८॥
सावन पुरवाई चलै, भादों में पछियाँव।
कंत डंगरवा बेंचि के, लरिका जाय जियाव॥ ८९॥
कुछ अन्य कहावतें

[वायु द्वारा वर्षा आदि का योग]

आसाढ़ी पूनो की साँझ। बायु देखिये नभ के माँझ।
नैऋत भई बूंद ना परे। राजा परजा भूखों मरे॥ १॥

अगिन कोन जो बहै समीरा। पड़े अकाल दुख सहै सरीरा॥
उत्तर से जल फूहों परे। मूस साँप दोनों अवतरें॥ २॥
पश्चिम समथ नीक करि जान्यो। आगै बहै तुषार प्रमान्यो॥
जा कहुँ बहै इषाना कोना। नापा बिस्वा दो-दो दाना॥ ३॥
जो कहुँ हवा इकासे जाय। परै न बूँद काल परिजाय॥
दक्खिन पच्छिम आधो समयो। भड्डुर जोसी ऐसे भनयो॥ ४॥
असाढ़ मास पुन गौना। धुजा बाँध के देखौ पौना॥
जो पै पवन पुरुब से आवै। उपजै अन्न मेघ झरिलावै। ५॥
अग्नि कोण जो बहै समीरा। पड़ै अकाल दुःख सहैं सरीरा॥
दखिन बहै जल थल अलमीरा। ताहि समै जूझैं बड़ बीरा॥ ६॥
तीरथ कोन बूँद ना परैं। राजा परजा भूंखन मरैं॥
पश्चिम बहै नीक कर जानो। पड़ै तुषार तेज डर मानों॥ ७॥
बायब बह जल थल अति भारी। मूस उगाह दंड बस नारी॥
उत्तर उपजै बहु धन धान। खेत बात सुख करै किसान॥
कोन इसान दुंदुभी बाजै। दही भात भोजन सब गाजै॥८॥

शनि आदि ग्रहों का विचार

सनि चक्कर की सुनिये बात। मेषराशि भुगतौ गुजरात॥
वृष में करै निरोधा चार। भूवै आबू औ गिर नार॥ १॥
मिथुने पिंगल औ मुलतान। कर्क कासमीर खुरसान॥
जो सनि सिंहा करसी रग। तो गढ़ दिल्ली हासा भंग॥ २॥
जो शनि कन्या करै निवास। तो पूरब कछु माल विनास॥
तुला वृश्चिकै जो शनि होय। मारवाड़ ते काट विलोय॥ ३॥
मकरा कुम्भा जो सनि आवै। दीन्हों अन्न न कोई खावै॥
जो धन मीन सनीचर जाय। पवन चलै पानी जु नसाय॥ ४॥

होली का विचार

होली झर को करो विचार। सुभ अस असुभ कहा फल सार॥
पच्छिम वायु बहै अति सुन्दर। समयो नियजै सजल वसुन्धर॥१॥

पूरब दिसि की बहै जो बाई। कछु भीजै कछु कोरो जाई॥
दक्खिन बाय बहे बध नास। समय उपजै सनई घास ॥२॥
उत्तर बाय बहै दड़वड़िया। पिरथी अचूक पानी पड़िया॥
जोर झकोरै चारों बाय। दुख मा परथा जीव डेराय॥
जोर झलो आकासै जाय। तो पिरथी संग्राम कराय॥ ३॥

होली शुक्र सनीचरी, मंगल वारी होय।
चाक चहोड़े मेदिनी, विरला जीवै कोय॥ ४॥

अमावस्यादि के विचार

चैत अमावस घड़ी, जै परती पत्रा माहिं।
तता सेरा भड्डुरी, कातिक धान विकाहिं॥ ५॥

चैत सुदी रेवतड़ी जोय, बैसाखहिं भरणी जो होय।
जेठ मास मृगसिर दरसंत, पुनर्वसू आसाढ़ चरंत॥
जितो नछत्र कि बरत्यो जाई, तेतो सेर अनाज बिकाई॥ ६॥

ज्येष्ठ प्रतिपदा पर वासर विचार

जेठ आगली परवा देखू। कौन बासरा है यों पेखू॥
रविवासर अति बाढ़ बढ़ाव। मंगलवारी ब्याधि बताव॥
बुधा नाज महँगा जो करई। सनि वासर परजा परिहरई॥
चन्द्र सुक्र सुर गुरु के बारा। होय तो अन्न भरो संसारा॥ ७॥
न गिनि तीनि सै साठ दिन, ना कर लग्न विचार।
गिनु नौमी आषाढ़ बदि, होवै कौनिउ बार॥ ८॥
रवि अकाल मंगल जग उगै, बुधा समोसम भावो लगै।
सोम सुक्र सुरगुरु जो होय, पहुमी फूल फलन्ती जोय॥ ९॥
सावन बदी एकादशी, जेती रोहिणी होय।
तेतो समया ऊपजै, चिन्ता करो न कोय॥ १०॥
जो कृतिका को किरवरो, रोहिणी होय सुकाल।
जो मृगसिर आवै तहाँ, निहचै पड़ै दुकाल॥ ११॥

सावन बदी एकादशी, जितनी घड़ी क होय।
तितनो संवत नीपजे, चिन्ता करो न कोय॥ १२॥
सावन सुकला सप्तमी, जो गरजै अधिरात।
बरसे तो सूखा पड़े, नाहीं समौ सुकाल॥ १३॥

संवत का नाम और ग्रहण का विचार

बिजै दसै जो बारी होई।
संवतसर को राजा सोई॥ १४॥
जेहि नक्षत्र में रबि तपै, तिहीं अमावस होय।
परिवा साँझी जो मिलै, सूर्य ग्रहण तब होय। १५॥
मास ऋषय जो तीज अँध्यारी, लेहु जोतिषी ताहि बिचारी।
तिहि नछत्र जो पूरनवासी, निहचै चन्द्र ग्रहन उपहासी॥ १६॥

यात्रा के शुभाशुभ शकुन-विचार

चलत समय नेउरा मिलि जाय, वाम भाग चारा भखु खाय।
काग दाहिने खेत सुहाय, सफल मनोरथ समुझहु भाय॥ १॥
स्वान धुनै जो अङ्ग, अथवा लोटै भूमि पर।
तो निज कारज भङ्ग, अति ही कुसगुन जानिये॥ २॥
पूरब गोधूली पश्चिम प्रात, उत्तर दुपहर दक्खिन रात।
का करै भद्रा का दिगशूल, कह भड्डर सब चकनाचूर॥ ३॥
लोआ फिरि-फिरि दरस दिखावै, बायें ते दहिने मृग आवै।
भड्डर ऋषि यह सगुन बतावै, सगरे काज सिद्ध हो जावैं॥ ४॥
भस पाँच षट स्वान, एक बैल यक बकरा जान।
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलैं मति करो पयान॥ ५॥
नारि सुहागिनि जल घट लावै, दधि मछली जो सनमुख आवै।
सनमुख धेनु पिआवै बाछा, यही सगुन है सबसे आछा॥ ६॥
बनै न बरनत बनी बराता, होइ शकुन सुन्दर शुभदाता।
चारा चाष बाम दिशि लेई, मनहुँ सकल मंगल कहि देई॥ ७॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा, नकुल दरस सब काहू पावा।
सानुकूल बह त्रिविध बयारी, सघट सवाल आव बरनारी ॥ ८ ॥

लोवा फिरि-फिरि दरस दिखावा, सुरभी संमुख शिशुहिं पिआवा।
मृगमाला दाहिन दिशि आई, मङ्गल गण जनु दीन्ह दिखाई ॥ ९ ॥

क्षेम करी कह क्षेम विशेषी, श्यामा बाम सुतरु पर देखी।
संमुख आयउ दधि अरुमीना, कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रवीना ॥ १० ॥

सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि से दूरि, निकट से निकट, समझौ फल भरपूर ॥ ११ ॥

छींक सम्बन्धी पाँच विचार

सनमुख छींक लड़ाई भाखै, पीठि पाछिली सुख अभिलाखै।
छींक दाहिनी धन को नासै, बाम छींक सुख सदा प्रकासै ॥ १२ ॥

ऊँची छींक महा सुखकारी, नीची छींक महा भयकारी।
अपनी छींक महा दुखदाई, कह भड्डर जोसी समुझाई ॥ १३ ॥

अपनी छींक राम बन गयऊ, सीता हरन तुरन्तै भयऊ ॥

छिपकली गिरने के आठ विचार

सिर पर गिरे राज-सुख पावै। औ ललाट ऐश्वर्य लिआवै ॥ १ ॥
कण्ठ मिलावै पिय को लाई। काँधे पड़े विजय दरसाई ॥ २ ॥
जुगल कान औ जुगल भुजाहू। गोधा गिरे होय धन लाहू ॥ ३ ॥
हाथन ऊपर जो कहुँ गिरई। सम्पति सकल गेह में धरई ॥ ४ ॥
निश्चय पीठ परै सुख पावै। परै काँख प्रिय बन्धु मिलावै ॥ ५ ॥
कटि के परे वस्त्र बहु रंगा। गुदा परै मिलमित्र अभङ्गा ॥ ६ ॥
जुगल जाँघ पर आन जो परई। धनगन सकल मनोरथ भरई ॥ ७ ॥
परे जाँघ नर होइ निरोगी। परब परे तन जीव वियोगी ॥ ८ ॥
या विधि पल्ली-सरह विचारा। कह्यो भड्डरी जोतिस सारा ॥ ९ ॥

यात्रा में दिन और स्वर का विचार

सूके, सोमे, बुद्धे बाम। यहि स्वर लंका जीते राम ॥ १ ॥
जो स्वर चलै सोई पग दीजै। भरनी भद्रा एक न लीजै ॥ २ ॥
गवन समय जो स्वान। फर फराय दे कान ॥ ३ ॥
एक सूद्र दो वैस असार। तीनि विप्र औ छत्री चार ॥ ४ ॥
सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार ॥ ५ ॥

यात्रा के शुभ-सेवनीय पदार्थ और विभिन्न योग।

रवि को पान सोम को दरपन। धनिया खोटे भूमि के नन्दन ॥
बुध को गुड़, गुरु को राई। शुक्र को दही शनि को घृत भाई ॥ १ ॥
रवि को पान सोम को दरपन। मङ्गल को कर गुड़ अरपन ॥
बुद्ध मिठाई बिहफै राई। शुक्र कहै मोहिं दही सुहाई ॥
शनी कहै जो अदरक पाऊँ। कालौ कोटि जीति घर लाऊँ ॥ २ ॥
न गिन चैत नहीं बैसाख। न गिन बार तीन सौ साठ ॥
गनियो एक मास आसाढ़, नवमी सुक्ला बार बखान।
मङ्गल पड़े तो हर पड़े, बुद्ध पड़े दुख काल ॥
दैव बिछोहा होय तो, पड़ै सनिचर वार।
सोमे सुक्रे रबि गुरु, भूमे अन्त कराय ॥
छत्र टूट मड़ई डिगै, शनीवार पड़ जाय ॥ ३ ॥

जन्म-लग्न बिचार

पड़िवा मूल पञ्चमी भरनी। छठ के आर्दा नौमी रोहनी।
अष्टमी हस्त में जा रहिया।
सत्तमी मघारे मितउ रे भाई, छहो सून्य पड़ा है हाई।
जनमें सो जीवे नहीं, बसे तो उज्जर होय।
संग्राम चढ़े जीतै नहीं, किरखी निहफल होय ॥
कूआँ पोखर जो खनै, सुन्नै वारि पराय ॥ १॥